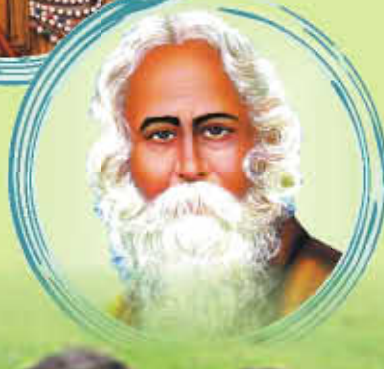
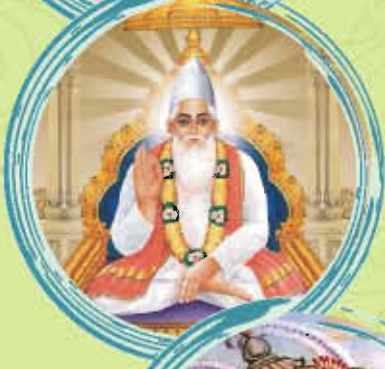




मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 11-12 | मई-जून, 2014 | मूल्य : ₹10



शिविरा, मई-जून, 2014 चित्र समाचार

भीलवाड़ा



राजकीय उ.मा. विद्यालय, कारोई द्वारा विश्व एड्स दिवस के अवसर पर चेतना रैली निकालकर जाग्रति संदेश दिया।

उदयपुर



राजकीय उ.मा. विद्यालय, भीण्डर के इको क्लब एवं स्काउट ग्रुप द्वारा पक्षियों के लिए परिण्डे लगाए गए।

जयपुर



राजकीय उ.मा. विद्यालय, नींदड़ के बालचरों ने जिलास्तरीय स्काउट रैली में भाग लेकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता निभाई।

राजसमन्द



रा. मा. वि., देवरिया में संचालित स्काउट ग्रुप के द्वारा विभिन्न सेवा कार्य किए जा रहे हैं। गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्काउट्स अपने गुरुजन के साथ।

अजमेर



राज्यस्तरीय 'आओ देखें सीखें' प्रतियोगिता का आयोजन वैष्णव धर्मशाला, पुष्कर में किया गया। इस अवसर पर (बाएं) देशभक्ति गीत प्रस्तुत करती बालिकाएं तथा (दाएं) उद्घाटन समारोह में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आयी प्रतियोगी बालिकाएं।



मासिक शिविर पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते - श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 अंक : 11-12 वैशाख-आषाढ़ २०७१ मई-जून, 2014

प्रधान सम्पादक
विकास एस. भाले

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
एस. के. सिंह
मुकेश व्यास
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविर पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

फैक्स : 0151-2201861

E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविर पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
-वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प		
● सृजन पथ पर बढ़ें कदम	5	● कहीं कुछ कमी सी है डॉ. चेतना उपाध्याय 42
आलेख		
● जे. कृष्णामूर्ति का शिक्षा दर्शन डॉ. सुधीर रूपानी	6	● क्या करें ग्रीष्मावकाश में शिक्षक सम्पत लाल शर्मा 'सागर' 43
● सूरदास के पदों में वात्सल्य भाव कीर्ति शर्मा	8	हमारे संस्थान
● रवीन्द्रनाथ टैगोर का अंतिम भाषण सौजन्य : महेन्द्र पाण्डे	10	● शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, अजमेर राजेश कुमार तिवारी 44
● मैं कहता हूँ आँखन देखी राजेन्द्र जोशी	13	हमारी सांस्कृतिक धरोहर
● कबीर की सीख तरुण कुमार दाधीच	14	● सैनिकों की धरा : झुंझुनू मनजीत सिंह तंवर 36
● शौर्य तथा स्वतंत्रता के पर्याय राणा प्रताप रामदेव बाबू यादव	15	स्तम्भ
● बच्चे अपराधी क्यों बनते हैं मदन लाल पुरोहित	17	● आदेश-परिपत्र 23
● गौतम बुद्ध की शिक्षाएं और हम उमाशंकर किराडू	19	● आदेश परिपत्रों की अनुक्रमणिका (जुलाई, 13 से मई-जून, 14 तक के अंकों में प्रकाशित) 27
● शिविरा विचार मंच	20	● शाला प्रांगण से 29
● नीतिकारों की दृष्टि में एक आदर्श शिष्य संग्राम सिंह सोझा	22	● शिविरा पंचांग 32
● अपने बच्चों के खातिर अच्छे बनिये रूपनारायण काबरा	30	● चतुर्दिक समाचार 48
● कैशौर्य के फूलों को खिलने दें द्वारकेश भारद्वाज	31	● हमारे भामाशाह 49
● भामाशाह का प्रताप और प्रताप का शौर्य सोहन लाल प्रजापति	33	इस माह का गीत
● गीता सार्वकालिक, सार्वभौमिक है पी.डी. सिंह	34	● मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ... गोपाल दास नीरज 12
● पूरा विश्व हो एक परिवार डॉ. सत्य प्रकाश आचार्य	35	पुस्तक समीक्षा 46-47
● बच्चों में सकारात्मक सोच कैसे पैदा करें करुणा श्री	40	● सुप्त वीणा के तार : नीता चौबीसा समीक्षक : सुनीता चावला
		● हमारा पर्यावरण : एम. के. गोयल समीक्षक : डॉ. सुधीर रूपानी
		● पिघलते लम्हों की ओट से : कीर्ति शर्मा समीक्षक : ओमप्रकाश सारस्वत
		विविध
		● आखर को ढाल लो 16
		गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'
		प्रतिव्यक्ति
		● शिक्षा, शिक्षण एवं शिक्षक 50

आवरण :

अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185



पाठकों की बात

- 'समझें मत का महत्व' के अन्तर्गत निदेशक महोदय का सन्देश प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रहित में समर्पित नीति से अपने कर्तव्य पूर्ति की सजग प्रेरणा देता है। सन्देश में निहित विचार प्रत्येक मत के अमूल्य महत्व को इंगित करते हैं। वास्तव में अधिक से अधिक मतदान न सिर्फ मतदाता की जिम्मेदारी है, बल्कि उसकी देश के सुखद भविष्य तथा सुनियोजित विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयासों की सोच को परिलक्षित करता है।

—गुलशन मेहरा, अध्यापिका
रा.प्रा.वि. दादिया, उदयपुर

- शिविरा अप्रैल 2014 का अंक गौर से पढ़ा, अच्छा लगा। प्रेरणा गीत-किसी के काम जो आए... आज के इस मशीनी युग में बहुत प्रासंगिक एवं युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। 'संवत्सर के स्वागत में' आलेख में विक्रम संवत् 2071 के बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है। 'डॉ. अम्बेडकर का संकल्प बल' तत्कालीन भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है एवं वर्तमान में सामाजिक समरसता बनाए रखने का संदेश देता है। बजरंग प्रसाद मजेजी का शोध निबन्ध 'मुंशी प्रेमचन्द के प्राथमिक शिक्षा के बारे में विचार एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से तुलना करना बहुत ही बढ़िया लगा। विद्वान मजेजी साहब ने 1909 ई. में लिखे गए मुंशी प्रेमचन्द के विचारों को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, विशेषकर राजस्थान के संदर्भ में तुलना करके, निर्भीक होकर बड़ी ही चतुराई से शासन व प्रशासन की आँखें खोल दी हैं। मजेजी साहब के इस सार्थक प्रयास के लिए साधुवाद। आशा करते हैं कि भविष्य में शिक्षा-व्यवस्था की इन समस्याओं का सार्थक समाधान होगा।

—अजीज अहमद शेख, व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. कोटड़ा, उदयपुर

- शिविरा पत्रिका अप्रैल 2014 का अंक पढ़ने को मिला। पत्रिका पढ़कर बहुत अच्छा लगा। पत्रिका अपनी परम्परा के अनुरूप प्रेरणादायक अनुकरणीय एवं संग्रहणीय सामग्री से भरपूर है। 'दिशाकल्प' में श्रीमान

निदेशक महोदय द्वारा मतदान का आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक मतदाताओं को लोकतंत्र के प्रति जागरूक बनाते हुए देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। पत्रिका में 'अपने भीतर बैठे राम को जगाएं' आलेख द्वारा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से शिक्षाएं मिलती नजर आ रही है। पत्रिका के माध्यम से महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा मिलती रहती है। 'कर्म ही पूजा है' शिविरा-शिक्षा दर्पण, समस्या बड़ी या सोच, सच्चा मित्र होती है पुस्तकें आदि लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक लगे। प्रेरणा गीत 'किसी के काम...' समाज के सभी वर्गों में विशेषकर युवा वर्ग में नयी ऊर्जा का संचार करने वाला है। प्रतिध्वनि में श्री ओमप्रकाश सारस्वत का 'ज्ञान का महात्म्य' बहुत ही प्रेरणास्पद व अनुकरणीय है। इनकी एक पंक्ति 'ज्ञान को गले लगाने वालों को एक दिन विश्व गले लगाता ही है' चेतना व जाग्रति की लहर पैदा करने वाली है। रंगीन मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक लगा।

—भवानी शंकर राजपुरोहित, व.अ.
रा.मा.वि. दांतलावास, जालौर

- शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास कर उसमें अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना है। यही समय होता जब छात्र नैतिकता का पाठ पढ़ता है। शिविरा पत्रिका यह कार्य करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बधाई एवं शुभकामनाएं।

—महेन्द्र कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., बाघसुरी (अजमेर)

- शिविरा अप्रैल 2014 का अंक प्राप्त हुआ। अपनी परम्परा के अनुसार इस अंक में सभी सामयिक विषयों पर सामग्री दी गई है। प्रेरणा गीत 'किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं' बहुत उपयोगी और अन्दर तक झकझोर देने वाला है। भगवान राम, महावीर स्वामी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बारे में दी गई सामग्री पत्रिका को यश दिलाने वाली है। मतदान के बारे में निदेशक महोदय जी की अपील बहुत सार्थक है। हमें इनसे शिक्षा लेकर शिक्षण कार्य करना चाहिए।

—अंजना माथुर
प्रधानाचार्य

महर्षि गौतम विद्यापीठ, वाटिका रोड, जयपुर

चिन्तन

शिक्षक व शिक्षार्थी

मैं तो सिर्फ इंजन में कोयले झोंकने वाला हूं। कोयले तो विद्यार्थी हैं जिनमें अग्नि समाहित है। मैं तो चिनगारी दिखाने वाला हूं। सुलगने का काम तो विद्यार्थी का है।

—गिजु भाई



विकास एस. भाले
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

“ अवकाश को लेकर मेरा दृष्टिकोण कुछ अलग है। अवकाश केवल आराम करने का समय नहीं है। यह समय वर्षभर की थकान को भुलाते हुए नई ऊर्जा व उमंग प्राप्त करने का है। वस्तुतः अपनी व्यक्तिगत रुचियों (Hobbies) को नई उड़ान देते हुए राष्ट्र व समाज के लिए कुछ करने का समय है ग्रीष्मावकाश। ”

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सृजन पथ पर बढ़ें कदम

व र्षभर की अध्ययन साधना के उपरान्त छात्र-छात्राओं को 17 मई से डेढ़ माह का अवकाश हो रहा है-ग्रीष्मावकाश। यद्यपि यह अवकाश शिक्षकों के लिए भी होगा तथापि इस अवधि में शिक्षा विभाग, सर्व शिक्षा एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण/आमुखीकरण शिविरों में उन्हें उपस्थित होना होगा। समाज सेवा के विभिन्न अवसर भी इस अवधि में हमारे सामने आएंगे। मुझे विश्वास है कि शिक्षक एवं विद्यार्थी मिलकर समाज सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य करेंगे।

अवकाश को लेकर मेरा दृष्टिकोण कुछ अलग है। अवकाश केवल आराम करने का समय नहीं है। यह समय वर्षभर की थकान को भुलाते हुए नई ऊर्जा व उमंग प्राप्त करने का है। वस्तुतः अपनी व्यक्तिगत रुचियों (Hobbies) को नई उड़ान देते हुए राष्ट्र व समाज के लिए कुछ करने का समय है ग्रीष्मावकाश।

हमने जिस समाज एवं देश में जन्म लिया है, उसके प्रति अनेक कर्तव्य हमें पूर्ण करने हैं। कोई भी व्यक्ति अकेला रहकर आगे नहीं बढ़ सकता। अकेले माता-पिता और परिवार भी बच्चे का सम्पूर्ण विकास नहीं कर सकते। बच्चे के विकास में समाज, राष्ट्र एवं पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः उसे बाल्यकाल से ही इनके प्रति संवेदनशील बनने की शिक्षा दी जानी चाहिए। ग्रीष्मावकाश में बच्चों को साथ लेकर समाजसेवा के कार्यों में शरीक होने से वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्तव्यों को तो समझेंगे ही, साथ ही इन संस्थाओं एवं जीव मात्र के प्रति आत्मीय भाव भी उनमें पैदा होंगे।

विद्यालय शिक्षा व्यवस्था में 772 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में राष्ट्रीय सेवा योजना संचालित की जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत रजिस्टर्ड स्वयंसेवकों को अन्य सहपाठी विद्यार्थियों के साथ मिलकर ग्रीष्मावकाश में बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन एवं अन्य सार्वजनिक महत्त्व के स्थानों पर पेयजल की व्यवस्था में भागीदार बनना चाहिए। निरीह, मूक पशु-पक्षियों के लिए इस भीषण गर्मी में दाने, पानी की व्यवस्था करना बड़े उपकार का कार्य है। मुझे खुशी है कि राजस्थान भारत स्काउट गाइड संगठन के सौजन्य से गर्मी में बड़ी संख्या में परिण्डे बंधवाए जाते हैं। हमारे शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को इसमें सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

मई माह में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, महान शिक्षा शास्त्री जे. कृष्णामूर्ति, वात्सल्य के कवि सूरदास एवं वीरता के अवतार महाराणा प्रताप की जयंतियाँ हैं। जून माह में कबीर व भामाशाह जयंतियाँ भी हैं। बुद्ध पूर्णिमा 14 मई को है जो भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को याद दिला कर उन पर चलने का आह्वान करती है। इन महापुरुषों को प्रणाम करते हुए मेरी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से अपील है कि वे इन महापुरुषों के जीवन चरित्र स्वयं पढ़ें तथा उससे शिक्षा लेकर एक नई पीढ़ी को तैयार करने में सहयोग करें।

ग्रीष्मावकाश 2014 के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

(विकास एस. भाले)

जे. कृष्णामूर्ति का नाम आधुनिक शिक्षाविदों में बड़ी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ लिया जाता है। श्रद्धा इसलिए कि उनका दर्शन वास्तविकता के नजदीक है और विश्वास इसलिए कि उसमें अवगाहन करने पर हमें अपनी समस्याओं का समाधान होता दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति के लिए श्रद्धा, सम्मान एवं विश्वास होना स्वाभाविक ही है। शिक्षक एवं विद्यालयों के प्रति उनके दिल में बहुत ऊँचा स्थान था।

इस महान शिक्षाविद् का जन्म 11 मई 1895 के दिन मइनपल्ली (आंध्र प्रदेश) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री नरीअनह उस दौर की प्रसिद्ध संस्था थियोसोफिकल सोसाइटी में काम करते थे तथा माँ संजीवमा सामान्य गृहिणी थीं जिनका अधिकांश समय धार्मिक क्रियाकलापों में ही गुजरता था। यही कारण है कि उन्हें बालपन से ही उदात्त मानवीय गुणों की सीख मिली।

वह प्रकाश पुंज

कृष्णामूर्ति के बालपन की बात है। एक दिन कुछ बच्चे मद्रास के समीप अडाइट समुद्र तट पर स्नान कर रहे थे। तभी एक पादरी मि. लीडवीटर उधर से गुजरे। उन्होंने एक बालक के पीछे प्रकाश पुंज देखा जैसा हम ईश्वर अवतार महापुरुषों के पीछे देखते हैं। पादरी को विश्वास हो गया कि वह बालक कोई साधारण बालक नहीं है। भगवान के अवतार भी ऐसे ही होते हैं। पादरी ने उस बालक पर निगरानी रखनी शुरू कर दी। उसे लगा कि बालक कृष्ण भविष्य में एक महापुरुष सिद्ध होगा तथा वह जगद्गुरु के रूप में प्रतिष्ठित होगा। उसने अपना अवलोकन एवं विश्लेषण मेडम ऐनी बेसैन्ट को बताया जो थियोसोफिकल सोसाइटी की प्रमुख थीं।

यों हुई शुरूआत

पादरी से हुई वार्तालाप और स्वयं के सन्तोष के उपरान्त मेडम ऐनी बेसैन्ट ने कृष्ण के माता-पिता से बात करके उसकी पढ़ाई का काम ग्रहण कर लिया और शीघ्र ही उन्हें इंग्लैण्ड ले आईं। यहां उन्हें थियोसोफिकल सोसाइटी के नियमों व दर्शन को पढ़ाते हुए पूर्णतः नैतिक व संस्कारयुक्त वातावरण प्रदान किया गया। इस प्रकार उत्तम गुणों का बीजारोपण उनके बचपन में ही हो गया।

लीडवीटर की अहम भूमिका

कृष्ण को आचार्य जे. कृष्णामूर्ति बनाने

जन्म दिवस : 11 मई

जे. कृष्णामूर्ति का शिक्षा दर्शन

□ डॉ. सुधीर रूपानी



डॉ. सुधीर रूपानी आदर्श शिक्षक, योग्य प्रशिक्षक एवं कुशल नियोजक के रूप में व्याप्ति प्राप्त हैं। आप भूगोल विषय में निष्णात हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की भूगोल विषय की पाठ्यपुस्तक समिति के सदस्य डॉ. रूपानी की प्रायोगिक भूगोल क्षीर्षक की पुस्तकें कक्षा 11 वीं एवं 12वीं में चलती हैं। आप वर्धमान महावीर बंदुला विश्वविद्यालय, कोटा के बीकानेर स्थित अध्ययन केन्द्र के संमन्वयक हैं। अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में पत्र वाचन कर चुके डॉ. रूपानी दो विश्वविद्यालयों में शोध निदेशक हैं। आपने शिक्षा विषयक अनेक पुस्तकें लिखी हैं। -**दक्खिन् समपादक**

में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका पादरी लीडवीटर की रही थी जिसने उनके पीछे प्रकाश पुंज देखकर महापुरुष होने की बात सोची और मेडम ऐनी बेसैन्ट को बताई थी। इन्हीं लीड वीटर द्वारा कृष्ण को जनवरी 1910 के प्रारम्भ में गुरु दीक्षा दी गई थी। अपने गुरु लीड वीटर की यौगिक क्रियाओं में पहुँच को बताने के लिये कृष्णामूर्ति ने ऐनी बेसैन्ट को जो बताया, वह वीटर ने अपना शरीर छोड़कर कई धार्मिक आत्माओं से साक्षात्कार किया जिनमें भगवान मैत्रेय एवं ईसा भी सम्मिलित थे। कहते हैं कि उन दिव्य आत्माओं ने उनसे भांति-भांति के प्रश्न किए और बाद में कृष्णामूर्ति को भी अपनी कोटि की उत्तम आत्माओं में शामिल कर लिया।

कृष्णामूर्ति का अध्ययन मनन निरन्तर चलता रहा। वे उच्च कोटि के मनीषि चिन्तक गिने जाने लगे। वे प्रकृति को बहुत सम्मान देते थे। यह हर शिक्षक, हर चिन्तक का दायित्व भी है। उनका कहना था कि हमारे चारों ओर बिखरी हुई प्रकृति परमात्मा ने बनाकर हमें उपहार में दी है। प्रकृति का आनन्द तभी लिया जा सकता है जब मन निर्मल और तन शान्त हो। चित्त की स्थिरता परमावश्यक है। कृष्णाचार्य अपने विद्यार्थी काल में कई बार कक्षा छोड़कर बाहर खुले में बैठते और घंटों प्रकृति को निहारते रहते। फूलों की सुन्दरता को टकटकी लगाकर देखना उन्हें बहुत अच्छा लगता। वे कहते थे कि इससे एकाग्रचित्तता बढ़ती है।

कृष्णामूर्ति के एक भाई और था जिसका नाम था नित्या। दोनों भाइयों की पढ़ाई का

जिम्मा ऐनी बेसैन्ट ने ले लिया था। इसके लिए बकायदा एक शपथ-पत्र देकर पिता नरीअनह ने ऐनी को विधिसम्मत अधिकार दे दिया था। कृष्णामूर्ति अपने एक शिक्षक कुथुम्भी से बहुत प्रभावित थे और उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उन्होंने 'गुरु चरणों में अर्पित' टाइटल से एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक बहुत सुन्दर रचना मानी जाती है। शिक्षक कुथुम्भी की ओर से एक अद्भुत समाचार कृष्णामूर्ति को दिया गया जो इस प्रकार है- 'हमें तुमसे बहुत उम्मीदे हैं। इस कारण तुम दृढतापूर्वक और अधिक चेष्टा करो और अपने मस्तिष्क तथा आत्मा को निर्मल बनाओ। विद्यमान विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं के प्रति सहनशीलता दिखाओ। इन विचारों में सत्य की किरण को खोजो तथा अपने जीवन को प्रकाशमान करो।

कृष्णामूर्ति शिक्षा को परिवर्तन का संवाहक तथा शिक्षक को माध्यम मानते थे। वे कहते थे कि शिक्षा शिक्षक बिना अधूरी है। अतः शिक्षक को समुचित सम्मान दिया जाना चाहिए। कृष्णामूर्ति के साथियों ने Order of the rising Sun नाम की एक संस्था बनाई जिसका कालान्तर में नाम Order of the star in the East कर दिया गया। इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष कृष्णामूर्ति को बनाया गया। इस संस्था के द्वारा जगह-जगह समारोह आयोजित किए जाते थे जिनमें कृष्णामूर्ति आशीर्वाद देते थे। ये समारोह सर्वथा सादगीपूर्ण सम्पन्न होते जिनमें दिखावे व आडम्बर का कोई स्थान नहीं था।

तेजस्विता का वह प्रकाश पुंज

यह कृष्णामूर्ति की जन्मजात विशेषता एवं ईश्वर कृपा ही थी कि स्वयं के एक विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत होने के बावजूद उन्हें ऑर्डर जैसी उच्च संस्था का अध्यक्ष बनाया गया और ऑर्डर के समारोह में उन्हें आशीर्वाद देने के लिए बुलाया जाता। वर्ष 1921 में पेरिस में आयोजित समारोह का उल्लेख करना यहां प्रासंगिक होगा। समारोह में 2000 से भी अधिक सदस्य उपस्थित थे। इसमें कृष्णामूर्ति का व्यवहार एवं उद्बोधन सुनकर लोग चकित रह गए। उन्होंने जिस ढंग से जिज्ञासुओं के प्रश्नों के जवाब दिए, उन्हें सुनकर ऐनी बेसैन्ट ने कहा कि कृष्णामूर्ति कोई साधारण व्यक्ति नहीं है बल्कि किसी विशेष प्रयोजन से उनका जन्म हुआ है। पेरिस समारोह में उद्बोधन के दौरान उनकी आवाज भारी होने लगी। उपस्थित लोगों ने देखा कि उनके चारों ओर एक अलौकिक प्रकाशधारा है। लोगों के सिर पर जब वे हाथ रख रहे थे, तब उनकी मुस्कराहट वातावरण में प्रसन्नता व प्रफुल्लता पैदा करने वाली थी। उनके चेहरे से अद्भुत लालिमा एवं स्नेह झलक रहा था। लग रहा था कि जैसे किसी पवित्र आत्मा ने उनमें प्रवेश कर लिया हो। उनकी तेजस्विता और वह प्रकाश पुंज जैसे लोगों को निहाल कर गया। इसके बाद तो ऐसे उल्लेखनीय दृष्टान्तों की लड़ी ही लग गई। कृष्णामूर्ति का दर्शन अंधेरे में प्रकाश, निराशा में आशा और अविश्वास में विश्वास दिलाने वाला है।

सेवा ही शिक्षा है

कृष्णामूर्ति द्वारा शिक्षा पर लिखी पुस्तक Education is service बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक व विद्यार्थी के पारस्परिक स्नेहपूर्ण व्यवहार की महत्ता स्पष्ट करते हुए वे पुस्तक में लिखते हैं, 'शिक्षक का मुख्य कर्तव्य शिक्षा के साथ-साथ अपने विद्यार्थियों में प्रेम रखना है और विद्यार्थियों को भी अपने गुरुजन के प्रति वैसा ही आत्मीय सम्मान भाव रखकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। प्रेम बिना शिक्षा कभी भी प्रभावी नहीं हो सकती। प्रेम सम्मान का आधार है। इस आधार को मजबूत कीजिए। शिक्षा का भवन स्वयंमेव मजबूत होता चला जाएगा।

हम गुरुकुल व्यवस्था की बात करते हैं। उस दौर में गुरु-शिष्य सम्बन्ध बहुत पवित्र माने

जाते थे। धन अथवा अन्य संसाधनों की महज उतनी ही दरकार समझी जाती थी जितने से गुरु आश्रम का काम चल जाए। इसके अलावा अदृश्य रूप से स्नेह व सम्मान का आदान-प्रदान किया जाता था। इस विश्वास के कारण माता-पिता अपने बच्चों को गुरु को सौंपकर चिन्तामुक्त हो जाते थे और बच्चे वर्षों आश्रम में रहकर विद्याभ्यास करते थे। इसमें प्रमुख स्थान प्रेम का ही होता था। स्वयं कृष्णामूर्ति प्रेम के प्रतीक थे। उनसे जो भी मिलने आता, प्रेम व समुचित सत्कार पाता। वे जो कहते, उसे पूरा करने का प्रयास करते। उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उनका होकर रह जाता था। प्रेम उनके जीवन का अभिन्न अंग था और वे प्रेम में अन्य सभी गुणों को मौजूद मानते थे।

शिक्षा हो आनन्ददायी

शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कृष्णामूर्ति कहते हैं, 'जिन शिक्षकों का हृदय ईश्वरीय प्रेरणा एवं प्रेम से युक्त है, सही मायनों में वे ही शिक्षक बनने के योग्य हैं। ऐसे शिक्षकों के लिए शिक्षण न केवल उनका कर्तव्य होता है, अपितु सर्वाधिक आनन्द देने वाला कार्य बन जाता है। ऐसे शिक्षक बालक का शिक्षा भय मिटाकर उनमें छिपे गुणों को उभार सकता है और उनमें प्रिय बन जाता है। शिक्षक का विद्यार्थियों के प्रति प्रेम उनमें प्रिय बन जाता है। शिक्षक का विद्यार्थियों के प्रति प्रेम बदले में विद्यार्थियों का प्रेम जीत लेता है जो शनैः शनैः आदरभाव में बदल जाता है।'

शिक्षा व सीखने की प्रथम पाठशाला घर व माँ-बाप को प्रथम गुरु कहा जाता है। स्कूल जाना शुरू करने के बाद बालक जैसा वातावरण स्कूल में देखता है, वैसा ही घर पर देखना तथा तदनुसार व्यवहार करना चाहता है क्योंकि बच्चे के लिए स्कूल एवं शिक्षक रोल मॉडल होते हैं। ऐसे में यदि बालक स्कूल में प्रेम के वातावरण में रहता है तो वह घर में अच्छा बेटा और अच्छा भाई/बहन बनता है। वह स्कूल से प्रेम के साथ-साथ शक्ति और निराशा रहित भावना लेकर आता है। कृष्णामूर्ति प्रेम के दीर्घकालीन परिणाम देखते थे। उनका विचार था कि प्रेम के वातावरण में पढ़ने वाला बालक सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहता है। अगर शिक्षक अपने ज्ञान का झरना बच्चों के लिए बहाता है तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। इसके लिए

शिक्षक को स्वयं को समझना होगा। तभी वह अपने भीतर के अवगुणों को निकालकर प्रेम पथ पर अग्रसर हो सकता है।

स्वयं से स्वयं की पहचान

कभी महात्मा बुद्ध ने कहा था, 'अप्य दिपो भव' अर्थात् अपने दीपक आप बनो। आचार्य कृष्णामूर्ति ने भी 'स्वयं को पहचानो' सूत्र पर प्रकाश डाला। ऐसे ही विचार महान दार्शनिक सुकरात ने भी प्रकट किए थे। कृष्णामूर्ति ने शिक्षा का उद्देश्य स्वयं को पहचान सकने की क्षमता का विकास करना कहा है। वे कहते हैं कि व्यक्ति यदि स्वयं को ठीक से पहचान ले तो वह उन छोटी-छोटी भावनाओं से ऊपर उठ सकता है, जो उसे अहंकार, क्रोध, घृणा और वैमनस्य की तरफ ले जाती है। स्वयं को पहचानों की प्रक्रिया में व्यक्ति को धीरे-धीरे उसके अन्दर पनपने वाली घृणा, द्वेष, क्रोध, लोभ तथा अन्य बुराईयों के कारणों का ज्ञान हो सकेगा। एक बार जब व्यक्ति यह जान लेता है कि इस निंदनीय विचारों के कारण क्या है, तब वह उनका त्याग कर प्रेम, सहयोग, समन्वय एवं सहानुभूति से सम्पन्न हो सकेगा और तभी वह सत्य से साक्षात्कार कर सकेगा। छात्र जीवन से ही व्यक्ति को 'स्वयं को जानने' की प्रक्रिया से जोड़ने पर शिक्षा और शिक्षार्थी तीनों की सार्थकता एवं प्रभावीपन सुनिश्चित हो सकता है।

उपसंहार

इस प्रकार से कृष्णामूर्ति को इस युग के महान चिन्तनशास्त्री एवं शिक्षाविद् कहा जाना उचित होगा। भारतभूमि पर जन्म लेकर उन्होंने पूरे विश्व में भारतीय दर्शन का घोष किया जिसके मूल में समता, सहकार, स्नेह, सम्मान एवं समन्वय जैसे अनमोल गुण छिपे हैं। शिक्षाविद् एवं शिक्षकों को उनके दर्शन की गहराई को समझ कर शिक्षण कार्य में उसका उपयोग करना चाहिए। इससे विश्व बन्धुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का आदर्श संसार में स्थापित हो सकेगा। स्वयं कृष्णामूर्ति कहते हैं, "उचित प्रकार की शिक्षा का अर्थ है प्रज्ञा को जागृत करना तथा समन्वित जीवन का पोषण करना और केवल ऐसी ही शिक्षा एक नवीन संस्कृति तथा शान्तिमय विश्व की स्थापना कर सकेगी।"

—प्राध्यापक (भूगोल)

राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,

बीकानेर-334001 (राज.)

मो, 09001024365

सूर जयंती : 4 मई

सूरदास के पदों में वात्सल्य भाव

□ कीर्ति शर्मा

परिचय



सूरदास

सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रूकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार जन्म स्थान दिल्ली के पास सीही माना है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास अष्टछाप के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। वे मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन कीर्तन करते थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका निधन हुआ।

उनके तीन ग्रंथों सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली में सूरसागर ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ। खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक अंतरंग चित्र और मनुष्य के स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण सूर की कविता में मिलता है। सूर 'वात्सल्य' और 'शृंगार' के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है। सूर ने मानव प्रेम के गौरव गाथा के माध्यम से सामान्य मनुष्यों को हीनता बोध से मुक्त किया, उनमें जीने की ललक पैदा की।

उनकी कविता में ब्रजभाषा का निखरा हुआ रूप है। वह चली आ रही लोकगीतों की परम्परा की ही श्रेष्ठ कड़ी है।

सू रदास द्वारा रचित वात्सल्य वर्णन जब पढ़ते हैं तो मन उसमें रमने लगता है...। आज के इस तकनीकी युग में माता-पिता शायद अधिक सार-संभाल के साथ अपने बच्चों की देखभाल करते हैं पर कभी-कभी लगता है कि नौनिहालों की मासूमियत, अल्हड़पन..., चंचलता, चपलता, नटखटपन... कहीं खो गया है। मिलजुल कर खेले जाने वाले परम्परागत खेल कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं। बच्चे अब कम्प्यूटर गेम... इन्टरनेट में अधिक रुचि लेने लगे हैं। खेल हमेशा से व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन आज उनकी दिनचर्या बड़ों के समान यंत्रवत् होती जा रही है। बचपन एवं वात्सल्य भाव इन सब की भेंट चढ़ते जा रहे हैं।

इन सब के बीच कुछ पल हम सूरदास के साहित्य में श्रीकृष्ण की बाललीला व मोहक झांकियों की ओर चलते हैं, जहाँ जीवन के आनंदित क्षण हैं, ममत्व का रस है।

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवि भक्त सूरदास का कृष्ण भक्ति भाषा में अग्रगण्य स्थान है। सूर ने विश्व कविता में उपेक्षित 'वात्सल्य भाव' की सर्वप्रथम साहित्य में प्रतिष्ठा की तथा ब्रह्म को बालरूप में स्थापित कर वात्सल्य भक्ति का उद्घाटन किया।

सूर ने बाल रूप में ब्रह्म को जन-जन का बना दिया जो गैया चराने..., माखन चुराने, गोप ग्वालों संग खेलने आदि नाना भांति की क्रीड़ाएँ करके सबका मन मोह लेती है।

इतना ही नहीं ईश्वर की बालरूप महिमा के माध्यम से सूर ने नारी के मातृत्व को सम्मानित करते हुए गृहस्थ धर्म की पुनः प्रतिष्ठा की। सूरदास का वात्सल्य वर्णन जहाँ हिन्दी की अनुपम निधि है, वहीं श्री कृष्ण के बाल सौन्दर्य की झांकी के साथ-साथ बाल-मनोविज्ञान का जैसा चित्रण सूर काव्य में उपलब्ध है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर वात्सल्य है और वात्सल्य सूर है। यह एक बड़ी ही आह्लादकारी एवं आश्चर्यपूर्ण बात

है कि सूर से पहले किन्हीं हिन्दी कवि ने वात्सल्य रस का ऐसा सुन्दर चित्रण नहीं किया, पर सूर ने पहली बार इस क्षेत्र में इतना सुन्दर कहा कि इस संबंध में औरों के लिए कुछ कहने को नहीं रहा।

माता यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ हृदय का ऐसा स्वाभाविक सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है जहाँ मन सुखद अनुभूतियों से भर जाता है। उसमें भगवान के मानवीय रूप के दर्शन होते हैं।

सूर के कृष्ण सामान्य गृहस्थ के बाल बन गए हैं जो चन्द खिलौना लेने के लिए हठ कर बैठते हैं तो-

‘मैया मैं तो चन्द खिलौना लँहो।

जैहां लोटि अबै धरनी पै तेरी गोद न ऐहीं॥

माता बहुत समझाती है..., पानी में चन्द्र का प्रतिबिम्ब दिखाती है पर वे नहीं मानते, हठ तो हठ ही है। जब वे इस तरह रूठते हैं, हठ करते हैं तब यशोदा माँ समझाते हुए कहती हैं-

‘काहे को आरि करत मेरे मोहन!

यो ता आँगन लोटी?

जो माँगहु सो देहुं मनोहर,

यहै बात तेरी खोटी॥’

सूरदास के बाल लीला में चित्रण ऐसा है जिसकी दृश्यता में जीवन स्पंदित है। पंक्तियां इतनी सहज है कि उनकी मार्मिकता मन में रच बस जाती है।

सूरकाव्य में सर्वाधिक मार्मिक स्थल वे हैं जिसमें कृष्ण की बाल चेष्टाओं का निरूपण माता यशोदा के वात्सल्य पूर्ण हृदय का अंकन है। जब यशोदा श्री कृष्ण को पालने झुलाती है, लोरियां गाती है-

‘यशोदा हरि पालनै झुलावै,

हलरावै दुलरावै...।’

जब वे घुटनों के बल चलते हैं और उनकी दंतुलियों के निकलने पर उल्लसित हो उठती हैं। वे आंगन में अंगुली के सहारे चलना सिखाती है-

‘सिखबत चलन जसोदा मैया।

अरबराय कर पानि गहावति,
डगमगाय धरै पैयाँ॥

इसी तरह मुख पर दधि का लेप किए हुए
कृष्ण का रूप कितना मोहक व आकर्षक बन
पड़ा है-

‘सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरन चलत रेनु तन मण्डित,
मुख दधिलेप किए॥’

पंक्तियाँ पढ़ते ही आंगन में गिरते-उठते
बालक का चित्र मन पर अंकित हो उठता है।

‘मैया मैं नहीं माखन खायो...’ यह पंक्ति
मार्मिक क्यों है? समूचे जीवन-चित्र के संदर्भ में
रखकर इसे समझा जा सकता है। बालक निरीह
है लेकिन अपने आप में बहुत चालाक बनते हैं।
वयस्क यह सब जानते हैं। कच्ची चालाकी से
मिलकर बच्चों की निरीहता वयस्कों के लिए
पहले से अधिक निरीह, अत्यन्त प्रिय हो उठती है।
कृष्ण के मुख पर माखन लगा है, वे पकड़ लिए जाते हैं
लेकिन अपनी ओर से तर्कों की ऐसी झड़ी लगा देते हैं
कि सारी वाक्मृदा उसका ऐसा ही अपराध स्पष्ट
करती है जिससे माँ को अपने बालक पर अधिक प्यार
उमड़ आता है।

बलदाऊ जब कृष्ण को चिड़ाते हैं कि तू
यशोदा का पुत्र नहीं है तुझे मोल लिया है तो
कृष्ण खीज व आक्रोश प्रकट करते हैं-

‘मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।

मो सौ कहत मोल को लीन्हों,
तोहिं जसुमति कब जायो॥’

‘तू मोहिं को मारन सीखी,
दाऊहिं कबहुँ खीजै...।’

इन उक्तियों में बाल हृदय की चहुल
वृत्तियों का बोध होता है।

लाल वर्णन के समय सूरदास अपने
अराध्य को इतने सहज स्वाभाविक रूप में
अवतरित करते हैं कि वे हमारे नेत्रों के समक्ष
हँसते मुस्कराते हुए, उठ-उठ कर गिरते हुए,
इधर-उधर दौड़ते हुए, साथियों से झगड़ते हुए,
माँ से झूठी शिकायते करते हुए किसी चंचल
बालक की छवि सजीव रूप में उपस्थित हो
जाती है। यशोदा मैया नाना प्रकार के प्रलोभन
देते हुए दूध पिलाती है... कृष्ण अपनी चोटी
बढ़ने के लालच में दूध पीते हैं कि दूध पीते ही
चोटी बढ़ जाएगी। वे एक हाथ से चोटी
पकड़कर... दूसरे हाथ से दूध का गिलास

पकड़कर माता यशोदा से पूछते हैं-

‘मैया मोरि कबहिं बढ़ेगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भइ,
अजहूँ है छोटी॥

तू जो कहती ‘बल’ की बेनी
ज्यों हवै है लाम्बी मोटी॥’

स्पर्धा का ऐसा सहज-सरल वर्णन सूर ही
कर सकते हैं। इसी प्रकार बालकों के क्षोभ का ये
वचन देखिए जब परस्पर कृष्ण के साथ खेल रहे
होते हैं। बाल सुलभ चेष्टाओं में कृष्ण अपनी
हार स्वीकार नहीं करते। जब कृष्ण अपने
साथियों पर खींजते हैं तो उन्हें अपने सखाओं से
यह भी सुनना पड़ता है-

‘खेलन में काको गो सैयाँ?
जाति-पाँति हमतें कछु नांहि,
न बसत तुम्हारी छैयाँ॥

अति अधिकार जनावत याते,
अधिक तुम्हारे हैं कछु गैयाँ॥’

गोपियों के बार-बार उलाहना देने पर
अन्ततोगत्वा कृष्ण की माँ यशोदा को खरी
तीखी बात-

‘मैया मैं न चरैहों गैयाँ...’ कितनी
मार्मिक, रसपूर्ण बन पड़ी है।

सूरदास ने जिस तन्मयता से वात्सल्य के
संयोग पक्ष का चित्रण किया है, उतनी ही
तन्मयता से वियोग जन्य वात्सल्य का भी भाव
विभोर कर देने वाला चित्रण किया है।

श्री कृष्ण के गोकुल प्रस्थान के समय
यशोदा कितनी विकल है इसका चित्रण देखिए-

‘जसोदा बार-बार यों भाखै।
है कोई ब्रज में हेतू हमारी,
चलत गोपालहि राखै॥’

श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर माता का
हृदय अपने पुत्र के लिए विकल होने लगता है।
उन्हें लगता है कृष्ण की आदतों से जितनी वे
परिचित थीं उतना और कोई उसे नहीं जानता। वे
देवकी को संदेश भेजती हैं-

‘संदेसो देवकी सों कहियो।
हौ तो धाय तिहारे सुत की
कृपा करति ही रहियो।
जदपि टेव तुम जानति हवै हो
तऊ मोहि कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ै
माखन रोटी भावै॥’

यशोदा अपने पुत्र के बिना एक पल भी
ब्रज में नहीं रहना चाहती-

‘नन्द ब्रज लीजै ठोंकि बजाय।
देहू विदा मिली जाहुं मधुपुरी,
जहँ गोकुल के राय॥’

इस तरह सूर के अद्वितीय वर्णन में हम
अनुभव करते हैं कि सूर को माता-पिता के हृदय
की गहरी पहचान थी। बालक गृहस्थ जीवन का
केन्द्र बिन्दु होता है। सूर ने केवल वात्सल्य का
चित्रण ही नहीं किया वरन उसे केन्द्र में रखकर
समूचा घर-परिवार-कुटुम्ब का चित्रण किया है।
सूरदास के जीवन एवं साहित्यिक योगदान से
शिक्षकों को प्रेरणा लेनी चाहिए। आँखों के अंधे
होने के बावजूद जिनके हृदय में प्रकाश (हिये में
च्यानणो) होता है, वे सूरदास की तरह महान
होते हैं। भीतर के चक्षु खुलने पर उन्हें पूरे जगत
के दर्शन होने लगते हैं। सूरदास जी की इसी
विशेषता को बताते एक पद याद रहा है, जिसमें
कहा गया है-

इसी तरह सूरदास

जिनकी थीं निगाहें खास

ऐसा नैनो में नशा था हरिनाम का

जब नैन हुए बंद

फिर आया वो आनन्द

देखा नज़र नजारा घनश्याम का

हर जगह वो समाया

सारे जग को बताया

आई आँखों में रोशनी ज्ञान की

देखी झूम-झूम झांकी भगवान की

कण-कण में है झाँकी भगवान की

किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की।

अन्त में हम निश्चित रूप से कह सकते हैं
कि कृष्ण बाललीला सम्बन्धी पदों में सूरदास ने
चिताकर्षकता, उल्लास, भावुकता, तन्मयता
अत्यधिक मात्रा में घोलकर सम्पूर्ण समाज को
जातिगत धर्म से परे आनन्ददायी लोकरंजक
वात्सल्य भक्ति प्रदान की। इन वात्सल्य भाव के
पदों को पढ़कर-सुनकर व्यक्ति अपने नीरस
और जटिल जीवन की समस्याओं को भूलकर
रसमग्न हो जाता है।

-व.अ. (हिन्दी)

राजकीय उ.मा. विद्यालय,

22 एन.टी.आर., नोहर-335523 (हनुमानगढ़)

मो. 9413712646



जन्म दिवस : 7 मई

रवीन्द्रनाथ टैगोर का अन्तिम भाषण

यह वर्ष 1941 की बात है। टैगोर कुछ समय के अन्तर्गत थे। वे क्षांति निकेतन छोड़ कर कलकत्ता जाने की तैयारी कर रहे थे और क्षायद उन्हें यह एहसास था कि वे अपने प्रिय विश्वविद्यालय में फिर वापस नहीं आयेंगे। बंगाली नववर्ष दिवस पर विश्व भारती में उन्होंने अपने चारों ओर फैली हिंसा एवं विनाश पर पीड़ा व्यक्त की। द्वितीय महायुद्ध की चरम स्थिति के समय दिया गया यह भाषण न केवल क्षांति निकेतन में दिया गया उनका अंतिम भाषण, बल्कि उनकी अंतिम मार्मिक घोषणा भी साबित हुआ। इन्हीं कारणों से यह एक हृदयस्पर्शी और संक्षिप्त भाषण है, उस व्यक्ति का अंतिम वसीयतनामा, जिसका इतिहास से मोहभंग हो चुका हो, परंतु मनुष्य में जिसका विश्वास बना हुआ हो। यह भाषण उन्होंने अपने जन्म दिवस के अवसर पर 7 मई 1941 को दिया था और इसके ठीक तीन माह पश्चात् 8 अगस्त 1941 को उनका महाप्रयाण हो गया। यह ऐतिहासिक दस्तावेज शिविर की उपलब्ध कबजाने के लिए हम हमारे शिक्षक साथी श्री महेन्द्र पाण्डे के प्रति आभारी हैं।

-दविष्ट सम्पादक

आज मैं अपनी आयु के अस्सी वर्ष पूरे कर रहा हूँ। जब मैं इतने वर्षों के इस विस्तृत अंतराल को पीछे मुड़ कर देखता हूँ और अपने आरंभिक विकास को स्पष्ट परिप्रेक्ष्य में देखता हूँ तो उस परिवर्तन को देखकर चकित रह जाता हूँ, जो स्वयं मेरी प्रवृत्ति और मेरे देशवासियों की मानसिकता में आया है—एक ऐसा परिवर्तन, जो अपने में एक गहरी त्रासदी समेटे हुए है। बाहर की विस्तृत दुनिया के लोगों से हमारा सीधा संपर्क अंग्रेजों, जिन्हें हम उन आरंभिक दिनों में जानते थे, के समकालीन इतिहास से जुड़ा हुआ था। वह मुख्यतः उनका समृद्ध साहित्य ही था, जिसके जरिए भारत-भूमि पर आए जिसे पढ़कर इन आगंतुकों के बारे में हम कोई राय बनाते थे। उन दिनों जो शिक्षा हमारे सामने परोसी जाती थी, वह न तो प्रचुर थी, न ही विविध और न ही वैज्ञानिक खोज की पद्धति चलन में थी। इस तरह उसका क्षेत्र अत्यंत सीमित होने से उन दिनों के शिक्षित लोग अंग्रेजी भाषा और साहित्य का सहारा लेते थे। उनके दिन और रात बुर्क की राजसी घोषणाओं, मैकाले के लंबे-लंबे वाक्यों, शेक्सपियर के नाटकों एवं बायरन की कविताओं पर केंद्रित चर्चाओं से और सबसे बढ़कर उन्नीसवीं शताब्दी की ब्रिटिश राजनीति के उदारवाद से सुखरित होते थे।

उस समय यद्यपि हमारी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सतर्क प्रयास आरंभ हो चुके थे, अपने हृदय में अंग्रेजी कौम की मौलिक उदारता पर से हमारा विश्वास ढिगा नहीं था। हमारे नेताओं की

भावनाओं में यह विश्वास इस हद तक जड़ें जमाए हुआ था और उन्हें आशा थी कि अपनी सदाशयता के चलते विजेता स्वयं पराजितों की स्वतंत्रता का मार्ग खोल देगा। यह विश्वास उस तथ्य पर आधारित था कि उस समय इंग्लैंड ने उन लोगों को संरक्षण प्रदान किया था, जिनको उत्पीड़न के कारण अपना देश छोड़ना पड़ा था। राजनीतिक शहीदों, जिन्होंने अपने देशवासियों के सम्मान की खातिर जुल्म सहे थे, का अंग्रेजों द्वारा खुलकर स्वागत किया गया था। अंग्रेजों के चरित्र में उदारवादी मानवता का सबूत देखकर मैं उनसे प्रभावित था और मैंने अपने मन में उन्हें आदर का स्थान दिया था। उनके राष्ट्रीय चरित्र में यह उदारता तब तक साम्राज्यवादी अहंकार से दूषित नहीं हुई थी। लगभग इसी समय इंग्लैंड में एक लड़के के रूप में संसद के भीतर और बाहर जॉन ब्राइट के भाषण सुनने का अवसर मिला था। उन भाषणों में झलकने वाले विशाल हृदय, अधीर सुधारवाद, जो संकीर्ण राष्ट्रीय सीमाओं के पार देखता था, ने मुझ पर इतना गहरा प्रभाव डाला था कि उनका कुछ भाग आज के इस मोहभंगकारी समय में भी मेरी चेतना में अब तक तैर रहा है।

निश्चित रूप से अपने शासकों की उदारता पर ऐसी दयनीय निर्भरता की भावना कोई गर्व की बात नहीं थी। महत्वपूर्ण बात यह थी कि हमने मानवीय ऊँचाई को खुले दिल से स्वीकार किया, चाहे वह किसी विदेशी में ही दिखाई दी थी। मनुष्य को मिली सर्वोत्तम और

श्रेष्ठतम सौगातों पर किसी एक कौम या देश का एकाधिकार नहीं हो सकता। उनका दायरा सीमित नहीं है और न ही उन्हें जमीन के अंदर गड़ी किसी कंजूस की संपत्ति माना जा सकता है। इसीलिए अंग्रेजी साहित्य, जिसने भूतकाल में हमारे मनो को पुष्ट किया था, अब भी हमारे मन की गहराइयों में उसकी प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

अंग्रेजी शब्द 'सिविलाइजेशन' (सभ्यता) का बंगला में उचित समानार्थक शब्द मिलना कठिन है। इस देश में सभ्यता के जिस चरण से हम परिचित थे, उसे 'सदाचार' कहा गया है—अर्थात् किसी नस्ल का निर्धारित परंपरागत आचरण। अपने आप में संकीर्ण, इन समय-सिद्ध सामाजिक परंपराओं ने एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र, वह भूमि जिसका नाम था ब्रह्मावर्त, जो दोनों ओर से दो नदियों से घिरी हुई थी, में जन्म लिया और वहीं विकसित हुई। इस तरह एक नियमबद्ध रुढ़िवाद धीरे-धीरे मुक्त विचार और सदाचार के आदर्श, जिसे ब्रह्मावर्त में स्थापित किया था, पर हावी होने लगा, जिसने बाद में एक सामाजिक तानाशाही का रूप ले लिया।

मेरे लड़कपन के दिनों में बंगाल के सुसंस्कृत और शिक्षित वर्ग, जो अंग्रेजी साहित्य पढ़कर बड़ा हुआ था, का रवैया समाज के उन कठोर नियमों के प्रति विद्रोह की भावना से भरा हुआ था। उन दिनों के शिक्षित भद्र लोगों के तौर-तरीकों का वर्णन करते हुए राजनारायण बोस ने जो कुछ लिखा है, उसे पढ़कर यह

भली-भांति स्पष्ट हो जाएगा, जो मैंने अभी-अभी कहा है। इन निर्धारित आचार-संहिताओं के बजाय हमने 'सभ्यता' के उस आदर्श को स्वीकार कर लिया, जो उसके अंग्रेजी शब्द में निहित है।

उसके प्रखर बुद्धिवादी और नैतिक बल के कारण हमारे अपने परिवार में इस बदली हुई सोच का भरपूर स्वागत हुआ था और उसका प्रभाव हमारे जीवन के हर क्षेत्र में महसूस किया गया था। इस वातावरण, जिसमें साहित्य के प्रति स्वभावतः हमारा झुकाव था, स्वाभाविक रूप से मैंने अंग्रेजी को अपने मन के सिंहासन पर बिठा रखा था। इस तरह मेरे जीवन के आरंभिक अध्याय पूरे हुए। फिर मोहभंग की पीड़ादायक अनुभूति के साथ उनके एवं हमारे मार्ग अलग होते चले गए और मुझे उत्तरोत्तर यह लगने लगा कि वे लोग, जो सभ्यता की सर्वोच्च ऊँचाईयों को स्वीकार करते थे, अपने राष्ट्रीय हितों का प्रश्न सामने आने पर कितनी आसानी से उन्हें छोड़ देते हैं।

फिर एक ऐसा समय आया, जब मुझे विवश होकर स्वयं को केवल साहित्य के रसास्वादन से तोड़ लेना पड़ा। जब मैंने कठोर सच्चाईयों के जगत में प्रवेश किया तो भारत की जनता की घोर दरिद्रता को देखकर मेरा हृदय छलनी हो गया। अपने सपनों से झकझोर कर जगा दिया जाकर मुझे महसूस होने लगा कि शायद ही दुनिया के किसी और आधुनिक राष्ट्र में जीवन की आधारभूत वस्तुओं का इतना अभाव होगा। मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मानवता के इतने ऊँचे आदर्श इतनी हृदयहीन विडंबना में बदल जाएंगे। परंतु आज करोड़ों भारतीयों के कल्याण के प्रति उस तथाकथित सभ्य समाज की घोर और घृणित उपेक्षा एक कठोर सच्चाई बनकर मेरे सामने खड़ी है।

मशीन में उनकी प्रवीणता, जिसके बल पर ब्रिटिश लोगों ने इतने बड़े साम्राज्य पर कब्जा कर रखा है, एक ऐसा रहस्य है, जिस तक हमारी कोई पहुंच नहीं है। इस दौरान हमारी आँखों के सामने जापान स्वयं को एक शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र बनाने में जुटा हुआ है। मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है कि किस प्रशंसनीय तरीके से जापान ने इस प्रगति के लाभों को अपने देश के विकास में लगाया है। जब मैं मास्को में था तो यह देखना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि किस अपरिमित ऊर्जा के साथ रूस ने अपने देश में बीमारी और अशिक्षा का मुकाबला किया

है तथा अज्ञान एवं गरीबी को दूर करने में सफल रहा है और इस तरह महाद्वीपीय आकार के अपने देश का सम्मान बचाए रखा है। उसके द्वारा हासिल की गयी तीव्र और विस्मयकारक प्रगति को देखकर मुझे खुशी भी हुई और ईर्ष्या भी। सोवियत प्रशासन के जिस एक पहलू ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया, वह यह था कि धार्मिक भिन्नताओं के आधार पर वह किसी टकराव की इजाजत नहीं देता और न राजनीतिक शक्ति के असंतुलित बंटवारे के कारण एक समुदाय को दूसरे के खिलाफ खड़ा करता है। इसी को मैं वास्तव में सभ्य प्रशासन कहता हूँ, जो बिना भेदभाव के जनता के सामान्य हितों की रक्षा करता है।

मैंने राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता के बोध के साथ नव-जाग्रत ईरान को भी देखा है, जो दो यूरोपीय शक्तियों के घातक शिकंजे से निकलकर अपनी नियति स्वयं बनाने का प्रयत्न कर रहा है। उस देश की हाल की यात्रा में मुझे यह देखकर हर्ष हुआ कि पारसी समुदाय, जिसने कभी बहुसंख्यक संप्रदाय की नफरत झेली थी और शासक वर्ग द्वारा जिनके अधिकार कम कर दिए गए थे, अब शताब्दियों पुराने दमन से मुक्त हो चुके थे और उस सुखद भूमि पर एक सभ्य जीवन स्थापित हो चुका था। यह महत्वपूर्ण है कि ईरान का शुभ समय उसी दिन से आरंभ हो गया था, जब उसने यूरोपीय राजनय के जाल से स्वयं को मुक्त कर लिया था। मैं हृदय से ईरान के लिए शुभकामना प्रकट करता हूँ।

अपने पड़ोसी राज्य अफगानिस्तान की ओर देखने पर मैं पाता हूँ कि यद्यपि वहां शिक्षा व सामाजिक विकास के क्षेत्र में सुधार की गुंजाइश है, वह इस मामले में सौभाग्यशाली है कि वह एक अंतहीन प्रगति की आशा कर सकता है, क्योंकि अपनी सभ्यता पर गर्व करने वाले यूरोपीय देशों में से कोई भी उसे पराजित करके उसकी संभावनाओं को कुचलने में सफल नहीं हुआ है। इस तरह जहां अन्य देश प्रगति की ओर अग्रसर थे, ब्रिटिश प्रशासन के भारी बोझ तले भारत अपनी घोर असहायता में जड़ बना हुआ है। एक और महान व प्राचीन सभ्यता जिसके हाल के दुखद इतिहास की जिम्मेदारी से ब्रिटिश बच नहीं सकते, चीन है। अपने राष्ट्रीय लाभ के लिए ब्रिटिश लोगों ने चीनवासियों में अफीम के नशे की लत डाल दी और फिर उनकी जमीन का एक भाग हड़प लिया। जब दुनिया इस अन्याय को भूलने ही वाली थी, एक और घटना

से हमें दुखद आश्चर्य हुआ। जहां जापान चुपचाप उत्तरी चीन को निगल रहा था, ब्रिटिश सरकार के वरिष्ठ राजनयिकों द्वारा उसे एक तुच्छ घटना मानकर उसकी अनदेखी कर दी गयी। हमने इतनी दूर से यह भी देखा है कि स्पेनिश गणतंत्र के विनाश को ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने कितनी आसानी से अपनी मौन स्वीकृति दे दी थी।

दूसरी ओर हमने प्रशंसा भाव से यह भी नोट किया है कि कैसे कुछ बहादुर अंग्रेजों के एक दल ने स्पेन के लिए अपनी जान तक कुरबान कर दी थी। यद्यपि अंग्रेजों ने सुदूर पूर्व में चीन के प्रति अपने उत्तरदायित्व के बोध को पर्याप्त रूप से नहीं जगाया था, अपने पड़ोसी देश में आजादी के लिए वे अपनी जान तक कुरबान करने से नहीं चूके। ऐसे नायकोचित कृत्यों ने मुझे अंग्रेजों के सच्चे चरित्र की फिर से याद दिला दी, जिस पर अपने आरंभिक दिनों में मुझे पूरा विश्वास था। मुझे अचरज हुआ कि साम्राज्यवादी लालच इतनी महान कौम के चरित्र में कैसे इतना कुरूप रूपांतरण ला सकता है।

इस बात पर कोई विश्वास नहीं कर सकता कि बौद्धिक क्षमता में भारतीय जापानियों से किसी तरह भी कमतर है। इन दोनों पूर्वी देशों में निर्णायक अंतर इस तथ्य में निहित है कि जहां भारत ब्रिटिश लोगों की दया पर निर्भर है, जापान पर विदेशी आधिपत्य की छाया तक नहीं है। हम जानते हैं कि हम किन-किन बातों से वंचित हैं। उनकी सभ्यता में जो बात सचमुच सर्वोत्तम थी, मानवीय संबंधों की गरिमा को बनाए रखना, भारत में ब्रिटिश प्रशासन में उसका कोई स्थान नहीं है। उसे स्थान पर हाथ में डंडा लेकर यदि उन्होंने 'कानून और व्यवस्था' का राज, दूसरे शब्दों में एक पुलिसिया राज कायम किया है तो सभ्यता का यह स्वांग हमारे आदर का पात्र नहीं हो सकता। लोगों में एकता पैदा करना तथा शांति और सामंजस्य कायम करना सभ्यता का उद्देश्य होता है। परंतु भारत में, 'कानून और व्यवस्था' के इस राज की छत्रछाया में 'गुंडागर्दी की घटनाओं' जिनकी तीव्रता दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है- ने हमारे सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया है। भारत में जब तक शासक कौम का कोई सदस्य हिंसा का शिकार नहीं होता, इस बर्बरता का जारी रहना तय है। ऐसे प्रशासन के अधीन जीने से हम शर्मसार हो जाते हैं।

फिर भी, मेरा सौभाग्य अक्सर मुझे सचमुच विशाल हृदय अंग्रेजों के निकट संपर्क में

लाया है। जरा भी संकोच किए बिना मैं कह सकता हूँ कि उनके चरित्र की कुलीनता का कोई सानी नहीं—उनके जैसी महान अंतरात्मा मैंने किसी देश या समुदाय के लोगों में नहीं देखी। ऐसे उदाहरण उस कौम में मेरा विश्वास कम होने की अनुमति नहीं देंगे, जिसने उन्हें पैदा किया है। एक सच्चे अंग्रेज, एक सच्चे ईसाई और एक सच्चे इन्सान एंड्रयूज को एक घनिष्ठ मित्र के रूप में पाकर मुझे एक अनूठा वरदान मिला है। आज उनकी मृत्यु के परिप्रेक्ष्य में उनकी निस्वार्थ एवं साहसी विशाल हृदयता और भी दीप्तिमान हो जाती है। प्रेम और समर्पण भाव से असंख्य कृत्यों के कारण हम उनके ऋणी हैं। व्यक्तिगत तौर पर कहूँ तो मैं विशेष रूप से उनका आभारी हूँ, क्योंकि उन्होंने मुझे इस वृद्धावस्था में भी अंग्रेज कौम के प्रति उस आदर-भाव को बनाए रखने में सहायता की, जो भूतकाल में उनके साहित्य के कारण पैदा हुआ था और जिसे अब मैं खोने ही वाला था। मैं एंड्रयूज जैसे अंग्रेजों की गिनती केवल अपने व्यक्तिगत और घनिष्ठ मित्रों में ही नहीं, बल्कि पूरी मनुष्य जाति के मित्रों में करता हूँ। उनको जानना मेरा परम सौभाग्य रहा है। मेरा विश्वास है कि ऐसे अंग्रेज ब्रिटेन की इज्जत को नष्ट होने से बचाएंगे। बहरहाल, यदि मैंने उन्हें न जाना होता तो पश्चिमी सभ्यता के भविष्य के प्रति मेरी निराशा असंदिग्ध होती।

इसी दौरान बर्बरता के दानव ने अपने सारे बहाने त्यागकर अपने अनावृत विष दंत सबको दिखा दिए हैं और सर्वनाश के तांडव में मानव जाति को चीरने-फाड़ने के लिए तैयार है। दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक नफरत का विषैला धुआं समूचे वातावरण को अंधेरे में धकेल रहा है। हिंसा की प्रवृत्ति जो शायद पश्चिम के मनोलोक में सुप्त रूप से विद्यमान थी, अब जाग गयी है और उसने मनुष्य की अंतरात्मा को मैला कर दिया है।

नियति-चक्र किसी दिन अंग्रेजों को भारतीय साम्राज्य छोड़ने के लिए मजबूर कर देगा। परंतु किस प्रकार का भारत वे अपने पीछे छोड़कर जाएंगे, कैसी घोर दुर्दशा में? उनकी शताब्दियों के प्रशासन की धारा अंत में जब सूख जाएगी तो अपने पीछे कितनी कीचड़ और कितनी गाद छोड़ जाएगी। एक समय मेरा विश्वास था कि सभ्यता का उद्गम यूरोप के हृदय से होगा। परंतु आज जब मैं यह संसार त्यागने के निकट हूँ, तब मेरा वह विश्वास पूरी तरह से दिवालिया साबित हुआ है।

जब मैं अपने चारों ओर देखता हूँ तो एक गौरवशाली सभ्यता के भग्नावशेष निरर्थकता के एक ढेर में बिखरे पाता हूँ। फिर भी मनुष्य पर ही विश्वास खो देने का घोर पाप मैं नहीं करूंगा, बल्कि इस तबाही के गुजर जाने के बाद मैं मनुष्य के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने का इंतजार करूंगा, जिसमें सेवा और बलिदान की भावना वातावरण को पवित्र बना देगी। शायद वह भोर उस क्षितिज पूर्व से—जहां से सूरज उगता है—से आएगी। एक दिन आएगा, जब अपराजेय मनुष्य सारी बाधाओं के बावजूद अपने विजय मार्ग को पुनः खोजकर अपनी खोयी हुई मानवीय विरासत को फिर से पा लेगा।

आज हम उन संकटों को देख रहे हैं, जो शक्ति की धृष्टता में से उपजे हैं। एक दिन वह पूरा सच सामने आएगा, जिसकी घोषणा मनीषियों ने की है।

‘एक अनैतिक मनुष्य समृद्धि प्राप्त करता है। उसे वह सब मिलता है, जो अभीष्ट प्रतीत होता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, परंतु अपने ही मूल में नष्ट होता जाता है।’

सौजन्य : **महेन्द्र पाण्डे**, व्याख्याता
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मो. 9928370327

इस माह का गीत

मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ...

□ गोपाल दास नीरज

मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ
तुम मेरी मंजिल मत आसान करो

है फूल रोकते, कांटे मुझे चलाते
मरुस्थल, पहाड़ चलने की चाह बढ़ाते
सच कहता हूँ जब मुश्किलें ना होती हैं
मेरे पग तब चलने में भी शक्ति...
मेरे संग चलने लगे हवाएं जिससे
तुम पथ के कण-कण को तूफान करो

मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ
तुम मेरी मंजिल मत आसान करो

फूलों से जग आसान नहीं होता है
रुकने से पग गतिवान नहीं होता है
अवरोध नहीं तो संभव नहीं प्रगति भी
है नाश जहां निर्मम वही होता है
मैं बसा सुकून नव स्वर्ग ‘धरा’ पर जिससे
तुम मेरी हर बस्ती वीरान करो

मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ
तुम मेरी मंजिल मत आसान करो

मैं पंथी तूफानों में राह बनाता
मेरा दुनिया से केवल इतना नाता
वह मुझे रोकती अवरोध बिछाकर
मैं ठोकर लगाकर बढ़ता जाता
मैं ठुकराकर सक्कू तुम्हें भी हंसकर जिससे
तुम मेरा मत मानस पाषाण करो

मैं तूफानों में चलने का आदी हूँ
तुम मेरी मंजिल मत आसान करो

कबीर जयंती : 13 जून

में कहता हूँ आँखन देखी

□ राजेन्द्र जोशी

परिचय



कबीर

कबीर का जन्म सन् 1398 वाराणसी के पास 'लहरतारा' उ.प्र. में हुआ था। कबीर की प्रमुख रचनाओं में 'बीजक' जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी संकलित है। कबीर का निधन 1518 में बस्ती के निकट मगहर में हुआ। कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा (ज्ञानाश्रयी शाखा) के प्रतिनिधि कवि हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे, 'बन पड़े तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर' इसीलिए कबीर को हजारों प्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है।

दुनिया में हिंसा की वर्तमान चुनौती को मध्य में रखते हुए हमको कबीर की नजर की जरूरत पड़ने लगी है। समाज में निरन्तर बढ़ रही साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक क्रूरता को महिमामण्डित करने वाली परिस्थितियों से निजात पाने की समस्या को केवल कबीर की नजर से ही देखा जा सकता है। हां, कबीर निर्गुण भक्ति क्षेत्र के फक्कड़ सन्त के रूप में पहचाने जाते हैं, उन्होंने समाज में अभेद और एकता की वाणी प्रसारित की थी। कबीर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से संसार के प्रति उदासीनता तथा तटस्थता रखने और छल-कपट से दूर रहने के उपदेश दिए हैं। दिनोदिन बढ़ रही सामाजिक

हिंसा और असहिष्णुता का प्रतिरोध कबीर के माध्यम से होना चाहिए।

कबीर की वाणी विगत 600 वर्षों से अन्धधार्मिकता, कठमुल्लान और जातीय असहिष्णुता के समक्ष भारत के जन-साधारण की चेतना में प्रवर्धमान जैसा सम्भव है, जिसे नई प्रासंगिकता देकर समाज में बढ़ रहे हिंसा के नित नये प्रतिष्करण को प्रतिरोध दिया जा सकता है। समाज में हिंसा की स्थितियों को पहचानने और उन स्थितियों को पैदा करने वाली मानसिकता को समाप्त करने, नहीं तो कम से कम घटाने के लिए कबीर-संवाद की आवश्यकता महसूस की जा रही है, क्योंकि कबीर हमारे आजकल के धर्मनिरपेक्षतावाद के प्रतीक हो सकते हैं। कबीर सब कुछ को स्वीकार करके नहीं चलते। उनकी वाणी एक आहत मनुष्य की वाणी है जो प्रत्येक अत्याचार एवं हिंसा से संवेदित होकर आर्त स्वर में निकलती नजर आती है।

सामाजिक हिंसा और साम्प्रदायिकता का निराकरण केवल महात्मा कबीर की वाणी में ही खोजने की जरूरत है। कबीर के यहां बाहर और भीतर में कोई फर्क नहीं है। कबीर बाहर और भीतर की निरन्तरता के महागायक हैं। जो भीतर और बाहर के बीच शब्द-सेतु बनाते हैं। इस युग में कबीर की तरह देखने और सोचने की जरूरत है। हमारी चिन्ताएं ऐसी हों कि आधुनिक युग में इतनी प्रगति होने के बावजूद भी अभी लोग दरिद्रता से ग्रसित क्यों हैं ? हमें अस्मिताओं की चिन्ता होनी चाहिए। मगर मानवीय मूल्यों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। आज मानवीय मूल्यों को मान्यता प्रदान करने की आवश्यकता है। कबीर की वाणियों में ऐसा समाज दर्शन व्यक्त हुआ है जो व्यक्ति को जीने की सूझ और मार्गदर्शन प्रदान करता है। वाणियों से व्यक्त इन दिशा-निर्देशक सूत्रों का प्रचार हमें समाज में व्यापकता से करना चाहिए। वर्तमान समय में समाज अनेक दुरूह चुनौतियों से गुजर रहा है।

कबीर की वाणियां इन चुनौतियों का प्रत्युत्तर बन सकती हैं। कबीर की शिक्षाएं विवेक को जगाने का कार्य कर सकती हैं।

कबीर के लिए कविता साध्य न होकर साधन थी। वे सहज अनुभूतियों को बड़ी प्रभावीशैली में जनमानस तक पहुंचाना चाहते थे। ठीक निशाने पर चोट मारने की कला में कबीर अद्वितीय हैं। कबीर धार्मिक संकीर्णता को दूर करने वाले एक समाज सुधारक के रूप में हमारे सामने खड़े हैं। उन्होंने राम और रहीम की एकता बता कर हिन्दू और मुसलमानों के धार्मिक विद्वेष को दूर करने का प्रयत्न किया। आज के परिप्रेक्ष्य में कबीर की चिन्ताओं से आत्मावलोकन के लिए प्रेरणा ग्रहण करने की गहरी जरूरत है।

कबीर को विस्तार से समझने का प्रयास करें तो स्पष्ट होगा कि उन्होंने अपना सारा जीवन केवल व्यक्ति को अच्छा इन्सान बनाने के लिए, व्यक्ति को ऊंचा उठाने के लिए, बंद फूल खिलाने के लिए अर्पित किया। कबीर के लिए व्यक्ति की कोई जात, धर्म अथवा सम्प्रदाय बाधा नहीं थी। शिक्षा के दृष्टिकोण से इसे देखना चाहिए।

कबीर की वाणियां व्यक्ति के विवेक को जगाती हैं। समस्याओं को कम करती हैं। इसलिए विवेक जगाने और समस्या को कम करने के लिए आज के प्रसंग में कबीर महत्वपूर्ण रचनाकार हो सकते हैं। कबीर के रचना संसार में धर्मनिरपेक्षता, अहिंसा, सद्भाव, सहिष्णुता एवं समन्वय जैसे अनेक विषयों से स्पष्ट सीख ली जा सकती है।

कबीर किसी जगह पर आए हों या नहीं, लेकिन स्थानीय किंवदंतियां बताती हैं कि कविता के रूप में, आवाज के रूप में कबीर कोने-कोने में पहुंचे। हम कबीर को प्रेरणा स्रोत मानते हुए अपने समय की समस्याओं से टकराने का हौसला बनाना चाहते हैं। हमारी जितनी सामर्थ्य, क्षमता में उसको ध्यान में रखते हुए हम

लोग साम्प्रदायिकता से चिन्तित हुए हैं।

हमारी संस्कृति सामाजिक संस्कृति है। हम सदा मिलकर साथ रहते आए हैं लेकिन लगता है कि हम तकलीफदाई बातों से नजर चुराते हैं। सचमुच यदि हम साथ रहते आए हैं तो सारा स्पष्ट साम्प्रदायिकता का जो अंग्रेजों की उपनिवेशवाद की देन है, उसे कबीर को कहने की जरूरत नहीं पड़ती।

हिन्दू कहे राम हमारा

मुसलमान कहे रहमाना

आपस में दोऊ लड़त मरत हैं

मर्म न कोऊ जाना।।

हम कबीर से कुछ सीख सकते हैं, कुछ प्रेरणा ले सकते हैं। कबीर प्रेम के पुजारी थे, साथ ही क्रोध में भी कम नहीं थे। बचपन से लेकर विश्वविद्यालय तक में कबीर केवल प्रेम को खंजरी बताते रहते थे, ऐसा नहीं है क्योंकि ऐसा सच्चा प्रेम नहीं होता जो जरूरत पड़ने पर क्रोधित न हो, कड़वी बात न करे। कबीर तीखे क्रोध में

भी प्रेम में क्रोध की स्थिति उत्पन्न कर देते थे। उन्हें कहना पड़ा था—

जो घर फूँके आपणा चले हमारे साथ।

मिसाल के तौर पर क्या आपको लगता है, कबीर उस तरह के कवि हैं, जैसे कवि आजकल के फैशन में हैं। आजकल के हिन्दू मुस्लिम एकता का मूल आधार कैसा है? दोनों संगठनों की मूर्खताएं हैं, कुरीतियां हैं उनके बारे में भी सोचना या नहीं कि चुप रहना होगा और ऊपर से कहना होगा हां कहो, हिन्दू धर्म भी अच्छा, मुस्लिम भी अच्छा, इस्लाम भी अच्छा। सबको अच्छा कहते रहिए।

कबीर का सौभाग्य था कि वे 600 साल पहले आकर अपनी बात कह गए। आज होते तो कभी उन पर पत्थर फेंके जाते, कभी उनके खिलाफ फतवा जारी होता, तो कभी वे धर्मद्रोही कहलाते। इसलिए कबीर से यदि हम सचमुच कुछ सीख सकते हैं तो वो है क्रोध-प्रेम से उत्पन्न होने वाला क्रोध।

परम्परा और समाज अस्मिता का यह बोझ जिसमें कोई व्यक्ति, व्यक्ति नहीं है केवल एक सामाजिक अस्मिता और संस्कृति का हिस्सा है उसकी कोई हैसियत नहीं है वहीं कबीर प्रासंगिक हैं जो मूलतः भारतीय चिंतन प्रेम के इतिहास में पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पुरजोर रूप से इस बात को रेखांकित किया कि हिन्दू या मुसलमान, जुलाहा का ब्राह्मण होने के बाद कोई भी पहले इंसान है और बतौर इंसान के उसकी हैसियत है बतौर उसे पुरस्कार या दण्ड मिलना चाहिए।

कबीर हिन्दुस्तान के इतिहास में पहले व्यक्ति हैं जिन्हें यह व्यक्ति की धारणा अपने पूरे रूप को प्राप्त होती प्रतीत होती है। सम्भवतः जिसके बिना कोई भी लोकतंत्र समाज नहीं है, आधुनिकता नहीं है। व्यक्तियों की अवधारणा राजनैतिक धरातल पर सीधे-सीधे बदलती है।

—तपसी भवन,

नथूसर बास, बीकानेर-334004

मो. 9829032181

हिन्दी साहित्य के भक्ति-काल की ज्ञानाजयी काव्य धारा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि के रूप में महाकवि कबीर का स्थान अग्रगण्य है। इस निर्गुणोपासक संत कवि ने जाति-पांति, भेद-भाव, ऊँच-नीच, समानता-असमानता आदि विसंगतियों पर गहरा कटाक्ष किया। उन्होंने अपने जीवन में किसी भी वर्ग या वर्ग समूह की स्तुति अथवा निन्दा नहीं की। साथ ही उनमें खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति भी नहीं थी। यदि उनकी स्पष्टवादिता को हम निन्दा-स्तुति अथवा खण्डन-मण्डन समझें तो यह अनुचित ही होगा। यही कारण है कि उनकी वाणी में जो शिक्षाएं विद्यमान हैं, वे प्रासंगिक थीं, प्रासंगिक हैं और आने वाले समय में भी प्रासंगिक बनी रहेंगी। उन्होंने मूर्ति पूजा, जाति-पांति, बाह्याडम्बरों, अंधविश्वासों आदि का विरोध किया है और गुरु के प्रति श्रद्धा, जीव-मात्र पर प्रेम, सत्संगति आदि के महत्व पर जोर दिया है।

महाकवि कबीर संतोषी, उदार, निर्भीक, सत्यवादी, अहिंसा व प्रेम के समर्थक, आडम्बर विरोधी क्रांतिकारी सुधारक थे। वे एक मस्तमौला, लापरवाह, फक्कड़ फकीर थे। वे जन्म से ही विद्रोही थे और उनमें अदम्य साहस एवं अखण्ड आत्मविश्वास था। उन्होंने कदाचार

का पुरजोर विरोध किया।

कबीर की प्रामाणिक रचना 'बीजक' है जिसमें 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी' का संकलन है। 'बीजक' कबीर के शिष्य धर्मदास द्वारा किया गया संकलन है। यह ज्ञात है कि कबीर निरक्षर थे किन्तु बहुश्रुत ज्ञानी थे। अतः उनके प्रमुख शिष्यों में से एक धर्मदास ने सोचा कि क्यों न मेरे गुरुजी की वाणी का संकलन कर लिया जाये। यदि धर्मदास ने अपने गुरु की वाणी

कबीर की सीख

□ तरुण कुमार दाधीच

का संकलन न किया होता है तो आज कबीर का नामोल्लेख कहीं पर भी नहीं होता और उनकी प्रेरणादायक वाणी, उपदेशों और शिक्षाओं से हम वंचित ही रहते।

कबीर विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। जीवन के अनुभव उनमें कूट-कूट भरे हुए थे। इस कारण वे बहुश्रुत ज्ञानी हो गए। इस प्रकार जब उनकी वाणी समाज के लिए प्रस्फुटित हुई तो वह

अमृत-सरिता बन गई। आज भी इस सरिता में गोते लगाकर श्रोताओं एवं पाठकों का जीवन सफल हो रहा है। उन्होंने ईश्वर के प्रति आस्था के बाहरी पक्ष को ठुकरा कर भगवत्प्रेम के आदर्श को स्वीकार करने की बात कही, जहाँ एक मनुष्य दूसरे से मनुष्य के रूप में मिल सके। कबीर के ऐसे विचार वर्तमान परिवेश में उपादेय कहे जा सकते हैं।

आज के हलचल भरे भौतिकवादी युग में जबकि सर्वत्र अविश्वास, घृणा, व्यक्तिवादी धारणा, भोगवादी अपसंस्कृति का साम्राज्य है, ऐसे समय में कबीर की शिक्षाओं और संदेशों की महत्ती आवश्यक है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि कबीर युगावतार की शक्ति एवं विश्वास लेकर चले थे और युग प्रवर्तन की दृढ़ता उनमें विद्यमान थी। इसी कारण कबीर युग-प्रवर्तन का सराहनीय कार्य कर सके।

आज असमानता, विषमता, छुआ-छूत, ऊँच-नीच आदि मानव समाज के लिए कलंक है और इस कलंक को कबीर ने मिटाने का जो स्तुत्य कार्य किया है वह सदैव हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहेगा। कबीर के विचारों के प्रचार-प्रसार के द्वारा जनसामान्य की सोच में परिवर्तन लाया जा सकता है। यही कारण है कि

प्रताप जयंती : 31 मई

शौर्य तथा स्वतंत्रता के पर्याय राणा प्रताप

□ रामदेव बाबू यादव

आज प्राथमिकता, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं में कबीर को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है ताकि देश की भावी पीढ़ी उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर अपने जीवन को नई दिशा प्रदान कर सके।

कबीर के विचार तत्कालीन समय में भी उपयोगी थे, आज भी है और भविष्य में भी उपयोगी बने रहेंगे। वर्तमान परिवेश में कबीर की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है जबकि चारों ओर मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। आज देश की एकता और संस्कृति-जागरण के लिए कबीर की प्रखर वाणी की नितान्त आवश्यकता है जो आपसी भेदभाव-से ऊपर उठकर मनुष्य को एकता के सूत्र में बांध सके।

कबीर का लोक पक्ष सबसे अधिक प्रबल पक्ष है। कबीर के काव्य का मूल विषय सामाजिक सुधार रहा है। इसका मुख्य आधार है, सामाजिक समानता। कबीर ने ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाने के लिए सभी को समान स्तर पर समझने का प्रचार किया वस्तुतः कबीर के काव्य के दो पक्ष हैं-व्यक्ति पक्ष और समाज-पक्ष। इन दोनों पक्षों की दृष्टि से कबीर ने एक व्यक्ति के अहंकार को दूर करने का उपदेश दिया। व्यक्ति पक्ष से आगे आकर कबीर समाज के पक्ष में सभी गतिरोधों को दूर करने की बात कहते हैं। सबसे बड़ा गतिरोध जाति-पाति का था। अतः उन्होंने इसका विरोध किया। कबीर ने इस बात पर बल दिया कि जाति का निर्माण ईश्वर ने नहीं मनुष्य ने किया है और इसमें उसका स्वार्थ निहित है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कबीर एक युग दृष्टा, समाज सुधार संत कवि थे और उनकी वाणी आज भी महत्व रखती है। उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करने की आवश्यकता है। एक उच्च कोटि के उपदेशक के रूप में वाणी की जो सशक्त शिक्षाएं कबीर ने दी, वे जन-जन की जिह्वा पर अमिट रूप से विद्यमान रहेगी।

-प्राध्यापक-हिन्दी

राज. फतह उ.मा.वि., उदयपुर

मो. 9414177572

जो मनुष्य देश और काल के ज्ञान से रहित, परिणाम में कटु, अप्रिय, अपने लिए लघुता कारक और अकारण वचन बोलता है, उसका वह वचन विष नहीं है।

-पंचतंत्र

भा रत का सम्पूर्ण इतिहास वीरता, साहस तथा देशप्रेम से ओतप्रोत रहा है, विशेषकर राजपूताने की भूमि से तो रणबांकुरों ने अपने देश, समाज तथा स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है, इनमें स्वाधीनता के नायक, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का नाम सर्वोपरि है। आज भी महाराणा प्रताप का नाम लेते ही मन में देश प्रेम, स्वतंत्रता तथा वीरता की भावना स्वतः ही प्रकट होने लगती है, उनकी वीर गाथाओं ने भारत भूमि को गौरवान्वित किया है। मुगल सेना के शक्तिशाली तथा विशालता के पश्चात् भी प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की, उनकी शूरवीरता पर कवि सटीक ही लिखता है-

माई एहडो पूत जण, जेहडो राण प्रताप।

अकबर सूतो ओजके, जाण सिराणै साप।

महाराणा प्रताप उदयसिंह के सबसे ज्येष्ठ पुत्र थे, उनका जन्म अधिकांश विद्वानों की रायानुसार 31 मई 1540 को जैवताकाई, जो पाली के सोनगरा शासक अखैराज की पुत्री थी, के गर्भ से हुआ। उदयसिंह का धीरबाई भटियाणी से उत्पन्न पुत्र जगमाल से विशेष लगाव था, इसलिए शासक घोषित कर दिया गया किन्तु राजपूत सरदारों का प्रताप की योग्यता तथा जेष्ठता को देखते हुए गोगुन्दा में 28.2.1572 यानी 32 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक कर दिया। प्रताप के हृदय में देशप्रेम की भावना कूट-कूट भरी पड़ी थी इसलिए उन्होंने मेवाड़ की आन-बान तथा स्वतंत्रता के लिए प्रयास आरंभ कर दिया, उनका उद्देश्य किसी धर्म अथवा जाति के विरुद्ध नहीं था, अपितु स्वाभिमान का संघर्ष आरंभ किया। इसका उदाहरण स्पष्ट है कि प्रताप के सेनापति एक मुस्लिम हकीम खां सूर थे।

प्रताप के राजतिलक के पश्चात् जगमाल अकबर से जा मिला, मेवाड़ की स्थिति दयनीय थी, अकबर इस अवसर का फायदा लेना चाहता था किन्तु प्रताप ने अपनी सृष्टिबुद्धि से मेवाड़ को संगठित करने का प्रयास किया, भीलों को



संगठित करके शक्ति का विस्तार किया। अकबर ने प्रताप से समझौता करने के लिए सबसे पहले अपने विश्वासपात्र जलालखां कोरजी को भेजा, जून 1573 में मानसिंह तथा बाद में भगवन्तदास आमेर को भेजा, राजा टोडरमल भी प्रताप से मिले किन्तु महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की, वास्तव में प्रताप में समस्त राजपूताने की स्वतंत्रता की भावना प्रज्वलित हो चुकी थी इसलिए भले ही भाई जगमाल मुगलों के पास चले गये थे किन्तु अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हुए, अपनी शक्ति का निरन्तर विस्तार करते रहे, कहा जाता है कि मानसिंह ने जब प्रताप को अकबर की अधीनता स्वीकार करने का परामर्श दिया था, उसके बाद प्रताप ने इस परामर्श को अस्वीकार करते हुए, मानसिंह के साथ खाना खाने के लिए भी राजी नहीं हुए तथा अपने पुत्र अमरसिंह को मानसिंह के साथ खाना खाने के लिए बिठा दिया, इस स्थिति को मानसिंह भलीभांति समझ गया था। बस, युद्ध अवश्यम्भावी था।

प्रताप की ओर ग्वालियर के रामसिंह तंवर, कृष्णदास चूड़ावत, रामदास राठौड़, झाला मानसिंह तथा हकीम खां सूर आदि मुख्य

सेनापति थे, मुगल सेना में मानसिंह के अतिरिक्त गाजीखां, गयासुद्दीन तथा माधवसिंह आदि थे। कैसी विडम्बना है कि मुगल सेना के सेनापति हिन्दू मानसिंह आमेर तो प्रताप की सेना के प्रमुख हकीम खां मुस्लिम थे, वास्तव में एक ओर स्वतंत्रता, तो दूसरी ओर परतंत्रता का युद्ध आरंभ हुआ। श्रावण सुदी सप्तमी सम्वत् 1632 यानी 18 जून, 1576 को हल्दी घाटी का युद्ध लड़ा गया, दोनों पक्षों की सेना की संख्या के बारे में मतभेद है किन्तु अधिकांश विद्वानों के अनुसार मुगलसेना में 5 हजार तथा राजपूत सेना में 3 हजार सैनिक बताये जाते हैं।

प्रताप के पक्ष में भीलों की पैदल सेना अपने तीन कमानों तथा अन्य परम्परागत शस्त्रों के साथ, जिनके मन में मातृभूमि की रक्षा की भावना के साथ साथ प्रताप के प्रति अपार श्रद्धा के साथ बलिदान के लिए हल्दी घाटी के मैदान में थी। भले ही राजपूत सेना मुगलों के समक्ष दुर्बल थी किन्तु उनका साहस, बलिदान की भावना तथा वीरता के कारण मुगलों को भयंकर नुकसान उठाना पड़ा, मानसिंह के घोड़े को घायल कर दिया गया, जिससे मानसिंह पीछे हटता नजर आया, ऐसी स्थिति में मुगल सेना में अकबर के आने की अफवाह फैला दी जिससे मुगल सेना में पुनः जोश भर आया, चेतक जो प्रताप का प्रिय घोड़ा था, वह घायल हो गया हालत को देखकर झाला नरेश ने प्रताप का मुकुट पहन कर, प्रताप

को घेरे से निकल जाने के लिए विवश किया, प्रताप घायल हालत में घेरे से निकल गये, लेकिन झाला नरेश शहीद हो गये, प्रताप का कुछ सैनिक पीछा कर रहे थे, नाला पार करते हुए चेतक की भी सांस टूट गयी, ऐसे में प्रताप का भाई शक्तिसिंह स्थिति को देखते हुए, मुगल सैनिकों का संहार करके अपने भाई प्रताप को अपना घोड़ा तथा तलवार देकर अपने देशद्रोह के कलंक को धो डाला। चेतक की बालिया गांव में एक स्मारक बनाया गया।

हल्दी घाटी युद्ध के पश्चात् भले ही प्रताप थोड़े दुर्बल हो गये थे, किन्तु अपनी सेना का संगठन करते रहे, इसी सैन्य शक्ति के साथ साथ मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए गुरिल्ला युद्ध करते रहे। ऐसी संकट की स्थिति में भामाशाह तथा उसका भाई ताराचंद भारी रकम के साथ प्रताप के पास पहुंचे तथा उन्होंने अपनी सारी रकम मेवाड़ की स्वतंत्रता के हित में प्रताप को भेंट कर दी। महाराणा प्रताप उस राशि से जंगलों में घूमकर शक्ति संगठित करते रहे, अशांत जीवन तथा अव्यवस्था के कारण बच्चे भूखे मर रहे थे। कहा जाता है कि घास पूस की रोटी को भी जंगली बिलाव लेकर भाग गया, लेकिन प्रताप ने अपना ध्येय नहीं छोड़ा, तथा अंत तक स्वतंत्रता के लिए बलिदान देते रहे।

ऐसे शूरवीर, स्वाभिमानी, स्वतंत्रता के पुजारी का 19 जनवरी 1597 को देहान्त हो

गया, मृत्यु के पश्चात् बण्डोली गांव के पास झरने के तट पर उनका अंतिम संस्कार हुआ, जहां उनकी समाधि बनाई गयी है। प्रताप चाहते तो अधीनता स्वीकार कर सकते थे। किन्तु उन्होंने देश प्रेम का मार्ग चुना, स्वाभिमान की अलख जगाई, इसलिए प्रताप का उज्ज्वल चरित्र, देशभक्ति तथा मातृभूमि के प्रति बलिदान, साथ में प्रताप की दृढ़ता, धीरजता, अडिग आत्मविश्वास तथा शूरवीरता का आदर्श विश्व के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। उनका गौरव, त्याग, देश प्रेम, अदम्य उत्साह तथा स्वाधीनता के प्रति लगाव आने वाली पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणा देता रहेगा। इसी कारण से प्रताप देश प्रेमियों के लिए सदैव बन्दनीय तथा स्मरणीय बने रहेंगे। उनके स्वाभिमान के आगे हम आज भी नतमस्तक हैं। आज हमें तथा हमारे शिक्षा जगत में प्रताप के देश प्रेम, स्वाभिमान तथा स्वतंत्रता की भावना से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ी को संस्कारी, चरित्रवान तथा देशप्रेमी बनाया जा सके, विद्यालयों के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं का भरपूर विकास किया जा सके। सटीक कहा है किसी कवि ने—

सदियों में कोई शक्ति बनती है इक मिसाल।
जिस पर करे गरूर कह कहके मां का लाल।

—सेवानिवृत्त व.ले.प., रक्षा लेखा विभाग
मोतीपुरा, नसीराबाद (अजमेर) - 305601
मो. 9214888256

आखर को ढाल लो

□ गोपेश शरण शर्मा 'आतुर'

और आज हों खड़े, व्यर्थ क्यों रहें पड़े।
लोग जब कि विश्व के—काम कर रहे बड़े।

उच्च उठे माथ हों, और युग्म हाथ हों।
ज्ञान के प्रसार को—क्यों न साथ-साथ हों ?

ज्ञान दिया वेद का, प्रेम का, अभेद का।
और मर्म था कहा—सुर—असुर विभेद का।

किन्तु आज हाल क्या ? यह उलटी चाल क्या ?
अनपढ़ का दल बढ़ा, नारी, वृद्ध, बाल का।

हाथ में मशाल लें, साथ तेज चाल लें।
ज्ञान के प्रकाश को, तिमिर बीच डाल लें।



प्रौढ़ को पढ़ा सकें, देश को बढ़ा सकें।
अनपढ़ को उच्च अब, सीढ़ियां चढ़ा सकें।

श्रमिक सभी बात पढ़, कृषक सही बात पढ़।
और भी बनें कुशल, कलाकार कला गढ़।

एक मात पढ़ सके, बहुत बाल बढ़ सकें।
तिमिर को ढकेल कर, प्रगति शिखर चढ़ सकें।

अँगूठा राज्य आज, दीखता त्याज्य आज।
हम उठा सकें क्लम, उँगली सुसाथ आज।

लेखनी संभाल लो, अर्थ को निकाल लो।
व्यर्थ को निकालकर, आखर को ढाल लो।

(श्री शर्मा राष्ट्रीय ख्याति के
ओजस्वी कवि एवं पुरस्कृत शिक्षक हैं।)

—प्लेट नं. 28, लेन नं. 2,
सिविल लाइन्स कॉलोनी, जयपुर
फोन 0141-2225961

बाल मनोविज्ञान

बच्चे अपराधी क्यों बनते हैं

□ मदन लाल पुरोहित

बच्चे अपराधी क्यों बनते हैं? इसका कोई एक कारण नहीं, वरन उनके जीवन से संबंध रखने वाली अनेक बातें हैं जो बच्चों को अपराध की ओर प्रवृत्त करती हैं। बाल अपराधों के लिए समान का वह संपूर्ण ढाँचा ही उत्तरदायी है, जिसमें बच्चों का व्यक्तित्व ढलता है। बाल जीवन में समस्याएँ बढ़ती जा रही हिंसा, क्रूरता, आवागमन एवं नशेबाजी आज एक विश्वव्यापी समस्या बन गई है। बाल-अपराध इस तरह बढ़ रहे हैं कि उनका अनुमान लगाना किसी के लिए भी कठिन नहीं है।

विभिन्न देशों में समय-समय पर बाल-अपराधों के लिए सर्वेक्षण होते रहते हैं, किंतु कहीं भी ऐसा परिवर्तन नहीं दिखाई देता कि कहीं इसमें कमी आई हो। जब बच्चों को अधिक निकट संपर्क में रहने वाले माता-पिता या अभिभावक ही उन्हें नहीं जान पाते कि वे कहाँ जा रहे हैं, क्या कर रहे हैं? तो फिर सरकारें क्या जानेंगी? वह तो गिनी-चुनी घटनाएँ जो प्रकट हो चुकी हैं, उन्हीं तथ्यों का पता लगा पाती हैं।

इसका प्रमुख कारण क्या है? गहराई से पर्यवेक्षण किया जाए तो स्पष्ट पता चलता है कि आज छोटे-छोटे बच्चों के आचार-विचार, रहन-सहन, बोल-चाल, व्यवहार में तरह-तरह की बुराईयाँ घर करती जा रही हैं जो देश की भावी पीढ़ी की पतनोन्मुख दिशा को सूचित करती हैं। गाँव से लेकर शहर के विद्यार्थियों तक में उद्दण्डता, उच्छ्वलता और अनुशासनहीनता आज बिल्कुल सामान्य सी बात हो गई है। हम यदि उनके चरित्र की बात करें तो दिखता है कि वह तो छुटपन से ही अश्लीलताओं, वासनाओं दुर्व्यसनों की दुर्गंध ही उड़ती दिखाई देगी।

अपराधी बालकों ने आज सम्पूर्ण समाज को ही कलंकित करके रख दिया है। न अभिभावकों के प्रति सम्मान और श्रद्धा है, न व्यक्तियों के साथ स्नेह और सहयोग। अध्यापक

और बाजार में बैठे हुए दुकानदार उनके लिए समान महत्त्व रखते हैं। परिपक्व व्यक्ति की मानसिक स्थिति का अनुमान करना आसान होता है। अतः उन्हें दंड से या शिक्षा से भी सुधारा जा सकता है, किंतु बाल-अपराधों का सही कारण ज्ञात करना भी कठिन पड़ता है। ऐसी दशा में समस्या अधिक दुरुह और गंभीर होती चली जाती है। पास-पड़ोस, स्कूल मित्र, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ सहयोग तो देती हैं, किंतु अपराधों का मूल कारण उनके परिवार वालों का रहन-सहन और उनकी आदतें ही होती हैं।

मनोवैज्ञानिक हीली का मत : बच्चे का प्रथम संपर्क माता-पिता से होता है। उसमें



अपराधी प्रवृत्ति का बीज बहुत कुछ उसके गर्भस्थ जीवन में ही जम जाता है, जब माता-पिता अनैतिक जीवन बिताते हैं। एक अध्ययन के अनुसार गर्भकाल में माँ का जैसा जीवनक्रम, मनोभाव होता है, उसकी सूक्ष्म छाप बच्चे पर अवश्य पड़ती है। यही कारण है कि गर्भकाल में जिन स्त्रियों में उत्तेजना, क्रोध के आवेश अधिक आते हैं, उनके बच्चों का स्वभाव भी उत्तेजक क्रोधी बन जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत से बच्चों के अपराधी जीवन के पीछे उनके माँ-बाप का चरित्र मुख्य होता है। कई बार वे अपने अभिभावक, माता-पिता, अध्यापक, साथी

आदि के कठोर व्यवहार के कारण अपराधी बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में दूसरों को तंग करने में, परेशान करने में उन्हें प्रसन्नता होने लगती है। वे अपने से बड़े की आज्ञा का उल्लंघन करके उनकी इच्छा के विरुद्ध आचरण करने में गर्व अनुभव करते हैं।

माता-पिता के पारस्परिक झगड़े, दुर्व्यवहार के कारण भी बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। माँ-बाप का कलहपूर्ण जीवन, चारित्रिक दोष, बच्चों को अपराधी बनाने के प्रमुख कारण हैं। पारिवारिक उथल-पुथल, कलह, दुर्व्यवहार आदि बच्चों के मानस संस्थान पर बुरा प्रभाव डालते हैं और वे गलत मार्ग अपनाते हैं। आज के एकल परिवार की इस

विचारधारा ने भी जीवन को प्रभावित किया है इससे बालक में एकाकीपन, स्वार्थपरता, दूसरों के प्रति समानता, मित्रता एवं अपनेपन की भावना नष्ट एवं शिथिल हो गयी है।

बहुत से बच्चे निराश होकर तब अपराधी बन जाते हैं, जब उनकी अपनी सीमा से बढ़ी हुई महत्वाकांक्षाएँ पूरी नहीं होती। प्यार के स्थान पर बच्चों को फटकारना, स्वयं बच्चों के जीवन में दिलचस्पी न लेकर उसे दूसरों पर छोड़ देना, अभिभावकों द्वारा उनके प्रति मनोरंजन, स्नेह का अभाव होना ऐसी कई बातें हैं, जिनसे वे अपराधी प्रवृत्तियों में लग जाते हैं। घर ही बच्चे की प्रथम पाठशाला है और घर के सदस्यों का व्यवहार ही उसका पाठ्यक्रम है।

परिवार में जैसी प्रेरणाएँ बच्चों को मिलती हैं, वैसा ही बन जाता है। बच्चों को बुराई की ओर प्रवृत्त करने तथा अपराधी जीवन बिताने के लिए बुरे साथी और कई सामाजिक बुराईयाँ भी कम उत्तरदायी नहीं हैं। स्मरण रहे, बच्चों को गड़बड़े में गिराने वाला, पतित करने वाला अपराधी बनाने वाला, सर्वप्रथम बुरा साथ ही

मुख्य होता है। माता-पिता, रिश्तेदार, भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं जो बच्चों को बुराई की ओर प्रवृत्त करते हैं। सबसे पहले बच्चों को बिगाड़ने के लिए घर में ही बुरा साथ मिलता है, उसके बाद फिर पड़ोस स्कूल और घर से बाहर। स्मरण रहे कि कई बुरी आदतों, कामवासना संबंधी बुराइयों का प्रारंभ प्रायः बुरे साथ से ही होता है।

अभिभावकों को इतना तक ध्यान नहीं रहता कि उनके बच्चे किनके साथ उठ-बैठ रहे हैं, किनके साथ खेलते हैं। कितना भी होनहार बालक क्यों न हो, बुरे संग में पड़कर वह भी पतित हो जाता है। बच्चों का ग्रहणशील किंतु विवेकहीन मस्तिष्क शीघ्र ही बुराइयों की ओर आकर्षित हो जाता है।

बच्चों को बिगाड़ने में कई सामाजिक बुराइयों का भी काफी महत्व होता है। इनमें टी.वी., इन्टरनेट, दूषित अश्लील साहित्य, मोबाइल फोन, सिनेमा बाल अपराध का एक बहुत बड़ा कारण है। यह सभी साधन काम, प्रेम, अश्लील, अर्द्धनग्न, भड़कीली वेशभूषा, हाव-भाव को दिखाते हैं किन्तु बाल मानस पर पड़ने वाले प्रभाव का ना इन्हे पता है और न ही सरकार इसके लिए कुछ कर रही है। किसी भी राष्ट्र के लिए यह आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति नहीं, बल्कि आने वाले कल के लिए भावी पीढ़ी को विनाश की ओर ले जाने का कार्य चल रहा है। यह ठीक नहीं।

आज समाज का विकृत दृष्टिकोण भी इसके लिए पूर्णतः जिम्मेदार है। आज कोई बच्चा तनिक-सी गलती कर बैठे तो फिर उसे बुरा मान लिया जाता है, उसके प्रति बुरी धारणा बना ली जाती है और बात-बात में उसे अपमानित किया जाता है, इससे भी बहुत से बच्चे अपराधी जीवन की ओर प्रेरित हो जाते हैं। भूल करना मनुष्य का जन्मजात स्वभाव है। प्रारंभ में की गई गलतियों को भुलाकर बच्चों के प्रति सौम्य व्यवहार रखने पर वे सुधर सकते हैं। वस्तुतः छोटी अपरिपक्व उम्र में बच्चे में चतुरता, संवेदनशीलता एवं ग्रहणशीलता इतनी अधिक होती है कि वह जो कुछ अपने आस-पास घटते देखता है वैसा ही वह स्वयं करने की चेष्टा करता है।

कभी-कभी आरंभ में वैसी रुचि भले ही प्रदर्शित न करे, तो भी उसके अंतर्मन में वैसी

ग्रंथि बन जाती है जो अवस्था के साथ विकसित होकर स्वभाव में परिवर्तित हो जाती है। अपने घर का वातावरण और बालक के प्रति व्यवहार यदि ठीक कर लिया जाए तो बालक को 90 प्रतिशत तक अपराधी प्रवृत्ति से बचाया जा सकता है।

इस में शिक्षण संस्थाओं का दायित्व भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, बहुत सी शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों के गलत आचरण के कारण भी बच्चों में बुराइयाँ पैदा हो जाती है। जो अध्यापक बच्चों के समक्ष धूम्रपान करते हैं, या कोई अन्य नशा करते हैं, अपने मित्रों के साथ गपशप और अश्लील बातचीत करते हैं, उनसे बच्चे क्या सीख सकते हैं? इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने शिक्षकों की नकल करके बच्चे भी वैसा ही करने का प्रयत्न करने लगते हैं। यह सर्वमान्य है।

बहुत से अध्यापक बच्चे की किसी शारीरिक या मानसिक कमजोरी को लेकर उसे तिरस्कृत करते हैं। परिणाम यह होता है कि बालक के मन में एक तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है और वह कई गलत कार्यों, बुराइयों में फूट निकलती है। बच्चा स्कूल में केवल शिक्षा ही प्राप्त नहीं करता, वरन् उस चरित्र और आदर्श को भी ग्रहण करता है जो अध्यापकों और अपने सहपाठियों के जीवन से उसे मिलती है। यही कारण है कि बहुत से बच्चे जो प्रारंभ में बहुत अच्छे भले होते हैं, स्कूल-कॉलेजों में जाने के बाद बिगड़ जाते हैं।

माता-पिता अपने उत्तरदायित्वों का समुचित निर्वाह नहीं करते, उन्हें संस्कार नहीं दे सकते, उन्हें अच्छा समाज नहीं दे सकते, उन्हें एक अच्छे नागरिक बनने की सीख नहीं दे सकते शिक्षक उन्हें अच्छा शिक्षार्थी नहीं बना सकते तो इस समस्या को कहा लेकर जायें और क्यों किसी राष्ट्र के लिए यह आशा करें कि आने वाली भावी पीढ़ी हमें परिष्कृत मिलेगी। यदि ऐसा चाहते हैं तो आईये एक प्रतिज्ञा लें कि माता-पिता, परिवार, समाज, विज्ञान, विद्यालय एवं समस्त राष्ट्र निम्न कर्तव्यों का निर्वाह करें:-

- बच्चों में चरित्र का विकास करें। चरित्र की दृढ़ता सफल जीवन की बुनियाद होती है।
- बच्चों में महानता के बीज बोएँ। चरित्र की

ऊंचाई ही महानता है।

- बच्चों में ज्ञान वृद्धि करें। ज्ञान से बड़ा कुछ नहीं है।
- बच्चों को आत्मनिर्भर बनाएँ। इससे आत्मविश्वास बढ़ेगा।
- बच्चों को क्रियाशील रखें। यह स्वस्थ जीवन का आधार है।
- बच्चों में सद्गुणों का विकास करें। वे गुणग्राही बनें।
- बच्चों को व्रतशील बनाएँ।
- बच्चों के जीवन को नियमित बनाएँ। यह आवश्यक है।
- बच्चों को निर्भीक और साहसी बनाएँ।
- बच्चों के समक्ष अपना आदर्श उपस्थित करें। स्वयं के उदाहरण से बड़ा कुछ नहीं।
- बच्चों के जीवन में नियमितता बनाएँ।
- बच्चों को समस्याओं स्वयं सुलझाने दें।
- घरेलू वातावरण को पवित्र रखें।
- निंदा नहीं, प्रशंसा करें। परनिंदा करना बहुत बड़ा दोष है।
- हीनता की भावना न भरें।
- अनुचित आदतें पनपने न दें।
- बुरी संगत से दूर रखें। यह अवनति का मार्ग है।
- आज्ञा पालन की शिक्षा दें।
- बच्चों को पीटें नहीं। मारपीट स्थाई समाधान नहीं है।
- सहयोग और मित्रता की भावना पैदा करें। ये विकास मार्ग के साधक हैं।

इस प्रकार जन्म से कोई भी बालक अपराधी प्रवृत्ति का नहीं होता। बच्चे की मूल भावनाओं में पवित्र और अपवित्र होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। सामाजिक, पारिवारिक परिस्थितियों को देखकर ही उसकी मनःस्थिति विनिर्मित होती चली जाती है। अतः बच्चों को केवल खिलाने-पिलाने या शिक्षा दिलाने में ही अभिभावकों को अपना कर्तव्य पूरा न समझकर उन्हें समस्त कुटिलताओं से भी बचाए रखना चाहिए। जन्म देने वाले जितने सुसभ्य एवं सुसंस्कृत होंगे, संतानें भी उसी साए में ढलती चली जाएगी।

—प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि., फतेहपुर,
त. संगरिया (हनुमानगढ़)
मो. 9460688160

बुद्ध पूर्णिमा विशेष गौतम बुद्ध की शिक्षाएं और हम

□ उमाशंकर किराड़

भ गवान तथागत गौतम बुद्ध के चिन्तन एवं शिक्षाओं पर विचार करना अत्यन्त सुखदायी एवं फलदायक है। इतिहास की ओर झलक डालें तो हम पाते हैं कि 563 ई. पू. बैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम शुद्धोदन और माँ का नाम महामाया था। शुद्धोदन कपिल वस्तु के शासक थे। विवाह के पश्चात् काफी समय उपरान्त बुद्ध का जन्म हुआ था। उनका जन्म का नाम सिद्धार्थ था। उनका गौत्र गौतम होने के कारण उन्हें सिद्धार्थ गौतम के नाम से जाना गया। कहते हैं कि एक रात में महारानी महामाया को स्वप्न आया था। स्वप्न में उसे सुमेघ नाम का एक बोधिसत्त्व आकर कहता है कि उसने पृथ्वी पर जन्म धारण करने का निश्चय किया है और क्या महामाया उसकी माँ बनने को तैयार है। स्वप्न में ही महामाया ने अपनी प्रसन्नता पूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

महारानी महामाया ने स्वप्न की बात अपने पति महाराजा शुद्धोदन को बताई। जैसा कि राजा महाराजा करते हैं, पंडितों को स्वप्न का वृत्तान्त बताकर उसका अर्थ बताने के लिए कहा गया। पंडितजन ने गहन विचार करके घोषित किया कि स्वप्न सर्वथा सत्य होगा। उनके घर में पुत्र का जन्म होगा और यदि वह घर बसायेगा तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा तथा यदि संन्यासी बना तो संसार से अंधकार मिटाने वाला भगवान बनेगा। पंडितों की यह भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई और राजकुमार सिद्धार्थ भगवान बुद्ध के रूप में प्रसिद्ध हुए।

भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य आनन्द ने एक बार उदास होकर उनसे कहा, “भगवन! इस संसार का क्या होगा? यहाँ लोग छल, कपट, बेईमानी, राग, द्वेष न जाने क्या-क्या बुरे भाव रखते हुए काम कर रहे हैं।” तथागत ने मुस्कराते हुए आनन्द से जो कहा वह अद्भुत है। उन्होंने कहा, ‘अप्प दीपो भवः’ अर्थात् अपने दीपक स्वयं बनो। इसका आशय यह है कि हम अपना परिष्कार करें। दूसरे क्या कर रहे हैं अथवा उन्हें



क्या करना चाहिए, यह काम आपका नहीं है। दूसरे ठीक काम करें, छल-कपट मुक्त हों। यह बात ठीक है लेकिन आप तो अपनी देखिए। अपना सुधार जगत की सबसे बड़ी सेवा है। इसे यों समझ सकते हैं। व्यक्तियों के समूह की सबसे छोटी इकाई एक व्यक्ति है। इन सभी व्यक्तियों का योग वह समूह है। अंग्रेजी शब्द I (मैं) We (हम) पर विचार करें। We यदि समूह है तो I एक व्यक्ति अर्थात् सबसे छोटी इकाई है। समस्त I को जोड़ने पर परिणाम We आएगा। I+I+I+I = We. अब यदि प्रत्येक I का परिष्कार हो जाए तो We का स्वतः ही सुधार हो जाएगा। बुद्ध का अप्प दीपो भवः का यह संदेश आज के समय में बहुत ही सार्थक है। हम पड़ौसी के बारे में कई तरह की टिप्पणियां कर देते हैं मगर स्वयं को नहीं संभालते। अतः पहले स्वयं को सुधारना आवश्यक है।

बुद्ध ने संसार में निवास कर रहे व्यक्तियों को भी चार श्रेणियों में बाँट कर समझाया है जो इस प्रकार हैं—

- प्रथम श्रेणी में वे व्यक्ति शुमार किए जाने चाहिए जिनके जीवन में अंधकार ही अंधकार है।

- द्वितीय श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जिनके जीवन में अभी तो प्रकाश है मगर जो अंधकार की ओर बढ़ रहे हैं।
- तृतीय श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा गया है जिनके जीवन में वर्तमान में अंधकार है लेकिन भीतर के ज्ञान के बल पर प्रकाश की ओर बढ़ रहे हैं।
- चतुर्थ श्रेणी में वे व्यक्ति हैं जिन्हें जीवन में वर्तमान में तो प्रकाश ही प्रकाश है और जाग्रत प्रज्ञा के कारण वे उजास की ओर सतत अग्रसर है।

ये श्रेणियां बहुत सार्थक हैं। आप दृष्टिपात करके देख लीजिए। संसार में जितने भी व्यक्ति हैं, वे सब उपरोक्त में से किसी न किसी श्रेणी में अवश्य आते हैं। प्रथम कोटि के व्यक्तियों को अपनी वर्तमान स्थिति का दोष किसी अन्य व्यक्ति को न देकर अपना कर्मफल मानते हुए भावी सुधार हेतु काम करना चाहिए। दूसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जिनके जीवन में अभी साधन प्रचुर मात्रा में हैं। पद, पावर, पैसा, प्रतिष्ठा सब हैं लेकिन भीतरी प्रज्ञा के अभाव में बुरे काम कर रहे हैं जो उन्हें अंधकार की ओर धकेलने वाला है। तीसरी श्रेणी अभी साधन विहीन है मगर अम्बर के प्रकाश के बल पर सद्कर्म करते हुए प्रकाशोन्मुख हो रहे हैं। चौथा वर्ग सर्वोत्तम है जिसमें व्यक्ति के पास प्रचुर साधन है। संक्षेप में कहें तो परमात्मा की पूर्ण कृपा है। इसके साथ ही वे अपनी प्रज्ञा के बल पर सबका भला करने में तत्पर हैं। उनके जीवन का मंगल उद्देश्य सर्वजन हिताय—सर्वजन सुखाय है। बुद्ध कहते हैं कि हमें प्रथम व द्वितीय प्रकार से बचकर तृतीय एवं चतुर्थ प्रकार का इंसान बनने का यत्न करना चाहिए। बुद्ध की शिक्षाएं विश्व में शांति, सहिष्णुता, स्नेह, सहयोग, समन्वय की धारा प्रवाहित कर सकती है।

—सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर
मो. 9413726918

ग्रीष्मावकाश : विद्यार्थी और हम

सम्पूर्ण साक्षरता अभियान में करें सहयोग



पिछले दिनों एक अखबार में 'घर में कक्षा : काम वाली छात्रा' शीर्षक से एक आलेख पढ़ने में आया। (संदर्भ-मधुरिमा, 9 अप्रैल 2014 पृ. सं. 4) इसमें कणि

नाम की लड़की गीता के घर नौकरानी का काम करती होती है। कणि पढ़ी लिखी नहीं है जैसा कि आमतौर से काम करने वाली बाईयां होती है। गृहस्वामिनी गीता संवेदनशील हैं। वह कणि के घर की नौकरानी होने के साथ उसके प्रति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समझती है। कणि के द्वारा घर का काम पूरा कर लेने के बाद शुरू होती है स्कूल-घर में कक्षा और काम वाली बाई कणि छात्रा। शिक्षक के रूप में होती है गृह स्वामिनी गीता। कणि की पढ़ाई जारी है और उम्मीद की जानी चाहिए कि गीता बहन जी अपने शुभ संकल्प में अवश्य उत्तीर्ण होगी।

इस दृष्टान्त के माध्यम से मैं कहना चाहता हूँ कि ग्रीष्मावकाश के दौरान माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के छात्र-छात्राएं अपने निवास स्थान के पास निरक्षर स्त्री-पुरुषों को चिह्नित कर उन्हें आखर ज्ञान दे सकते हैं। केरल का उदाहरण हमारे सामने है जहाँ एक पढ़ाए एक (Each one Teach one) अवधारणा ने व्यापक रूप लिया और केरल भारत का पहला सम्पूर्ण साक्षर राज्य बन सका। ग्रीष्मावकाश में हमारे छात्र-छात्राओं को सम्पूर्ण साक्षरता यज्ञ में यह आहूति देनी चाहिए। इन दिनों राजस्थान में साक्षर भारत कार्यक्रम चल रहा है। अतः जिलों में जिला परिषद् एवं साक्षरता एवं सतत शिक्षा अधिकारी कार्यालयों से इस कार्य में मदद भी मिल सकती है। ऐसा करने से ग्रीष्मावकाश अवकाश के साथ-साथ एक उत्सव बन जाएगा जिसके आदि और अन्त में सर्वत्र खुशियां दिखाई देगी मगर इसके लिए माहौल बनाकर आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाने का काम तो हम अभिभावकों को ही करना होगा। हम स्वयं भी गीता की तरह बनें ताकि अपने बच्चों के लिए अनुकरणीय भी बन सकें।

—करणीदान कच्छावा

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
जि.शि.अ. (प्रा.शि.), बीकानेर
मो. 9214633947

अवकाश का नाम सुनते ही बच्चों का मन मयूर नाचने लगता है। और इसमें भी अवकाश की मात्रा बढ़ने, यथा एक दिन का अवकाश, दो दिन अवकाश, तीन दिन अवकाश, के साथ-साथ उनकी यह बंदुकी बढ़ती चली जाती है। अब तो ग्रीष्मावकाश शुरू हो रहा है यानी अवकाश नहीं मंदा अवकाश। इस अवधि में बच्चे और हम क्या करें कि अवकाश महज टाइमपास न होकर कुछ अधिगम का जरिया बन जाए। यहाँ हम को आक्षेप अभिभावक, शिक्षक समाज, स्कूल, शासन आदि सब को है। यहाँ प्रस्तुत है कुछ महानुभावों के विचार।

—वकिठ सम्पादक

व्याकरण ज्ञान प्राप्त करें विद्यार्थी



मैं अंग्रेजी का अध्यापक हूँ। भाषा का अध्यापक होने के कारण मुझे हिन्दी सहित अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषाओं के बारे में

भी विद्यार्थियों के रुझान का अहसास है। मैंने यह देखा है कि बच्चे गणित, विज्ञान और अंग्रेजी के अधिगम पर ज्यादा जोर देते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी व वेद भाषा संस्कृत तो वरीयता में जैसे नीचे से पहले-दूसरे पायदान पर मिलती है। इसमें भी पाठ पढ़ना तथा परीक्षा प्रश्न पत्र के अनुसार तैयारी कर अंक हासिल करने की जुगाड़ में रहते हैं। गहन अध्ययन कम ही छात्र करते हैं। इतना ही नहीं, भाषाओं के ग्रामर पक्ष को तो वे जैसे टच ही नहीं करते। हिन्दी व संस्कृत में व्याकरण की पुस्तक अलबता तो वे खरीदते नहीं और यदि खरीदते हैं तो सबसे कम वार खुलने का रिकार्ड उन्हीं के नाम रहता है। सत्र पूरा हो जाने के बाद भी व्याकरण की पुस्तक नुईनकोर पड़ी रहती है।

मैंने मनोवैज्ञानिक तरीके से इसका कारण जानना चाहा। यह बात नहीं है कि बच्चे व्याकरण सीखना नहीं चाहते। दरअसल उन पर अन्य विषयों का इतना दबाव रहता है कि व्याकरण पर जब तब कोई अन्य विषय कब्जा करता दिखाई देता है।

ग्रीष्मावकाश में विद्यार्थियों (खासकर कक्षा 9 से 12) को चाहिए कि वे नई कापी लगाकर व्याकरण अधिगम करें। वे घर में श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्भगवद्गीता जैसे ग्रंथों का अध्ययन करें। ये धार्मिक ग्रंथ होने के साथ-

साथ भाषा व व्याकरण सिखाने वाले अद्भुत वाहन है। अतः इन्हें भाषा, भाव, प्रवाह एवं व्याकरण की दृष्टि से पढ़ा जाना चाहिए। ग्रीष्मावकाश में बस प्रतिदिन डेढ़-दो घण्टे का समय इस कार्य को दे दीजिए। देखिए, आपकी व्याकरण ठीक होती है या नहीं। शेष समय आप अवकाश-आनन्द मनाइये।

—शैलेन्द्र कुमार पाण्डे, शिक्षक

रा.उ.प्रा.वि. मेघवालों की ढाणी, बंधड़ा (नोखा)

मो. 9269239612

देशाटन करें विद्यार्थी



यों तो यह सारा जीवन ही एक स्कूल एवं परीक्षा है। यहाँ हर कदम पर कुछ सीखने को पड़ा है तो हर कदम पर कोई परीक्षा मुँह

बाए खड़ी है। सत्र भर पढ़ाई के बाद परीक्षा देकर बच्चे एकबारगी तो निश्चित हो गए हैं। ग्रीष्मावकाश शुरू होने को है। डेढ़ माह का समय कोई कम नहीं होता। यह कालखण्ड 1080 घण्टे और 64800 मिनट लिए हैं। इस समय को सर्जन/सृजन कार्यों में लगाकर इसका दीर्घकालीन निवेश करना चाहिए। ग्रीष्मावकाश के दौरान अभिभावकों को चाहिए कि वे देश-प्रदेश के विभिन्न दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का कार्यक्रम बनाकर बच्चों को घूमने ले जाए। इसके लिए उन स्थानों के बारे में उनके विद्यमान ज्ञान की चर्चा करते हुए नई जानकारी के लिए जिज्ञासा पैदा करें।

यात्रा की शुरुआत से लेकर अन्त तक प्रत्येक दृश्य एवं स्थान के बारे में नोट अपनी

डायरी में लिखने के लिए उन्हें कहें। सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की सैर के दौरान उनके इतिहास को जानने की उनकी इच्छा व जिज्ञासा को बलवती बनाए। अच्छा होगा कि बच्चों को समूह में ऐसे भ्रमण कराएं क्योंकि समूह में प्रतियोगी भावना तथा परस्पर वार्तालाप के कारण उनका सीखना अधिक कारगर सिद्ध होता है। एक स्थान की यात्रा पूर्ण पर अगले प्रस्थान से पूर्व बच्चों को किए गए यात्रा वृत्तान्त को एक निबन्ध के रूप में लिखने के लिए कहें। यात्रा पूर्ण करने के पश्चात इन निबन्धों को किसी शिक्षक को दिखाकर बच्चों का मार्गदर्शन करवाया जाना चाहिए। इस प्रकार बच्चे पृथ्वी के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

—राम वचन राम, अध्यापक
रा.उ.प्रा.विद्यालय, माण्डेलिया (नोखा)
मो. 9950404212

घर के कार्यों में सहभागी बनें



ग्रीष्मावकाश का आगाज होने वाला है। पूरे डेढ़ माह का समय होगा। यह अवधि बालिकाओं के लिए उपयोगी बनाए जाने के लिए अभी से सोचा जाना चाहिए। कक्षा 9वीं से 12वीं की बालिकाएं इस अवधि में अपनी माँ, चाची, ताथी, भाभी, बड़ी बहन से पाक कला, वस्त्र कला, सिलाई, कताई, बुनाई सीख सकती हैं। आजकल की पढ़ाई इतनी जटिल हो गयी है कि गृह कार्य पूरा करने, टेस्टों व परीक्षा की तैयारी करने तथा अन्य कार्यों को पूर्ण करने में ही सारा समय लग जाता है। अतः अवकाश के इन दिनों में बालिकाओं को गृह कार्यों में अपनी माँ की भरपूर मदद करते हुए उपरोक्त वर्णित कार्य सीखने चाहिए।

जो लोग बाहर घूमने फिरने न जा सके, वे अपने आसपास के दर्शनीय व धार्मिक स्थलों पर जा सकते हैं। ऐसा करके वे अपने ग्रीष्मावकाश को सृजनशील बनाने के साथ ही परिवार के कार्यों में मदद करके माँ के आशीर्वाद की भागीदार भी बनेंगी। भारतीय संस्कृति में 'कर्ममेव जयते' का घोष किया गया है। अतः हमें ग्रीष्मावकाश के दौरान बालिकाओं को विभिन्न कार्यों में दक्ष बनाना चाहिए।

—किरण व्यास, अध्यापिका
रा.प्रा.वि. सांगड़ (जैसलमेर)
मो. 9252596557

सामाजिक सरोकार सीखें बालक



एक समय था जब बच्चे अपनी ननिहाल सहित मासी, भूवा, चाची, ताथी के घरों में रहकर संबंधों को तरोताजा करते थे। आज की भागमभाग जिन्दगी में व्यक्ति के पास इतना समय और व्यवस्था नहीं है कि वह पारिवारिक रिश्तों को स्मरण करते हुए उन्हें निभा सके। यहाँ तक कि माँ-बाप का भी सम्पूर्ण साया तक उन्हें नहीं मिलता। कारण नामचीन स्कूलों में पढ़ने के चक्कर में होस्टल में जो रहना पड़ता है उन्हें।

पहले के जमाने में बच्चे वर्ष में 2-3 बार ननिहाल अवश्य जाते थे। अफसोस है कि व्यक्ति देश-दुनिया के ज्ञान प्राप्ति की भाग-दौड़ में स्वयं को भूलता जा रहा है। इसलिए ग्रीष्मावकाश में अभिभावकों के रूप में हमारा दायित्व बनता है कि हम बच्चों को इन आत्मीय परिवारजन के बीच छोड़ें। बच्चे नाना-नानी और दादा-दादी के पास आज भी हर्ष से रहना पसन्द करते हैं। चाहे कितना ही टी.वी. आ गया हो, फिर भी 'नानी कहो कहानी' बच्चों के लिए आज भी गुदगुदी पैदा करने वाला अनुभव होता है। ग्रीष्मावकाश में बच्चों को थोड़े-थोड़े समय के लिए इन नजदीकी रिश्तेदारों के यहाँ भेजा जाना चाहिए। इससे उनके मन में सामाजिक संस्कारों एवं रिश्तों की महिमा एवं गरिमा बढ़ेगी तथा मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक संस्कारों रूपी अमूल्य दौलत का अगली पीढ़ी को होने वाले स्वाभाविक अदृश्य हस्तान्तरण व्यवस्था की पुर्नस्थापना भी संभव हो सकेगी।

एकल परिवारों के कारण बच्चे सामाजिक मर्यादाओं एवं महत्व को पूरी तरह समझ नहीं पाते। ऐसा करने से वे अधिक सामाजिक होकर अपने सामाजिक उत्तरदायित्व की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। मेरी सोच है कि हमें बच्चों को नाना-नानी, दादा-दादी के पास भेजकर इस ग्रीष्मावकाश अवधि का उपयोग सामाजिक मूल्यों एवं संस्कारों के व्यावहारिक प्रशिक्षण (social internship) के रूप में करना चाहिये।

—हरिराम वर्मा, निजी सचिव
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर
मो. 9783663843

सृजनपथ पर बढ़ें बालक



ग्रीष्मावकाश 2014 का आगाज होने वाला है। पूरे डेढ़ माह का समय हाथ में होगा। यह समय आराम के साथ सृजन का समय है। कुछ सीखना-कुछ आगे बढ़ना-कुछ कमियों को ठीक करने का समय है ग्रीष्मावकाश। इस अवधि में विभिन्न विषयों पर कई कक्षाएं लगेगी यथा सुलेख, स्पोकन इंग्लिश, चित्रकला व पेंटिंग कक्षाएं, एंकरिंग, फोटोग्राफी, व्यंजन/पकवान, नृत्य, संगीत व गायन, मार्शल आर्ट, कम्प्यूटर जागरूकता कार्यशाला, वैदिक गणित, मॉडल रॉकेटरी व एयरो मॉडलिंग कार्यशालाएं, चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या, खेलों में भागीदारी आदि। इनमें सहभागी बनने से निश्चय ही विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ेगा।

इतना ही नहीं स्काउटिंग के शिविरों, स्वास्थ्य जाँच, ब्लड ग्रुप जानना, मानचित्रों का ज्ञान, जीवाश्मों का अध्ययन, पक्षी अवलोकन आदि कार्य भी ग्रीष्मावकाश में किए जा सकते हैं। इन कार्यों में भागीदारी से बच्चों की कार्यक्षमता व आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा तर्क शक्ति का विकास होगा। ये कार्य मानसिक तनाव को मिटाकर प्रफुल्लता बढ़ाने वाले हैं।

—मोहम्मद फारूक चौहान

जगमन कुआं रोड, कसाई बारी के भीतर, बीकानेर
मो. 9414430077



ग्रीष्मावकाश का समय आराम के साथ कुछ सीखने और सीखे हुए को सुदृढ़ बनाने का समय है। सत्रपर्यन्त पढ़ाई की थकावट को मिटा कर नए सत्र के लिए एक ऊर्जा और ताकत इस अवधि में स्वाध्याय और अपनी हॉबीज को नई उड़ान देकर प्राप्त की जानी चाहिए। बालक-बालिकाओं को अपने परिवेश, घर-परिवार और साथी-संगियों के साथ बैठकर नई-नई कलाएं सीखते हुए सांस्कृतिक पथ को भी इस अवधि में मजबूत करना चाहिए। इससे अवकाश महज अवकाश न रह कर अपनी योग्यता में अभिवृद्धि करने का एक बड़ा मंच बन जाएगा।

—सीमा चौहान, प्रधानाध्यापिका
रा.बा.मा.विद्यालय, ब्रह्मपुरी, जयपुर
मो. 9461617966

ह मारी संस्कृति में पौराणिक काल से लेकर आज तक गुरु शिष्य परम्परा का विश्वसनीय सम्बन्ध रहा है। गुरु शिष्य को पुत्रवत् मान कर स्नेह देता आया है और शिष्य गुरु को पिता तुल्य पूज्य एवं आदरणीय समझता आ रहा है। इसी कथन की पुष्टि के समर्थन में इतिहासकार मुखर्जी ने कहा है कि “इसी घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण प्राणवान वैयक्तिक सम्पर्कों के सहारे ही भारत में शिक्षा की प्रक्रिया सम्पन्न होती थी।” इसी सन्दर्भ में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रोफेसर, हुमायूँ, कबीर, प्रसिद्ध शिक्षाविद श्री शंभूदादा के अलावा गोपाल प्रसाद मुदगल आदि ने भी नैतिक मूल्यों के साथ एक स्वर में इस आदर्श सम्बन्ध को उजागर किया है जो गुरु शिष्य की मैत्रीपूर्ण संबंधों की साक्षी देते हैं।

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि माना गया है। यहां ‘गुरु’ को ‘तमसो मा ज्योतिर्गमय’ का सन्देश वाहक ही नहीं बल्कि ज्ञान रूपी आलोक में प्रज्वलित दीपक माना है। वहीं शिष्य को उस दीपक के प्रकाश में चमकने वाला एक माध्यम माना है। गुरु ही हमें ईश्वर के दर्शन कराता है, तभी संत कबीर ने गुरु की महत्ता ईश्वर से भी बढ़कर प्रतिपादित की है। उनके शब्दों में—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपको, गोविन्द दियो बताय॥

गुरु आदर्श पंक्ति का धनी है। हमारे यहां पर संदीपनि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, द्रोणाचार्य, चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास, दंडी बिरजानंद जैसे गुरु हुए जिन्होंने अपनी मेहनत, ईमानदारी एवं सच्ची लगन से आरुणि एवं एकलव्य जैसे समर्थ शिष्य खड़े किये, जिन्होंने अपने अलौकिक कृत्यों से असंभव को संभव बनाया और समाज पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ दी जिन्हें आदर्श शिष्य बनने का सौभाग्य मिला। वस्तुतः एक सुयोग्य शिक्षक ही संस्कारयुक्त आदर्श शिष्यों का दल खड़ा कर सकता है।

हमारे अनेक मनीषियों, सन्तों एवं प्रबुद्ध कविजनों ने सिद्ध मन पर उपदेश के बल आत्मोद्धार द्वारा अपनी जमात मंडली को ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों, शिष्यों हेतु समय-समय पर नीति परक सुन्दर पदों की रचना कर उन्हें नैतिक शिक्षा शाश्वत सीख देते हुए उनके आदर्श लक्षणों को अपने काव्य में उजागर किया है जो बड़े सारगर्भित बन पड़े हैं। शिक्षा जगत में यह काव्य अनमोल निधि है। इन अमूल्य सृक्तियों में विद्यार्थियों की आकांक्षाओं, संवेदनाओं और विशेषताओं का सोद्देश्य तरीके से समावेश हुआ है।

प्रासंगिक तौर पर शिष्यों के जीवन से सम्बन्धित कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना सार्थक होगा। गुरु शिष्य परम्परा की अनुशासित सार्थकता के सन्दर्भ में गुरु को दायित्व एवं कर्तव्य की कसौटी पर

शिष्य तो ऐसा चाहिए

नीतिकारों की दृष्टि में एक आदर्श शिष्य

□ संग्राम सिंह सोढा

खरा उतरने के लिए कहा गया है—

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।

अन्तर हाथ सहाय दे, बाहर मारे चोट॥

अर्थात् गुरु तो कुम्हार है और शिष्य कुंभ है। गुरु खोट अर्थात् बुराइयों को दूर कर अच्छाइयों को उभार कर बाहर से चाहे चोट लगाये, भीतर से कर उसे सुन्दर घड़े की शक्ति देता है।

गुरु प्राप्ति की लालसा हेतु एक भावुक नीतिकार ने पराकाष्ठा की सीमा लांघ कर बड़े सरल शब्दों में एक शिष्य को अपना सिर कटवाने की हिदायत देना। गुरुत्व की महिमा से मंडित यह कथन अनुकरणीय है—

यह तन विस की बेलरी, गुरु अमृत की खान।

शीश कटाये गुरु मिले, तो भी सस्ती जान॥

एक आदर्श विद्यार्थी के पांचों लक्षणों के स्वरूप को एक श्लोक के द्वारा इस रूप में व्यक्त किया गया है—

काक चेष्टा वकव्यापी, स्वल्पनिद्रस्तथैवे च।

अल्हारी गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षण॥

संत कबीर ने अपने समय के अधूरे एवं पाखंडी गुरुओं की आलोचना के साथ लोभी गुरुओं से छुटकारा पाने हेतु वकालत करते हुए कहते हैं कि—

कबीरा पूरे गुरु बिना, पूरा शिव न होय।

गुरु लोभी शिष्य लालची, दूनी दाढ़न होय॥

जो गुरु शिष्यों से आस रखते हैं। शिष्यों पर निर्भर रहते हैं। उनका समाज में सम्मान कम होता है। इस प्रसंग को कबीर यों व्यक्त करते हैं—

गुरु तो सस्ता भया, पैसा करे पचास।

राम नाम को बेचि के, करे शिष्य की आस॥

महात्मा कबीर ने गुरु तथा शिष्य दोनों के लिए बहुत ऊंचा आदर्श स्थापित किया। उन्होंने कहा कि शिष्य को चाहिए कि अपना सब कुछ गुरु को अर्पण कर दे अर्थात् सब कुछ गुरु का समझ कर इस्तेमाल करे, परन्तु गुरु को भी चाहिए कि शिष्य की सुई तक को भी हाथ न लगाये—

शिष्य तो ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।

गुरु तो ऐसा चाहिए, शिष्य से कुछ न लेय॥

इसी भांति कवि देवीदान शामल ने ‘स्वधर्म निष्ठादर्श बापनी’ में एक आदर्श विद्यार्थी को उनके धर्म के बारे में बताते हुए उनके उत्तम गुणों की ओर इंगित किया है। जो दृष्टव्य है—

मन वचन क्रम दृढ प्रेम सो, करत सेव सुखदाय।

गुरु अनुशासन शिर धरे, छल सो रहित सदाय॥

अगर शिक्षक सहज विसर्जन भाव से रहित है तो वह अपने शिष्यों को कुछ नहीं बांट पायेगा। वह स्वयं उत्तम गुण की पात्रता से दूर हो जाएगा। फिर शिष्यों में सीखने की विशेष प्रवीणता कहां आएगी। आज की शिक्षण स्थिति के सन्दर्भ में जयशंकर प्रसाद ने सही लिखा है। उनके शब्दों में—

ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न हो,

क्यों इच्छा पूरी हो मन की।

एक दूसरे से न मिल सकें,

यह विडंबना है जीवन की॥

आदर्श शिष्य वह है जो गुरु की कथनी के अनुरूप सद्गुणों को ग्रहण करें। गुरु के प्रति असीम श्रद्धा और अटूट विश्वास रखते हुए उनकी आशा के मुताबिक शिक्षण का लाभ उठाकर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करें क्योंकि सुयोग्य गुरु के सान्निध्य में जो दृष्टिकोण मिलता है, जो जीवन दर्शन मिलता है वह अप्रतिम, अमूल्य और प्रभावी होता है। इसलिए शिष्य को चाहिए कि वह हमेशा गुरु की साधना-सेवा में रहते हुए शारीरिक एवं मानसिक कष्ट से झेलकर भी तत्त्वज्ञानी बनने हेतु सदैव तत्पर रहे ताकि वर्तमान समय में गुरु शिष्य के सम्बन्धों के गिरते स्वरूप को पुनः नैतिक मूल्यों के बल स्थापित कर पूर्व की पावन परम्परा को कायम किया जा सके।

गुरु और शिष्य के सम्बन्ध के सन्दर्भ में अतीत और वर्तमान की तुलना करने पर जो विदित होता है। वह उनके स्वरूप में दिन-रात का अंतर नजर आता है। इस अन्तर को कम करने के लिए गुरु और शिष्य के बीच आशावान दृष्टिकोण के माध्यम से सुखद और उपादेय सामंजस्य स्थापित करने के अलावा हमारी शिक्षा की आन्तरिक अनिवार्यता के स्वरूप पर पुनः चिंतन कर संशोधन किया जा सकता है। आज राष्ट्र के भावी कर्णधार बालकों के स्वरूप को निखारने एवं संवारने हेतु एक श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, कर्तव्यपरायता, ईमानदार, सत्यनिष्ठा एवं कुशल नेतृत्व वाले शिक्षकों की आवश्यकता है जिसका उल्लेखनीय अवदान किसी वरदान से कम नहीं होता।

—सोढाण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा पो. बज्जू
मो. 09983181510

आदेश-परिपत्र : मई-जून 2014

1. राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2014
2. जिला कलक्टरों द्वारा घोषित जिलास्तरीय स्थानीय अवकाशों की सूचना।

1. राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2014

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-प्रारं/साप्र/सी/भामा/2773/2014/21 दिनांक 21.03.2014 ● समस्त उप निदेशक (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा), समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा) प्रथम-द्वितीय समस्त ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी ● विषय : राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 2014

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के शैक्षिक, सह शैक्षिक एवं भौतिक विकास के लिए दस लाख रुपये अथवा इससे अधिक धनराशि का सहयोग देने वाले दानदाताओं को गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी भामाशाह दिवस (दिनांक 28.06.14) पर एक राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में सम्मानित किया जाना है। इस सम्मान समारोह से संबंधित समस्त कार्य निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा किया जाना है।

इस वर्ष आयोजित होने वाले सम्मान समारोह में 01.04.13 से 31.03.14 तक की अवधि में विभाग द्वारा निर्धारित धनराशि का सहयोग करने वाले दानदाताओं एवं 01.04.12 से 31.03.13 तक की अवधि के लिए निर्धारित राशि का सहयोग करने वाले दानदाता जो गत वर्ष सम्मानित होने से वंचित रह गये थे, उन्हें भी शामिल कर सम्मानित किये जाने का निर्णय लिया गया है। ऐसे दानदाता जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भवन निर्माण/अतिरिक्त निर्माण शाला भवनों की मरम्मत अथवा स्थाई साज सामान के रूप में दस लाख रुपये अथवा इससे अधिक धनराशि का सहयोग उक्त निर्धारित अवधि में किया है, सम्मान हेतु पात्र होंगे। प्रेरकों के लिये 01.04.12 से 31.03.13 अथवा 01.04.13 से 31.03.14 तक की अवधि में 30 लाख रुपये अथवा इससे अधिक धनराशि का सहयोग करने वाले दानदाताओं को सहयोग हेतु प्रेरित किये जाने एवं उनके द्वारा प्रेरित दानदाता इस वर्ष 2014 में आयोजित होने वाले सम्मान समारोह में सम्मान हेतु चयनित होने पर ही चयन का मानदण्ड निर्धारित किया गया है। उक्त वर्णित अवधि से पहले का सहयोग मान्य नहीं होगा।

उपरोक्तानुसार निर्धारित मानदण्डों की श्रेणी में आने वाले दानदाताओं एवं प्रेरकों के प्रस्ताव संलग्न निर्धारित प्रपत्र में संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी की अभिशंषा सहित निदेशालय प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर में प्राप्त होने की अंतिम तिथि 20.05.14 निर्धारित की गई है। इस तिथि के बाद प्राप्त होने वाले प्रस्तावों पर विचार किया जाना संभव नहीं हो सकेगा।

अतः समस्त संबंधित जिला शिक्षा अधिकारियों को पाबंद किया जाता है कि अपने अधीनस्थ जिले में स्थित विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं में सहयोग करने वाले दानदाताओं एवं दानदाताओं को प्रेरित करने वाले प्रेरकों के प्रस्ताव निर्धारित प्रपत्र में निर्धारित तिथि तक विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुसार जाँच कर निदेशालय को भिजवाने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

भामाशाह सम्मान समारोह 2014 हेतु भामाशाहों एवं प्रेरकों के प्रस्ताव निदेशालय को चयन हेतु भिजवाने बाबत निम्न दिशा निर्देश प्रदान किये जाते हैं-

1. न्यूनतम दस लाख रुपये की धनराशि तक का निर्धारित अवधि में शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग करने वाले दानदाताओं का ही प्रस्ताव अभिशंषित कर भिजवावे। यदि दानदाता ने सम्पूर्ण भवन का निर्माण करवाया है या केवल भूमि दान में दी है तो उनके द्वारा निर्मित भवन/भूमि का विधिवत दानपत्र विभाग के पक्ष में लिखा जाना आवश्यक है। यदि विधिवत दानपत्र विभाग के पक्ष में निष्पादित नहीं हुआ है तो ऐसे प्रस्ताव अभिशंषित कर नहीं भिजवाये जावें।
2. यदि किसी दानदाता ने भवन/भूमि दान में दी है तो दान में दिए गए भवन/भूमि के दानपत्र की प्रति के साथ उक्त भवन/भूमि की सक्षम अधिकारी द्वारा प्रदत्त अनुमानित लागत विवरण की प्रति आवश्यक रूप से संलग्न करें।
3. यदि किसी दानदाता ने स्थाई साज सामान के रूप में सहयोग दिया हो तो उसके द्वारा उपलब्ध करवाये गये साज सामान की संबंधित विद्यालय/संस्था के स्टॉक रजिस्टर में इन्द्राज कर यह प्रमाण पत्र देना होगा की संबंधित दानदाता द्वारा इस योजना में दिये गये साज सामान का स्टॉक रजिस्टर में विधिवत् इन्द्राज कर लिया गया है।
4. यदि किसी दानदाता ने भवन निर्माण, अतिरिक्त निर्माण/चारदीवारी/मरम्मत के रूप में सहयोग दिया है तो उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि की पुष्टि से संबंधित विवरण सक्षम अधिकारी के अनुमानित लागत विवरण पत्र की प्रति संलग्न करें। इसी प्रकार बच्चों की छात्रवृत्ति/पुस्तकालय हेतु सहयोग के संबंध में भी संस्था प्रधान सहयोग राशि का विवरण प्रमाणित कर जिला शिक्षा अधिकारी के प्रतिहस्ताक्षर करवाकर प्रस्ताव के साथ संलग्न करें।
5. भामाशाह से तात्पर्य दानपत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अथवा मूल सहयोग देने वाले दानदाता से यदि किसी दानदाता की मृत्यु हो जाती है तो उनको यह सम्मान (मरणोपरान्त) उसी दानदाता के नाम से ही दिया जावेगा। ऐसे दानदाताओं के प्रस्ताव में संक्षिप्त जीवन परिचय भिजवाते समय ध्यान रखा जावे कि फोटोग्राफ एवं परिचय ऐसे मूल दानदाता के ही भेजे जावे। इनका सम्मान उनके उत्तराधिकारी प्राप्त करेंगे जिसके लिये संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी उन्हें अधिकृत कर उनके नवीनतम फोटो सहित अधिकृत पत्र की प्रमाणित प्रति प्रस्ताव के साथ लगावें एवं भेजे जाने वाले प्रस्ताव में भी इसका स्पष्ट उल्लेख करें।

6. यदि दानदाता कोई ट्रस्ट, संस्था या कंपनी है तो इन्हें दिए जाने वाला प्रशस्ति पत्र ट्रस्ट, संस्था या कंपनी के नाम से ही दिया जाएगा।
 7. जन सहभागी विद्यालय मरम्मत योजना के अन्तर्गत दस लाख रुपये अथवा अधिक का विद्यालय मरम्मत कार्य/अतिरिक्त निर्माण कार्य आदि में योगदान देने वाले दानदाता इस सम्मान हेतु पात्र होंगे।
 8. भामाशाहों के प्रस्तावों के साथ संबंधित दानदाताओं द्वारा आवेदन पत्र में उनके द्वारा उल्लेखित सहयोग राशि की पुष्टि से संबंधित दस्तावेज आवश्यक रूप से संलग्न करावें। यदि सहयोग राशि की पुष्टि से संबंधित कोई दस्तावेज प्रस्ताव के साथ संलग्न नहीं होगा तो ऐसे प्रस्ताव अस्वीकृत किये जा सकते हैं।
 9. विभाग द्वारा निर्धारित अवधि, निर्धारित मानदण्ड के अनुरूप प्रेरकों के प्रस्ताव होने पर ही प्रस्ताव भेजे। यदि किसी प्रेरक ने एक से अधिक दानदाताओं को सहयोग हेतु प्रेरित किया है तो उनके द्वारा प्रेरित भामाशाहों के कुल सहयोग की राशि 30 लाख रुपये होने एवं प्रेरक द्वारा प्रेरित भामाशाह आयोजित समारोह में सम्मान हेतु चयनित होने पर ही प्रेरक को सम्मान हेतु चयनित किया जायेगा। प्रेरकों के प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी अपनी अभिशंषा सहित इस निदेशालय को निर्धारित अवधि में भिजवायेंगे। उप निदेशक की अभिशंषा के अभाव में प्राप्त होने वाले प्रेरकों के प्रस्तावों पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
 10. यदि एक से अधिक दानदाताओं ने सहयोग किया है तो ऐसे प्रकरणों में संबंधित दानदाता से लिखित सहमति प्राप्त कर प्रस्ताव के साथ संलग्न करें कि किसको सम्मानित किया जाना है। विभाग द्वारा केवल एक दानदाता को ही सम्मानित किया जायेगा यदि एक से अधिक दानदाताओं ने संयुक्त रूप से सहयोग किया है तो दानदाता की लिखित सहमति प्राप्त होने पर ही उनके द्वारा सहमत दानदाता को सम्मानित किया जावेगा। प्रशस्ति पुस्तिका में सम्मानित होने वाले ही दानदाता का फोटो एवं परिचय प्रकाशित किया जावेगा।
 11. जहां तक संभव हो सके भामाशाहों/प्रेरकों के प्रस्ताव निर्धारित प्रपत्र में कम्प्यूटराईज्ड/टाईप कराकर ही भिजवावें।
 12. प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, जनप्रतिनिधी को प्रेरक के रूप में सम्मान हेतु प्रस्ताव प्रेषित नहीं किए जावे।
 13. भामाशाह एवं प्रेरकों को सम्मान हेतु चयन बाबत निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम होगा। यदि किसी भामाशाह एवं प्रेरक का प्रस्ताव सम्मान हेतु चयनित नहीं किया जाता है तो ऐसे प्रकरणों में किसी भी प्रकार के पत्र व्यवहार पर कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी और न ही चयन नहीं किये जाने के कारण से उन्हें सूचित किया जावेगा।
- इस परिपत्र के साथ भामाशाहों एवं प्रेरकों के प्रस्तावों के आवेदन पत्रों का प्रारूप संलग्न कर भिजवाया जा रहा है। जिसे पूर्ण भरवाकर दो फोटो सहित प्रस्ताव समेकित कर भामाशाहों के प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं प्रेरकों के प्रस्ताव संबंधित मंडल अधिकारी निर्धारित तिथि तक निदेशालय को भिजवायेंगे। भामाशाह एवं प्रेरकों के प्रस्ताव के साथ पूर्ण विवरण सहित वांछनीय दस्तावेज की प्रतियां संलग्न करें।

संबंधित भामाशाह/प्रेरक की एक फोटो फार्म पर निर्धारित स्थान पर चिपकाकर एवं एक फोटो “यू” पिन के साथ फार्म के साथ संलग्न कर भिजवानी है। “यू” पिन के साथ भेजी जाने वाली फोटो के पीछे संबंधित दानदाता/प्रेरक का पूरा नाम पता अवश्य लिखा जावे।

निर्धारित तिथि के बाद प्रेषित किये जाने वाले किसी भी प्रस्ताव पर विचार किया जाना संभव नहीं होगा। निर्धारित आवेदन पत्र के फार्म में सभी कॉलम पूरे भरे होने आवश्यक है। आधे अधूरे अपूर्ण प्रस्ताव अस्वीकृत किये जा सकते हैं। यदि कोई भामाशाह या प्रेरक प्रस्ताव के अभाव में सम्मान से वंचित रहता है तो इसका उत्तरदायित्व संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं संबंधित मंडल अधिकारी का होगा। अतः हर संभव प्रयास कर निर्धारित तिथि तक प्रस्ताव निदेशालय को भिजवाने हेतु पाबंद किया जाता है।

संलग्न : भामाशाह एवं प्रेरकों के प्रस्ताव के आवेदन पत्र का निर्धारित प्रपत्र

ह. निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2014 हेतु प्रस्ताव भामाशाह के लिए

- | | |
|--|--|
| <ol style="list-style-type: none"> 1. दानदाता (भामाशाह) का नाम 2. पिता/पति का नाम..... 3. जाति..... 4. जन्म तिथि..... 5. मूल निवास स्थान व स्थाई पता..... 6. यदि दानदाता कोई ट्रस्ट, संस्था या कंपनी है तो ट्रस्ट, संस्था अथवा कंपनी की ओर से सम्मान ग्रहण करने वाले का नाम..... पद..... विभाग द्वारा इन्हे दिये जाने वाले प्रशस्ति पत्र/प्रतीक चिन्ह में लिखा जाने वाला नाम (दानदाता संस्था, ट्रस्ट एवं कंपनी है तो व्यक्ति का नाम नहीं लिखें संस्था, ट्रस्ट एवं कंपनी का नाम ही लिखें)..... 7. पत्र व्यवहार हेतु पूर्ण पता (विभाग द्वारा समस्त पत्र व्यवहार इसी पते पर ही किये जायेंगे) 8. सम्पर्क हेतु दूरभाष नं. मोबाईल नं..... फैक्स नं. 9. शैक्षणिक योग्यता 10. व्यवसाय का विवरण 11. विद्यालय का नाम जिसके लिये सहयोग किया गया..... 12. आप द्वारा किये गये सहयोग का विवरण..... 13. आप द्वारा किये गये सहयोग की अवधि/वर्ष..... 14. सहयोग की कुल राशि रु. (प्रदत्त सहयोग राशि की पुष्टि हेतु सहयोग राशि का विवरण जि.शि.अ. से प्रति हस्ताक्षरित कराकर संलग्न करें)..... 15. यदि सम्पूर्ण भवन का निर्माण करना है तो क्या निर्मित भवन का विधिवत दान पत्र विभाग के पक्ष में लिखा जा चुका है..... | <p>पासपोर्ट
साईज का
फोटो
चिपकावे</p> |
|--|--|

- (पंजीकृत दान पत्र एवं विभाग द्वारा दान में एवं राज्याधीन लिये जाने की स्वीकृति आदेश की प्रति संलग्न करें)
16. आपको सहयोग हेतु प्रेरित करने वाले प्रेरक का नाम एवं उनसे आपका संबंध.....
 17. शिक्षा विभाग के अतिरिक्त आपके द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र/हित में किये गये अन्य महत्वपूर्ण सहयोगों का विवरण
 18. दानदाता के विरुद्ध किसी प्रकार का कोई आपराधिक मामला न्यायालय में विचाराधीन नहीं है/है.....
(यदि है तो उसका पूर्ण विवरण संलग्न करें)
 19. संक्षिप्त जीवन परिचय.....
.....
(आवश्यकता होने पर पृथक से संलग्न किया जा सकता है)
 20. प्रमाणित किया जाता है कि मेरे विरुद्ध किसी प्रकार का आपराधिक वाद किसी भी न्यायालय/पुलिस थाना में विचाराधीन नहीं है/दर्ज नहीं है।

हस्ताक्षर दानदाता
दिनांक..... नाम.....
पता.....
.....

‘प्रमाणित किया जाता है कि दानदाता द्वारा उल्लेखित सहयोग राशि की पुष्टि संबंधित दस्तावेज से कर ली गई है। उपरोक्त विवरण सही है, गलत पाये जाने पर निम्न हस्ताक्षरकर्ता उत्तरदायी है।’

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर
(मय मोहर)

‘प्रमाणित किया जाता है कि दानदाता द्वारा उल्लेखित राशि की पुष्टि संबंधित दस्तावेज से कर ली गई है, भामाशाह के प्रस्ताव की जांच करली गई है। जांचोपरान्त उपरोक्त उल्लेखित विवरण सही पाये गये अतः इनका राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान के लिए चयन की अभिशंषा की जाती है।

हस्ताक्षर संबंधित जि.शि.अ.
(मय मोहर)

राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह-2014

हेतु प्रेरक के लिए प्रस्ताव

1. नाम प्रेरक.....
2. पिता/पति का नाम.....
3. पद व पदस्थापन स्थान.....
4. दानदाता का नाम जिसे आप द्वारा प्रेरित किया गया.....
.....
5. विद्यालय का नाम जिसके लिये आपकी प्रेरणा से सहयोग हुआ.....
.....
6. आपकी प्रेरणा से दानदाता द्वारा किये गये सहयोग का विवरण.....
.....
7. दानदाता द्वारा किये गये सहयोग की अनुमानित लागत राशि.....
.....
8. दानदाता का आपसे संबंध.....

पासपोर्ट
साईज का
फोटो चिपकावे

9. सार्वजनिक क्षेत्र/हित में आप द्वारा किये गये अन्य योगदानों का विवरण.....
10. प्रेरक विरुद्ध किसी प्रकार का कोई आपराधिक में मामला न्यायालय विचाराधीन नहीं है/है.....
(यदि है तो उसका पूर्ण विवरण संलग्न करें)
11. क्या आपके विरुद्ध कोई विभागीय अनुशासनात्मक कार्यवाही तो विचाराधीन नहीं है/है.....
(यदि है तो उसका पूर्ण विवरण संलग्न करें)
12. दानदाता को प्रेरित कर सहयोग प्राप्त करने की अवधि/वर्ष.....
13. पत्र व्यवहार हेतु पता (विभाग द्वारा समस्त पत्र व्यवहार इसी पते पर ही किये जायेंगे).....
14. सम्पर्क हेतु दूरभाष नं. मोबाईल नं.
फैक्स नं.
15. अन्य विशेष विवरण
16. संक्षिप्त परिचय
17. प्रमाणित किया जाता है कि मेरे विरुद्ध किसी प्रकार का आपराधिक वाद किसी भी न्यायालय/पुलिस थाना में विचाराधीन नहीं है/दर्ज नहीं है।

दिनांक..... हस्ताक्षर प्रेरक
नाम.....
पद व पदस्थापन स्थान..

उक्त प्रेरक ने ही मुझे/हमें सहयोग हेतु प्रेरित किया है अतः मैं/हम इन्हें प्रेरक के रूप में सम्मान हेतु चयन की अभिशंषा करता हूँ/करते है।

हस्ताक्षर दानदाता
नाम.....

‘प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त विवरण सही है, गलत पाये जाने पर इसके लिये निम्न हस्ताक्षरकर्ता उत्तरदायी है’

हस्ताक्षर संस्था प्रधान
(मय मोहर)

‘प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्त विवरण सही है। उक्त कर्मचारी/अधिकारी के विरुद्ध किसी भी प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही विचाराधीन नहीं हैं कर्मचारी/अधिकारी को प्रेरक के रूप में चयन कर सम्मानित किये जाने की अभिशंषा की जाती है’

हस्ताक्षर संबंधित जि.शि.अ.
(मय मोहर)

‘प्रमाणित किया जाता है कि प्रेरकों के प्रस्तावों का अध्ययन करने के बाद उक्त प्रेरक का योगदान सर्वश्रेष्ठ रहा है। इन्होंने विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्डानुसार न्यूनतम तीस लाख रुपये अथवा इससे अधिक योगदान देने वाले भामाशाह को प्रेरित किया है। इनके विरुद्ध किसी भी प्रकार की अनुशासनात्मक कार्यवाही विचाराधीन नहीं है। अतः इन्हें प्रेरक के रूप में चयन कर सम्मानित किये जाने की अभिशंषा की जाती है।

हस्ताक्षर संबंधित उप निदेशक
(मय मोहर)

2. जिला कलक्टरों द्वारा घोषित जिलास्तरीय स्थानीय अवकाशों की सूचना।

● कलेण्डर वर्ष 2014 में राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टरों द्वारा घोषित अवकाश की सूचना निम्न तालिका में प्रस्तुत है:-

क्र.सं.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	जयपुर	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी
		29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
2.	अलवर	09.07.2014	बुधवार	मेला श्री गणनाथजी महाराज (अलवर)
		02.09.2014	मंगलवार	मेला श्री हनुमाजी महाराज (पांडुपोल)
3.	सीकर	12.03.2014	बुधवार	खाटूश्यामी मेला
		07.04.2014	सोमवार	जीणमाताजी मेला
4.	दौसा	04.02.2014	मंगलवार	बसंत पंचमी
		29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
5.	भरतपुर	25.08.2014	सोमवार	वनयात्रा (डीग मेला)
		29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
6.	धौलपुर	15.04.2014	मंगलवार	हनुमान जयंती
		-	-	घोषित नहीं
7.	सवाईमाधोपुर	20.01.0214	सोमवार	चौथ का बरवाड़ा माताजी का लकड़ी मैला
		29.08.0214	शुक्रवार	रणथम्भौर त्रिनेत्र गणेश जी की लकड़ी मेला
8.	करौली	16.04.2014	बुधवार	महावीर जयंती
		29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
9.	अजमेर	05.05.2014	सोमवार	उर्स मेला
		05.11.2014	बुधवार	पुष्कर मेला
10.	भीलवाड़ा	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी
		05.09.2014	शुक्रवार	जल झूलनी ग्यारस
11.	नागौर	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी
		02.04.2014	बुधवार	गणगौर
12.	टोंक	29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
		05.09.2014	शुक्रवार	जल झूलनी ग्यारस
13.	कोटा	29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
		08.09.2014	सोमवार	अनन्त चतुर्दशी
14.	बारां	29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
		05.09.2014	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
15.	बून्दी	29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
		08.09.2014	सोमवार	अनन्त चतुर्दशी

16.	झालावाड़	08.09.2014	सोमवार	अनन्त चतुर्दशी
		22.10.2014	बुधवार	रूप चौदस
17.	जोधपुर	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी
		27.08.2014	बुधवार	बाबा रामदेव की बीज
18.	पाली	01.05.2014	गुरुवार	परशुराम जयन्ती
		29.08.2014	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
19.	बाड़मेर	09.08.2014	सोमवार	निर्जला ग्यारस
		13.08.2014	बुधवार	कजली तीज
20.	जैसलमेर	02.05.2014	शुक्रवार	अक्षय तृतीया
		21.10.2014	मंगलवार	धनतेरस
21.	सिरोही	02.05.2014	शुक्रवार	अक्षय तृतीया
		06.08.2014	शनिवार	वामन जयंती
22.	जालौर	17.02.2014	सोमवार	जालोर महोत्सव
		05.09.2014	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
23.	उदयपुर	02.04.2014	बुधवार	गणगौर
		26.07.2014	शुक्रवार	हरियाली अमावस्या
24.	बांसवाड़ा	05.09.2014	शुक्रवार	देवझूलनी एकादशी
		27.10.2014	सोमवार	मंशाव्रति चौथ
25.	चित्तौड़गढ़	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी-केवल कपासन में
		28.03.2014	शुक्रवार	रंगतेरस पर्व-कपासन को छोड़कर
		26.07.2014	शुक्रवार	हरियाली अमावस्या
26.	प्रतापगढ़	28.03.2014	शुक्रवार	रंगतेरस
		05.09.2014	शुक्रवार	देवझूलनी एकादशी
27.	डूंगरपुर	14.02.2014	शुक्रवार	बेणेश्वर मेला
		11.09.2014	गुरुवार	रथोत्सव
28.	राजसमन्द	24.03.2014	सोमवार	शीतला अष्टमी
		05.09.2014	शुक्रवार	देवझूलनी एकादशी
29.	चूरू	15.04.2014	मंगलवार	सालासर हनुमान मेला
		19.08.2014	मंगलवार	गोगानवमी
30.	बीकानेर	02.05.2014	शुक्रवार	अक्षय तृतीया
		09.06.2014	सोमवार	निर्जला ग्यारस
31.	हनुमानगढ़	03.09.2014	मंगलवार	गोगामेड़ी
		14.01.2014	मंगलवार	संक्रान्ति
32.	झुझुनूँ	02.04.2014	बुधवार	गणगौर
		21.10.2014	मंगलवार	धनतेरस
33.	श्री गंगानगर	13.01.2014	सोमवार	लोहड़ी
		25.07.2014	शुक्रवार	श्रावणी शिवरात्री

आदेश परिपत्रों की अनुक्रमणिका

(शिविरा पत्रिका जुलाई, 2013 से मई-जून, 2014 तक के अंकों में प्रकाशित आदेश-परिपत्र)

शिविरा पत्रिका में वर्ष भर में प्रकाशित आदेश-परिपत्रों की पूरी अनुक्रमणिका प्रति वर्ष मई-जून के अंक में दी जाती रही है। उन्नीसवें पाठकों की बुद्धि के लिए जुलाई 13 से मई-जून, 14 तक के आदेश परिपत्रों की अलग-अलग विषयवार अनुक्रमणिका प्रस्तुत है। (कोष्ठक में अंक की पृष्ठ संख्या है)

छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन

अजा/अजजा/देवनारायण गुरुकुल योजना के अन्तर्गत विशेष पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति, जुलाई, 31(38) ● अल्प संख्यक समुदाय के बच्चों को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति, जुलाई-13(41) ● अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति, जुलाई-13(50) ● अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति, जुलाई-13(52) ● विशेष पिछड़ा वर्ग को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति, जुलाई-13(54) ● कारगिल आपरेशन विजय अर्थात् 01.4.99 के पश्चात विभिन्न युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद सैनिकों पैरामिलिट्री फोर्स के शहीद सदस्यों/युद्धों में स्थायी रूप से विकलांग सैनिकों के आश्रितों को देय छात्रवृत्ति वर्ष 2013-14 हेतु आवेदन पत्रों का आमंत्रण, जुलाई-13(56) ● प्री-कारगिल आपरेशन विजय अर्थात् 01.4.99 के पूर्व विभिन्न युद्धों तथा विभिन्न इन्सरजेन्सी काउन्टरों में शहीद सैनिकों/पैरामिलिट्री फोर्स के शहीद सदस्यों/युद्धों में स्थायी रूप से विकलांग सैनिकों के आश्रितों को देय छात्रवृत्ति हेतु आवेदन पत्रों का आमंत्रण पत्र 2013-14 हेतु, जुलाई-13(57) ● भूतपूर्व सैनिकों की कक्षा 11 व 12 में नियमित अध्ययनरत छात्रा के रूप में प्रतिभावान पुत्रियों की देय छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत सत्र 2013-14 हेतु आवेदन पत्र आमंत्रण जुलाई-13(58) ● केन्द्र प्रवर्तित योजना अन्तर्गत राजकीय माध्यमिक/उच्च मा. विद्यालयों में संस्कृत विषय सहित अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का संस्कृत छात्रवृत्ति के संबंध में सत्र 2013-14 की मैरिट लिस्ट निर्माण हेतु, जुलाई-13(59) ● अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति प्रतिभा विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2013-14 हेतु आवेदन पत्रों का आमंत्रण, जुलाई-13(61) ● कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं को स्नातक स्तर तक की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के लिए एस.टी.डी.आर. के रूप में प्रोत्साहन योजना, जुलाई-13(62) ● राजीव गाँधी विद्यार्थी डिजिटल योजना अन्तर्गत लैपटॉप वितरण के संबंध में दिशा निर्देश, जुलाई-13(64) ● बालिकाओं के लिए गार्गी पुरस्कार के अन्तर्गत देय राशि में वृद्धि, अगस्त-13(23) ● अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय सीमा राशि 2.00 लाख से 2.50 लाख तक बढ़ाए जाने के संबंध में, अप्रैल-14(27) ● एन.एम.एम.एस. 2013-14 परीक्षा में चयनित छात्रों के प्रपत्र पूर्ति संबंधी निर्देश एवं क्लेम बिल का प्रारम्भ, अप्रैल-14 (27)

शैक्षिक

शिक्षा सत्र 2013-14 में क्रमोन्नत गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में अतिरिक्त कक्षाएँ प्रारम्भ करने की अनुमति दिए जाने के संबंध में,

अगस्त-13(23) ● राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय स्तर पर क्रमोन्नत होने पर प्राथमिक विद्यालय को पृथक करने के संबंध में, अगस्त-13(28) ● कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी किसी एक सहशैक्षिक गतिविधि में आवश्यक रूप से भाग लेंगे, अगस्त-13 (28) ● विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं की शिक्षण व्यवस्था के संबंध में, अगस्त-13(29) ● कक्षा 6,7 एवं 8 की तृतीय भाषा पंजाबी हेतु पंजाब राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल की पुस्तकें लागू करने के सम्बन्ध में, दिसम्बर-13(26) ● कक्षा 6, 7 एवं 8 में प्रचलित संस्कृत पुस्तक 'रुचिरा' की निरन्तरता के संबंध में, जनवरी-14(27) ● शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिताओं (2013-14) की तिथियाँ संशोधित हुई, जनवरी-14 (27) ● कठिन विषयों के निवारण एवं गुणवत्ता हेतु अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन, फरवरी-14(26) ● माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की परीक्षाओं का बोर्ड द्वारा प्रसारित निर्देशों के अनुसार संचालन करने के संबंध में, फरवरी-14(28) ● गैरसरकारी मान्यता प्राप्त विद्यालयों के भवन/नाम/वर्ग परिवर्तन एवं अतिरिक्त माध्यम (हिन्दी/ अंग्रेजी) के आवेदन के सम्बन्ध में, मार्च-14(27) ● गैरसरकारी मान्यता/सहायता प्राप्त विद्यालयों को सी.बी.एस.ई., आई.सी.एस.सी.ई. नई दिल्ली से संबद्धता हेतु अनापत्ति प्रमाणपत्र जारी किये जाने बाबत, मार्च-14(27) ● शिविरा-पंचाग 2013-14 में संशोधन, अप्रैल-14 (29)

लेखा

पेंशन प्रक्रिया को सुगम व समयबद्ध बनाने हेतु दिशा-निर्देश, अगस्त-13 (23) ● सेवानिवृत्ति से 6 माह पूर्व कार्मिक का पेंशन प्रकरण भिजवाये, अगस्त-13(24) ● राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदाय की गारण्टी अधिनियम 2011 में सम्मिलित हैं पेंशन प्रकरण, अगस्त-13 (25) ● माध्यमिक शिक्षा विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा निर्देश दिनांक 9 जनवरी-13, अगस्त-13 (25) ● प्रधानाध्यापक, मा.वि. के पेंशन प्रकरण जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा भिजवाए जायें, अगस्त-13 (26) ● निर्धारित समय पर पेंशन प्रकरण निस्तारण नहीं होने पर प्रतिदिन 500 रु. का अर्थदण्ड, अगस्त-13 (26) ● अतिरिक्त बजट राशि की मांग करने के संबंध में, नवम्बर-13 (25) ● यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय के भुगतान की नियमित सूचना भिजवाने के संबंध में, दिसम्बर-13 (25) ● प्रावधानी निधि योजना के अंशदान के कटौति पत्र और कर्मचारियों की पासबुक उपलब्ध कराने बाबत, दिसम्बर-13 (26) ● विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा निर्देश, जनवरी-14 (23) ● पेंशन प्रकरणों के निस्तारण में त्वरित कार्यवाही-सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का सूचीकरण, जनवरी-14 (23)

शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.)

निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश, अगस्त-13 (26) ● निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत सत्र 2013-14 में निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के संबंध में, सितम्बर-13 (24) ● सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु जारी दिशा निर्देश, अक्टूबर-13, (25) ● सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से सम्बन्धित सीडी फिल्म ब्लॉकवार भिजवाने के क्रम में अक्टूबर-13, (25) ● सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी सामग्री विद्यालयों में प्रेषित करने बाबत, अक्टूबर-13, (26) ● राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के संदर्भ में, अक्टूबर-13 (27) ● राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के सम्बन्ध में, अक्टूबर-13 (27) ● पायलेट प्रोजेक्ट के सुसंचालन के लिए समन्वय समिति का गठन, अक्टूबर-13, (27) ● सत्र 2013-14 में सीसीई कार्यक्रम लागू करने के सम्बन्ध में, अक्टूबर-13 (28) ● सीसीई विद्यालयों में शैक्षिक सम्बलन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जारी निर्देश, अक्टूबर-13 (28) ● सीसीई विद्यालयों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश के संबंध में, अक्टूबर-13 (28) ● राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के संबंध में, अक्टूबर-13 (28) ● क्रमोन्नत सैकण्डरी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तथा पायलेट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 की कक्षाओं में सीसीई यथावत संचालन के क्रम में, अक्टूबर-13 (29) ● सर्वशिक्षा अभियान की वार्षिक कार्ययोजना एवं बजट 2013-14 के तहत सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संबंध में, अक्टूबर-13 (29) ● जिले के सीसीई विद्यालयों में आवश्यक शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु एसएमसी को राशि उपलब्ध करवाने के सम्बन्ध में, अक्टूबर-13 (27) ● निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम: कमजोर एवं अलाभप्रद समूह के बालकों के प्रवेश बाबत स्पष्टीकरण, मार्च-14 (25) ● विद्यालयों में विशेष सफाई अभियान के लिए खर्च हेतु राशि का प्रावधान संबंधी निर्देश, मार्च-14 (26) ● प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति जि.शि.अ. स्तर पर नहीं देने के क्रम में निर्देश, मार्च-14 (26) ● विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा हेतु दिशा निर्देश, अप्रैल-14 (23)

खेलकूद

राष्ट्रीय विद्यालयी खेलों के अन्तर्गत एस.जी.एफ.आई. की अधिकृत/मान्यता प्राप्त इकाईयों में से राजस्थान राज्य में संचालित पांच इकाईयों के संबद्ध विद्यालयों के खेलकूद प्रतियोगिताओं में संभागित्व के प्रतिबंध के क्रम में, फरवरी-14 (28)

निरीक्षण

माध्यमिक शिक्षा में विद्यालयों का सघन निरीक्षण, फरवरी-14 (27) ● विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा एवं विद्यालय निरीक्षण के संबंध में दिशा निर्देश, मार्च-14 (25) ● शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सघन विद्यालय निरीक्षण निर्देश, मार्च-14 (29)

संस्थापन

मण्डल के कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-II) पुरुष/महिला के राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची में संशोधन से संबंधित, अप्रैल-14 (23)

अन्य

सत्र 2013-14 में विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम की प्रभावी क्रियान्विति के क्रम में, सितम्बर-13 (23) ● हितकारी निधि कल्याणकारी योजना कर्मचारी/अध्यापकों के कल्याणार्थ, सितम्बर-13 (25) ● शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 2013 के अवसर पर झंडियों की बिक्री का शुभारम्भ, सितम्बर-13 (25) ● अध्यापकों के बच्चों के व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रित, सितम्बर-13 (28) ● पंचायत राज के शिक्षकों पर वित्त विभाग के आदेश की पालना के संबंध में, सितम्बर-13 (29) ● सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रशिक्षण व आमुखीकरण शिविरों के आयोजन हेतु निर्देश, सितम्बर-13, (29) ● गांधी जयन्ती से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ, अक्टूबर-13 (34) ● निदेशालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के ई-मेल पते, अक्टूबर-13 (35) ● छठी आर्थिक गणना कार्य हेतु लगाये जाने वाले शिक्षकों को उपार्जित अवकाश का लाभ, नवम्बर-13 (25) ● बीकानेर एवं पाली में उप निदेशक (माध्यमिक) कार्यालय स्थापित, नवम्बर-13 (28) ● राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012-13 हेतु राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रण। अंतिम तिथि 13.11.13, नवम्बर-13 (26) ● जोधपुर में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वितीय का कार्यालय स्थापित, नवम्बर-13 (28) ● हितकारी निधि का वर्ष 2013-14 का वार्षिक अंशदान अनिवार्य रूप से लेकर भिजवाने के संबंध में, दिसम्बर-13 (25) ● राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन की तिथियों में परिवर्तन, दिसम्बर-13 (26) ● मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता वर्ष-2013-14, दिसम्बर-13 (27) ● विभाग द्वारा आयोजित 27 वीं राज्य स्तरीय शिक्षक क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2013-14, जनवरी-14 (24) ● हितकारी निधि के अन्तर्गत विभाग में कार्यरत कर्मिकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रण, जनवरी-14 (25) ● वर्ष-2014 के सार्वजनिक/एच्छिक अवकाश घोषित, जनवरी-14 (27) ● सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) के प्रशिक्षणों में भाग लेवें शिक्षक, फरवरी-14 (25) ● माध्यमिक शिक्षा विभाग के मण्डल कार्यालयों के अधीन जिलों का पुनर्निर्धारण, फरवरी-14 (25) ● शिक्षक दिवस प्रकाशन-14 के लिए रचनाओं का आमंत्रण अंतिम दिनांक 31.5.14, मार्च-14 (25) ● विद्यालयों में विशेष सफाई अभियान के लिए खर्च हेतु राशि का प्रावधान संबंधी निर्देश, मार्च-14 (26) ● प्रतियोगी परीक्षाओं की अनुमति जि.शि.अ. स्तर पर नहीं देने के क्रम में निर्देश, मार्च-14 (26) ● भामाशाह सम्मान समारोह 2014 दिशा निर्देश, मई-जून-14 (23)

□



शाला प्रांगण से

अजमेर : राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् जयपुर के निर्देशानुसार तृतीय राज्यस्तरीय 'आओ देखो सीखो प्रतियोगिता, 2013-14' का आयोजन 6-7 मार्च 2014 को वैष्णव धर्मशाला, पुष्कर में हुआ। इसमें राज्य के तीस जिलों में सहभागित्व निभाया। इन जिलों ने आयोजित जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं ने पुष्कर में अपनी योग्यता का दमखम दिखाया। कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 1-5) एवं बरिष्ठ वर्ग (कक्षा 6-8) के अन्तर्गत बालिकाओं ने पाँच गतिविधियों में भाग लिया जो इस प्रकार हैं-हिन्दी अन्त्याक्षरी, अंग्रेजी अन्त्याक्षरी, आशु भाषण, शीघ्र गणना एवं सामान्य ज्ञान। विजेता बालिकाओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

हनुमानगढ़ : स्वाध्याय के लिये पुस्तकों के महत्त्व से हम भलीभाँति परिचित हैं। पुस्तकालय पुस्तकों का घर होते हैं। पुस्तकालयों की उदासीनता के चर्चे तो हम अक्सर सुनते हैं लेकिन हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय पर स्थित कच्ची बस्ती भट्टा कालोनी में संचालित बाल पुस्तकालय इसका अपवाद है। पिछले दिनों हनुमानगढ़ के जिला कलक्टर श्री पी.सी. किशन ने जाकर बाल पाठकों की होंसला अफजाई की। कलक्टर महोदय बच्चों के बीच बैठ गये और बोले, "अब हम सब साथ बैठ कर पुस्तकें पढ़ेंगे और जो बच्चा सबसे ज्यादा पुस्तकें पढ़ेगा उसे ईनाम दिया जाएगा।" उन्होंने बच्चों को टाईम टेबल बनाकर पढ़ने तथा अच्छी आदतें सीखने का आह्वान किया। हनुमानगढ़ के इस बाल पुस्तकालय में पढ़ाई के साथ खेलने की सुविधा भी उपलब्ध है। इसे कहते हैं खेल खेल में पढ़ाई।

बीकानेर : 16वीं लोकसभा के लिये हो रहे आम चुनाव में अधिक से अधिक मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करने के लिये प्रशासन एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। इसी शृंखला में राजस्थान के राज्य कर्मचारियों को दिनांक 15 अप्रैल 2014 को शपथ दिलायी गयी। इसके तहत शिक्षा निदेशालय में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में

शाला प्रांगण के वक्ताओं में प्रदेश के विभिन्न भागों में आयोजित होने वाली शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के संक्षिप्त संभाषण प्रकाशित किये जाते हैं। उद्देश्य यह है कि आयोजक संस्था को पहचान मिले तथा पाठकों को वैसा ही कुछ करने की दृष्टि एवं प्रेरणा मिले। आप भी अपने विद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे ऐसी प्रयासों को [फोटो सहित] लिखकर हमें भिजवाएं। आपके प्रत्युत्तर/डिक्पेच की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

-दबिठ संपादक

निदेशालय कर्मियों ने जाति धर्म संप्रदाय से हटकर निष्पक्ष मतदान करने का संकल्प लिया।

उदयपुर : भैरव राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीण्डर में स्काउट एवं ईको क्लब सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। विद्यालय में इनके तत्वावधान में मूक पक्षियों के दाना पानी हेतु परिण्डे बांध गये उम्मीद है कि आने वाले भीषण गर्मी के मौसम में स्काउट-गाईड संगठन एवं ईको क्लब के माध्यम से राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर बड़ी संख्या में पशु-पक्षियों के लिये चारा, पानी चुगा आदि की व्यवस्था की जाएगी।

जयपुर : जवाहर कला केन्द्र में चल रहे स्पन्दन 5 दिवसीय राष्ट्रीय स्तर आर्ट प्रदर्शनी के अन्तर्गत दिनांक 13.04.14 को सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर विद्यालय के 24 मूक बधिर विद्यार्थियों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। इस विद्यालय के चित्रकला विभाग के व्याख्याता व विभागाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह नरूका ने बताया कि प्रतियोगिता में कक्षा 9 के छात्र सुनील लोंदवाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं कक्षा 8 की निशांत अंजुम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

जयपुर : राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाईड मंडल मुख्यालय बनीपार्क मण्डल के तत्वावधान में आयोजित जिलास्तरीय रैली में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नौदड़ के स्काउट ग्रुप के 9 स्काउटों ने भाग लिया। रैली में विद्यालय के स्काउट्स द्वारा पाइनेरिंग प्रोजेक्ट में अपने कौशल का प्रदर्शन किया तथा जिले में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्काउट्स ने मार्च पास्ट, शिविर कला, लोक नृत्य, विचित्र वेशभूषा, बेकमेन कुकिंग (बिना बर्तन भोजन) शिविर ज्वाल, व्यायाम प्रदर्शन, विज, झांकी, आपदा प्रबंधन, निबंध आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

श्री गंगानगर : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, 40 जीबी में सत्र समापन समारोह (2013-14) वैशाखी 12 अप्रैल 2014 के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 16 बालिकाओं के दल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम 'जागो' प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के द्वारा समाज से मतदान करने की अपील की गयी। इसके अलावा पंजाबी एवं राजस्थानी में नृत्य नाटक प्रस्तुत किये गये। समारोह में प्रधानाचार्य श्री महेन्द्र कुमार चौधरी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। यह उल्लेखनीय है कि 40 जीबी का यह विद्यालय पिछले कई वर्षों से राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विद्यालय के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है।

भीलवाड़ा : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कारोई में मतदान दिवस एवं विश्व एड्स दिवस का आयोजन किया गया। विद्यालय के 400 छात्रों को मतदान एवं एड्स रोकथाम के बारे में जानकारी दी गई। एड्स फैलने के कारणों, लक्षण एवं बचाव के बारे में जानकारी देते हुए विशाल रैली का आयोजन किया गया जिसमें कारोई गांव का भ्रमण कर जागृति संदेश दिया।

सवाई माधोपुर : लोकसभा चुनाव 14 में अधिकाधिक मतदान का संदेश देने के लिए छाँपा बड़ीद उप खण्ड में स्कूली छात्रों को लेकर मत मैराथन दौड़ (रन फोर डेमोक्रेसी) का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। छात्रों के साथ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भी दौड़ में भाग लिया।

हनुमानगढ़ : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहपुर (संगरिया) में छात्रों को लोकतंत्र में वोट का महत्व समझाकर यह संदेश अपने घर-परिवार के सदस्यों तक पहुंचाने का आह्वान किया गया। शाला में विभिन्न जयन्ती एवं पर्व उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं।

-सुनीता चावला, सहायक निदेशक
समाज शिक्षा राजस्थान बीकानेर

एक विचार : दो विचारक

हम बने अच्छे अभिभावक

अच्छी अभिभावकता अवधारणा को केन्द्र में रखकर अब से पूर्व कतिपय आलेख शिविरा में प्रकाशित हुए हैं। दरअसल हर अभिभावक चाहता है कि उसके बच्चे अच्छे बनें। यह उनकी सार्वभौमिकता-सर्वकालीक अभिलाषा रही है। इसके उलट क्या कभी वे यह भी विश्लेषण करते हैं कि वे स्वयं कैसे अभिभावक हैं? आखिर बच्चा भी तो अच्छे माता-पिता की अपेक्षा करता होगा। 'एक विचार : दो विचारक' स्तम्भ में हम शिविरा के नामचीन लेखक श्री रूपनारायण काबरा एवं श्री द्वारकेश भारद्वाज के विचार मय उनकी इसी विषय पर आधारित पुस्तकों की समीक्षा के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। हाँ, आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा तो रहेगी ही! -वरिष्ठ सम्पादक

अच्छे माता-पिता कैसे बनें

शिविरा के नामचीन लेखक श्री रूपनारायण जी काबरा की पुस्तक अच्छे माता-पिता कैसे बनें वस्तुतः एक शिक्षक के रूप में उनकी लम्बी साधना का परिणाम है जो शीर्षक से प्रश्न लगती है मगर वर्णन में अनेक प्रश्नों का वैज्ञानिक जवाब देती है। वे प्रश्न जो स्वयं अभिभावकों के अथवा अभिभावकों की भूमिका को लेकर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के होते हैं। हम स्वयं आदर्श बने बिना दूसरों से आदर्श बनने की उम्मीद नहीं कर सकते और यदि करते हैं तो वह उम्मीद कभी हकीकत में नहीं बदल सकती।

पुस्तक की प्रस्तावना में बकौल श्री काबरा, "गंगा को गंगोत्री पर तो निर्मल रहना ही होगा अर्थात् माता-पिता को अपनी महत्वाकांक्षा के अनुसार स्वयं को आदर्श होना ही होगा। एक सामान्य बुद्धि वाला पिता भी अपने बच्चे की मेरिट पोजीशन की इच्छा रखता है। खुद ने कभी बैट भी नहीं पकड़ा हो पर अपने बच्चे से यह अपेक्षा करना कि वह तेंदुलकर, गावस्कर या धोनी ही बनेगा, जीव विज्ञान विषय दिलाकर ही उसके डॉक्टर बनने की अपनी आकांक्षा थोपना उचित नहीं है। पर अपने सपने और अपने अरमानों का आरोपण प्रायः माता-पिता बच्चों पर करते हैं और बालक को उसकी स्वाभाविक अभिरुचि एवं क्षमता के प्रतिकूल धाराओं में डाल देते हैं। इस प्रकार की अस्वाभाविक महत्वाकांक्षाओं के शिकार न जाने कितने बालक-बालिकाएं हताशा की ओर बढ़ते हैं और असफल हो जाते हैं।"

पुस्तक में कुल 15 आलेख हैं जो उपादेयता की दृष्टि से एक से एक बढ़कर हैं। चूँकि सभी विचार लेखक के अपने भोगे हुए अनुभवों से अनुप्राणित हैं, अतः पढ़ते हुए सब सहज लगता है, बल्कि यों कहना चाहिए कि सब आस पास घटित होता लगता है। बालक के विकास में प्यार की भूमिका, बालक की छवि, मत बनिए व्यवधान, बचाए अकेलेपन से, बच्चे का आत्मसम्मान, जब बच्चा हो जाए फेल, सीखना है जिन्दगी, सफलता के पायदान, शिक्षा से अपेक्षा जैसे आलेख बार-बार पढ़ने और पढ़कर आचरण में ढालने योग्य हैं।

निसंदेह सभी माता-पिता अच्छे बनना चाहते हैं और उन्हें अच्छा बन सकने की राह दिखाती हैं यह पुस्तक। अतः यह पुस्तक घरों में संग्रहित की जाकर बार-बार पढ़ी जानी चाहिए।

-ओप्र

अच्छे माता-पिता कैसे बनें/रूपनारायण काबरा / प्रकाशक : वैभव बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, 266 चौड़ा रास्ता, जयपुर-3 / पृष्ठ संख्या 64 / संस्करण 2012 / मूल्य ₹ 100.00

अपने बच्चों के खातिर अच्छे बनिये

□ रूपनारायण काबरा

स बसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा घर वही है जहाँ 'शासन' की प्रवृत्ति न्यूनतम है। जिस बच्चे को सजा न दी जाये और अनावश्यक आदर्श, निर्देश, वर्जना, प्रताड़ना नहीं दी जाये वह असाधारण रूप से सुसंस्कृत होगा। यह बात यदि कभी असत्य नजर आती है तो केवल इसी कारण कि अभिभावक एवं अध्यापक स्वयं उन्हीं बातों का उल्लंघन करते हैं जिसके लिये वे अपने बच्चों को मानने के लिए बाध्य करते हैं। हम बच्चों को संयम की बात कहते हैं एवं स्वयं असंयमी होते हैं, एक प्रकार से नहीं कई प्रकार से हम उन्हें मैत्री भाव एवं सौम्यता सिखाना चाहते हैं और खुद सार्वजनिक रूप से लड़ते हैं। हम उन्हें हिंसक फिल्मों, सिगरेट एवं मद्यपान से रोकते हैं और स्वयं ऐसा करते हैं। प्रायः ऐसा हम चोरी-चोरी करते हैं लेकिन बच्चे को पता पड़ ही जाता है। हम चिल्लाकर सौम्य होने का उपदेश देते हैं और अभद्रतापूर्वक शिष्टता के निर्देश देते हैं। हम डॉक्टर शान्त होने की बात कहते हैं। बच्चों को बात-बात पर तिरस्कृत एवं अपमानित करते हैं और सिखाना चाहते हैं, सम्मान करना। लेकिन बच्चे वही सीखते हैं जो वे हमें करता हुआ देखते हैं। हमारे कहने का असर हमारे स्वयं के आचरण की अपेक्षा बहुत कम पड़ता है। एक बाल मनोवैज्ञानिक कहते हैं, "मुझे आपके बच्चों को दिखाओ तो मैं बता दूँगा कि आप कैसे हैं? यदि आप चाहते हैं बच्चा नम्र बने तो आप भी उससे नम्रता से बात करें। यदि उसे स्वच्छ रहना सिखाना चाहते हैं तो स्वयं स्वच्छ रहिये, यही काफी है।"

किसी बच्चे को आदेश-निर्देश देना, बच्चे को कलह-प्रिय एवं प्रतिरोधी बनाना है। यह सिद्धान्त लगभग उतना ही सत्य है (अपवादों को छोड़कर) जितने कि न्यूटन के गति नियम। हमारे आदेश से बालक के अन्तर में सोया हुआ अहम् जाग उठता है। बच्चे के प्रति न्यायोचित व्यवहार करें। उसका प्यार और विश्वास जीतें। आपके अनुरोध एवं सुझाव अपने आदेशों की अपेक्षा ज्यादा प्रभावी होंगे, ज्यादा स्वीकार्य होंगे।

बालक के साथ उत्तेजित व तीखे स्वर में बोलना उसको यही प्रशिक्षण देता है और वह भी समय पाकर ऐसा ही बन जाता है। शिष्टाचार एवं अच्छा आचरण केवल लगातार प्रत्यक्ष उदाहरणों से ही सीखा जाता है। इसे सिखाने का प्रयास और वह भी डॉट-डपटकर असंभव ही लगता है। बच्चों में अच्छे आचरण की महत्वाकांक्षा अभिभावकों को स्वयं अच्छा बनने की शिक्षा देता है।

कैशौर्य के फूलों को खिलने दें

□ द्वारकेश भारद्वाज

बच्चे को दोष देना, उसमें कमी निकालना गलत है। इसके बजाय प्रशंसा के बिन्दु खोजे जाएँ एवं दोष के बिन्दुओं की उपेक्षा की जानी चाहिये। निन्दा-भर्त्सना आत्मा को कचोटती है और जो अपेक्षित है, उसे नफरत के योग्य बना देती है। इससे अन्तर्विद्रोह भी पनपता है, जबकि प्रशंसा बालक की प्रत्येक कोशिका एवं अवयव को ऊर्जा देती है, तथा मुश्किल को भी आसान बना देती है। अहम् एक ऐसा लीवर है, जिसका प्रयोग कर उसकी सहायता से हम दुनिया को हिला-उठा सकते हैं। हर बालक का अपना अहम् अपनी शख्सियत होती है, और प्रशंसा उसे जाग्रत करती है और फिर वह कुछ भी कर सकता है। यदि बालक के अंग्रेजी में बहुत अंक आये हैं, लेकिन गणित में कम तो हम इस कमी को इतना महत्त्व दे डालते हैं कि अंग्रेजी के अच्छे अंक उपेक्षित हो जाते हैं। यदि अभिभावक पीछे मुड़कर देखें कि अपने बालक की उम्र में उनके स्वयं के कैसे अंक आते थे, तो वे अंकों की उपलब्धि पर टिप्पणी नहीं कर सकेंगे। एक बाल-मनोविज्ञानी तो स्पष्ट कहते हैं कि, “यदि प्यार से बच्चा बिगड़ता भी है तो वह उतना ही बिगड़ेगा जितना आपके डाँटने-झपटने से। बालक का सर्वोत्तम टॉनिक है, हमारा स्नेह, हमारा विश्वास।”

आज के अति आधुनिक, अति सभ्य, अति शिक्षित अभिभावकों के पास क्लब, सिनेमा, टीवी, अखबार, मित्र-मंडली, सभी के लिये समय है, पर नहीं है तो अपने बच्चों के लिये। काश, अभिभावक बच्चों के साथ बच्चे बन सकें, अन्तरंग बन सकें, मित्र बन सकें, उनके साथ खेल सकें, उनके साथ निकटता स्थापित कर सकें। यदि ऐसा कर सकेंगे तो निश्चित ही अभिभावक अपने आचरण एवं व्यवहार से वह सब कुछ अपने बच्चों को सिखा सकेंगे, जिसके कि वे आकांक्षी हैं। उदाहरण पेश करने से पूर्व उन्हें स्वयं को पुनर्शिक्षित होना होगा। यदि माता-पिता स्वयं सही होने का हौसला रखते हैं तभी वे अपने बच्चों से सही आचरण की अपेक्षा के अधिकारी होंगे। अपने लिये न सही, बच्चों के खातिर ही अच्छे बन जाइये।

—ए-438, किशोर कुटीर,
वैशाली नगर, जयपुर
मो. 08233360830

जी वन में किशोरावस्था का विशेष महत्त्व है। यह जीवन का सबसे सुंदर समय होता है। इसके एक तरफ होता है मासूम बचपन की विदाई का दौर तो दूसरी तरफ कैशौर्य का आगमन। एक विदाई पूर्ण-रूपेण हो भी नहीं पाती है कि खुशबू की मंजूषा से मन में गुदगुदी पैदा कर देने के किशोरों के मन मयूर नाच उठते हैं।

समय जीवन में दुबारा लौटकर नहीं आता। इस समय आँखों में होते हैं भविष्य के सुनहरे सपने और मंजिल तक पहुँचने के लिए व्यग्रता। ऐसे समय आवश्यकता होती है एक कुशल मार्गदर्शक की जो किशोरों के अंदर यह विश्वास पैदा कर सके कि वे उनके हितचिंतक और आत्मीय हैं। यह काम उनके अभिभावक कुशलतापूर्वक कर सकते हैं।

अभिभावक अपने परिवार रूपी बगिया के माली हैं। संतान रूपी पौधे को सींचना उनका कर्तव्य है। अच्छी खाद डालेंगे तो पौधे अच्छी तरह से विकसित होंगे। फूल खिल उठेंगे और बगिया खुशबू से भर उठेगी। संस्कार रूपी अच्छे बीज जब हमने रोपित कर दिए हैं तो उसकी अच्छी

देखभाल भी करनी होगी। जरूरी है हम कैशौर्य की दहलीज पर खड़े अपने बच्चों को फलों की तरह खिलने दें।

किशोरावस्था वह समय है जब शारीरिक

एवं मानसिक परिवर्तनों से अनायास ही तनाव उत्पन्न हो जाता है। इसी समय नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी तलवार लेकर आमने-सामने आ जाती है। किशोर पीढ़ी निषेधात्मक आदेशों से त्रस्त हो उठती है। उसके मन में उठते हुए प्रश्नों का समाधान करना कठिन हो जाता है। बड़ों के बीच उनके किसी विचार को मान्यता नहीं मिलती। परिवार में अवश्य उनकी प्राथमिकता नहीं रहती। घर में कोई मिलने आता है तो उन्हें थोड़ी देर बैठने के बाद अलग हट जाने को कहा जाता है। जबकि विद्यालय में उनकी प्राथमिकता होती है। शिक्षक एवं प्राचार्य सभी उनके पीछे होते हैं। इससे वे स्वावलंबी बनते हैं तथा उनके भीतर स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता का भाव उत्पन्न होता है।

सहशिक्षा के अभाव में उनके सामने अनेक परेशानियाँ आ जाती हैं। बचपन तक जिनका साथ था, आज उनसे दोस्ती तो दूर बातचीत पर भी निषेधात्मक मुहर लग

‘बालक, पालक और शिक्षा’

‘बालक, पालक और शिक्षा’ श्री द्वारकेश भारद्वाज के लम्बे अनुभव से निकले मोतियों की माला है। एक सामान्य शिक्षक से शुरू कर जिला शिक्षा अधिकारी के उच्च पद की यात्रा के समान्तर समाज व विद्यालय तथा शिक्षक, अभिभावक व विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया स्वरूप प्राप्त अनुभवों को इस मंगल उद्देश्य से इस पुस्तक में परोसा है कि इन्हें पढ़कर अभिभावक अपने अभिभावकीय उत्तरदायित्व को और बेहतर ढंग से निभा सके।

पुस्तक की महत्ता समझने के लिए द्वारकेश जी के शब्द उधार ले लेते हैं। वे लिखते हैं, “आज क्या पालक और क्या शिक्षक सभी बच्चे की फूल सी नहीं जान पर सवर रहते हैं। बच्चों पर हम अपनी आकांक्षा, आदर्श अपने सपने और अरमान ही नहीं बल्कि मानदण्ड तक थोप देते हैं और बच्चे का कोमल मन और बचपन दब जाता है। जब ये बड़े-बड़े गहरी व सुबह नींद के आगोश में डूबे रहते हैं तब बच्चे को उठकर स्कूल जाने को तैयार होना पड़ता है। घर पर हर वक्त बच्चे को सुनना पड़ता ही नहीं बल्कि करना भी पड़ता है कि चल उठ, पढ़, होमवर्क पूरा कर, परीक्षा सिर पर है आदि आदि। स्कूल में पढ़कर आने के बाद दृष्टान्त का प्रचलन और बढ़ गया है। बच्चे के पास खेलने व बाल सुलभ क्रियाओं के लिए कोई वक्त नहीं। हर वक्त परीक्षा का भूत सिर पर सवार। केवल पढ़ाई के लिए हिदायत, तकाजा और समझाइश। बस इन्हीं जुमलों में बंधकर रह जाती है बालक की फूल सी जीवन सिरिता। इस प्रकार की बातों से बच्चों का मन कुंठित हो जाता है।”

पुस्तक बालक, पालक और शिक्षा में कुल तीन दर्जन आलेख हैं, जिनमें संस्कार, अनुशासन, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, क्रीडा, नानी की कहानी, गीत-संगीत, बस्ते का भार, बच्चों के साथ संवाद, बच्चों में आत्मविश्वास, मैत्रीभाव, बाल मनोविज्ञान आदि विविध विषयों को केन्द्र में रखकर सुन्दर रचनाएँ पेश की गई हैं। यह पुस्तक शिक्षकों एवं अभिभावकों को अवश्य पढ़नी चाहिए। —ओप्र

बालक, पालक और शिक्षा / द्वारकेश भारद्वाज / प्रकाशक : चिल्ड्रन बुक हाउस, बी-15/6, शिवमार्ग, बनी पार्क, जयपुर / संस्करण 2012 / पृ.सं. 136 / मूल्य ₹175.00

जाती है। 'समाज वाले गलत अर्थ लगाएंगे' का भय दिला दिया जाता है। जबकि आज के इस दौर में उन्हें सहशिक्षा के वातावरण में रखना जरूरी समझा गया है। इससे पुरुष-नारी में समानता के मानवीय मूल्य का अंकुरण होगा। उनका परस्पर संकोच दूर होगा तथा एक स्वस्थ मानसिकता का निर्माण होगा। वे कुंठाग्रस्त नहीं होंगे तथा एक-दूसरे का स्नेह-सम्मान करना सीखेंगे।

दोस्तों के बीच खाने-पीने के लिए किशोरों को कुछ जेब खर्च की आवश्यकता पड़ती है। कुछ पिता जेब-खर्च देने से कतराते हैं तो कुछ इतना अधिक जेब-खर्च दे देते हैं कि वे गलत-संगत में पड़कर नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। घर के पैसे चुराने की लत लग जाती है। उसके बाद अभिभावकों से झूठ बोलने का सिलसिला शुरू होता है। कभी-कभी वे अपने माता-पिता से विद्रोह भी कर बैठते हैं।

किशोर बेटियों के ऊपर तो बहुत अधिक अंकुश होते हैं। माता-पिता का अधिक प्रयास यह रहता है कि उन्हें कामकाज का प्रशिक्षण दें। लेकिन, जब उन्हें सिर्फ घरेलू काम-काज की जंजीरों से जकड़ देने का प्रयास होता है तो वे भी विद्रोह कर बैठती हैं। वे हीनता की भावना से ग्रसित होना नहीं चाहतीं। उन्हें लड़कों से नीचा क्यों समझा जाता है। यही सोचकर वे आहत हो उठती हैं, उनकी महत्वाकांक्षाओं पर रोक लगा दी जाती है।

समय के अनुरूप युवा वर्ग के पहनावे में भी परिवर्तन आया है। वे अपनी सुविधा के लिए अगर पैट-जॉस पहनते हैं तो हमें उनकी आलोचना नहीं करनी चाहिए।

समय और परिस्थिति के अनुसार नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में परस्पर तालमेल बैठाना भी आवश्यक है। हम अपने जमाने से उनकी तुलना न करें। हम अपने जमाने में भले ही सामाजिक नियमों की जंजीर में बंधे थे पर उसकी तस्वीर बार-बार सामने रखकर हम उनकी खीज के ही कारण बनेंगे। हमें भूलना होगा कि हमारे जमाने में क्या होता था।

आज हम जिस जमाने में हैं उसी के अनुरूप हमें स्वयं को ढालना आवश्यक है। हमें उन्हें उच्छृंखलता या उद्दंडता से दूर रखना आवश्यक है, पर केवल दोस्ताना रूप अपनाकर। हम अपनी इच्छाओं को उन पर जबर्दस्ती न ला दें बल्कि उनकी इच्छाओं को भी महत्व दें। उनका सही मूल्यांकन करें। जिस

विषय में उनका रुझान हो उसमें ही प्रोत्साहित करें। अपने लक्ष्य तक पहुँचने में उनकी सहायता करें।

आज की इस तनावग्रस्त जिन्दगी में किशोर पीढ़ी तेज संगीत या डांस करके स्वयं को तनाव-मुक्त करती है। संगीत की ताल पर अगर उनके पाँव थिरकते हैं तो इसे बुरा नहीं समझना चाहिए। लेकिन, इसकी भी एक सीमा और मर्यादा होनी चाहिए।

किशोर लड़कों और लड़कियों की मित्रता को गलत नहीं समझना चाहिए, बल्कि उनके सभी मित्रों से हमें भी मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए व उनके मित्रों को विशिष्ट अवसरों पर आमंत्रित करना चाहिए। हमें उनके साथ दूध में चीनी की तरह इस तरह से घुलमिल जाना चाहिए कि कहीं से भी कड़वाहट की बू उठने की गुंजाइश ही न रहे। आपकी पैनी एवं अनुभवी आँखें कभी धोखे में नहीं रह पाएँगी।

हमें अपनी किशोर संतानों को इतना प्यार देना चाहिए कि वे हम पर विश्वास कर सकें। हमें उनकी खिलखिलाहट में शामिल होना चाहिए। अगर हम उनके सुख-दुःख को बाँटेंगे तो वे हमारे मन के करीब आएँगे। उनकी मानसिक गुंथियाँ सुलझेंगी। हमें समझना चाहिए कि मानसिक स्थिति का असर स्वास्थ्य पर पड़ता है। मानसिक विकृतियाँ अनेक रोगों का कारण बनती हैं। इसलिए हमें उनका अकेलापन दूर करना चाहिए। हम जितने उनके करीब रहेंगे, उतनी ही उनकी भटकन समाप्त होगी। वे अपने परिवार के बीच अपनी खुशियों को तलाश लेंगे। अगर वे संगीत-प्रेमी हैं तो हमें उन्हें कभी-कभी गीत-संगीत की सीडी आदि खरीदकर देनी चाहिए।

आपकी बगिया सदा सुवासित रहे, इसके लिए दाम्पत्य-जीवन सुखद होना आवश्यक है। दाम्पत्य जीवन की मिठास से आकर्षित होकर अपने किशोर लड़के-लड़कियाँ आपके पास अधिक समय बिताना पसंद करेंगे। बदलते समय के साथ हमें स्वयं में बदलाव लाना आवश्यक है, अन्यथा रिश्तों में दरार पड़ते देर नहीं लगती।

कैशौर्य की दहलीज पर खड़े अपनी संतानों को फूलों की तह खिलने दें। आपकी थोड़ी सी लापरवाही से वे कुम्हला सकते हैं। उनकी जड़ें अगर जमीन छोड़ देंगी तो बाद में आप कितना भी पानी डालें, खाद डालें, सब व्यर्थ साबित होगा।

-हवेली ज्ञान द्वार

बी-68, सेठी कॉलोनी, जयपुर

मो. 08003097144

शिविर पंचांग

मई, 2014					
रवि	4	11	18	25	
सोम	5	12	19	26	
मंगल	6	13	20	27	
बुध	7	14	21	28	
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

मई, 2014 ● कार्य दिवस 14, रविवार 04, अवकाश 13, उत्सव 01 ● 7 मई-रवीन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव) 10 मई- परीक्षा परिणाम की घोषणा ● 12 मई-नवीन सत्रारम्भ, सत्र 2014-15 की प्रवेश प्रक्रिया एवं शिक्षण कार्य आरम्भ, सभी कक्षाओं के पूरक परीक्षार्थियों/कक्षा 10 में प्रविष्ट परीक्षार्थियों को आगामी कक्षा में प्रवेश देय, परन्तु कक्षा 12 में अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियों को परीक्षा परिणाम की घोषणा के 7 दिवस अथवा 15 जुलाई, 2014 तक जो भी बाद में हो, के अनुसार प्रवेश देय। 17 मई से 30 जून-ग्रीष्मावकाश। 31 मई-प्रताप जयन्ती (अवकाश उत्सव)

नोट :-1. कक्षा 9 व 11 की पूरक परीक्षा जुलाई, 2014 के प्रथम सप्ताह में आयोजित होगी। 2. संघनित पाठ्यक्रम, सीसीई, विषय-वस्तु आधारित प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे। 3. 1 मई से 15 मई केजीबीवी एवं मेवात बालिका आवासीय विद्यालयों में बालिकाओं के प्रवेश हेतु प्रीपेरेटरी कैम्प आयोजित करना। 4. 17 मई को ग्रीष्मावकाश आरम्भ होने पर संबंधित संस्था प्रधान स्थानीय वरिष्ठतम अध्यापक को ग्रीष्मावकाश में विद्यार्थी/अभिभावक द्वारा मांग करने पर टी.सी. जारी करने के लिए अधिकृत करके मुख्यालय छोड़ेंगे।

जून, 2014 ● कार्य दिवस 00, रविवार 05, अवकाश 25, उत्सव 01 ● 1-30 जून-ग्रीष्मावकाश। 3-5 जून-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता के लिए राज्य स्तर की पूर्व तैयारी। 6-8 जून-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। 28 जून-भामाशाह जयन्ती (राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह) नोट :-विषय-वस्तु आधारित प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे।



भामाशाह सम्मान समारोह'14

भामाशाह का प्रताप और प्रताप का शौर्य

□ सोहन लाल प्रजापति

विद्यालयी शिक्षा को उन्नत करने व छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शिक्षा के क्षेत्र में दानदाताओं द्वारा आर्थिक सहयोग देने की परंपरा प्रारंभ से ही रही है। देखने में आता है कि सैकड़ों वर्षों पहले शहरों और गांवों में अधिकांश शाला भवन सेठ साहूकारों-भामाशाहों द्वारा ही बनाए जाते थे। जो आज भी मौजूद हैं।

आदमी समाज से बहुत कुछ लेता है। आदमी समाज का ऋणी होता है। समझदार व उदारमना धनीमानी व्यक्ति इस ऋण से मुक्त होने के उद्देश्य से, प्रतिफल के रूप में, भावी समाज की उन्नति के लिए कुछ देते आ रहे हैं। लिया है तो देना भी चाहिए। छात्र-छात्राओं के हित में देने वालों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शिक्षा विभाग राजस्थान ने सन् 1995 से राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह प्रारंभ किया। एक निश्चित राशि से अधिक आर्थिक सहयोग देने वाले दानदाताओं का सम्मान करने के लिए राजस्थान का शिक्षा विभाग हर वर्ष भामाशाह जयन्ती 28 जून पर समारोह आयोजित करता है। इस समारोह में भामाशाहों का सम्मान किया जाता है। इस वर्ष 28 जून, 2014 को 20वां भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा।

भामाशाह सम्मान समारोह तो मनाया जाता है, परन्तु अधिकांश संभागीयों को यह ज्ञात नहीं है कि भामाशाह कौन थे? मोटे रूप में इतना ज्ञात है कि भामाशाह महाराणा प्रताप के कोषाध्यक्ष थे। धन की कमी पड़ने पर भामाशाह ने अपने निजी धन से महाराणा प्रताप की सहायता की थी। सैन्य संगठन के लिए महाराणा प्रताप को धन दिया था। इससे आगे बहुत ही कम लोग जानते हैं।

राजपूताना-राजस्थान के इतिहास में महाराणा प्रताप की वीरता, देशभक्ति एवं बहादुरी के साथ-साथ भामाशाह की दान-वीरता एवं त्याग का वर्णन भी स्वर्णाक्षरों में

अंकित है।

भामाशाह के पिता का नाम भारमल था। भारमल व भामाशाह कावड़िया ओसवाल जैन समुदाय से सम्बद्ध थे। भामाशाह के पूर्वज चित्तौड़ के शासकों से जुड़े हुए थे। जिन दिनों चित्तौड़ उन्नति पर था उन दिनों भामाशाह का परिवार सम्पन्न था।

राणा सांगा और बाबर के बीच युद्ध हुआ। यह युद्ध खानवा के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के बाद राणा सांगा के कई समर्थक सपरिवार उनके साथ चित्तौड़ में आकर बस गए थे। उन समर्थकों में जैन समुदाय का सदस्य भारमल भी था। भारमल राणा सांगा की वीरता से प्रभावित था। राणा सांगा ने भारमल की निष्ठा एवं लगन को देखकर उसे चित्तौड़ दुर्ग का किलेदार बना दिया। भारमल का पुत्र भामाशाह वीर एवं होनहार युवक था। उसे भी राणा ने अच्छे पद पर नियुक्त कर लिया। इस प्रकार भारमल का परिवार राणा की सेवाचाकरी से जुड़ गया।

आगे चलकर महाराणा प्रताप ने भामाशाह को अपनी सेना में सम्मिलित कर लिया। भामाशाह हल्दी घाटी के युद्ध में अपनी वीरता का परिचय देकर महाराणा प्रताप का विश्वासपात्र बन गया। भामाशाह की वीरता एवं योग्यता से प्रभावित होकर महाराणा प्रताप ने उसे मंत्रियों में शामिल कर लिया। महाराणा प्रताप ने भामाशाह को जो भी कार्य सौंपा भामाशाह ने उसे निष्ठा से पूरा किया। भामाशाह ने समय-समय पर वीरता, त्याग, स्वामिभक्ति, देशभक्ति का परिचय देकर महाराणा प्रताप का दिल जीत लिया। महाराणा प्रताप ने उसे अपना कोषाध्यक्ष बना दिया।

भामाशाह की संतान ने भी आगे चलकर राजघराने की निष्ठापूर्वक सेवा की। उनके पुत्र जीवाशाह तथा पोते अक्षयराज भी महाराणा प्रताप के पुत्र राजा अमरसिंह व राणा करणसिंह के प्रधानमंत्री रहे। भामाशाह का सारा परिवार राणा के परिवार के प्रति समर्पित था।

भामाशाह के हृदय में स्वामिभक्ति, देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। मुख्य बात यह थी कि भामाशाह महाराणा प्रताप के विश्वास पात्र थे। धन का लोभ नहीं था। कोषाध्यक्ष के पद पर रहते हुए पाई-पाई का हिसाब रखते थे। निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करते थे। उनका कार्य युद्ध के समय अस्त्र-शस्त्रों की व्यवस्था करना, रसद की व्यवस्था करना, सैनिकों के लिए वेतन आदि की व्यवस्था करना था। उन दिनों युद्ध होते ही रहते थे। युद्ध के समय धन की व्यवस्था करना उनका मुख्य कार्य था।

मुगलों के साथ निरंतर युद्ध करते रहने से महाराणा प्रताप का सारा धन समाप्त हो गया था। सेना छिन्न-भिन्न हो गई थी। महाराणा प्रताप सोच में पड़ गए। सोचने लगे धनाभाव में मेवाड़ की रक्षा कैसे कर सकेंगे? मुगलों की सेना का मुकाबला कैसे कर सकेंगे? मेवाड़ का क्या होगा? क्या मुगलों का शासन हो जाएगा? महाराणा प्रताप के सामने विकट समस्या थी। कठिनाइयों से घिरे महाराणा प्रताप की मनःस्थिति देखकर भामाशाह के दिल में स्वामिभक्ति का भाव जागा। वे अपना सारा धन छकड़ों में भरकर महाराणा प्रताप के पास पहुंचे। 'महाराणा प्रताप' नामक पुस्तक के लेखक लिखते हैं "भामाशाह जितना धन दे रहे थे उस धन से बीस हजार सैनिकों को 14 वर्षों तक वेतन दिया जा सकता था।" भामाशाह की त्याग भावना एवं धन को देखकर उपस्थित सामंत दंग रह गए।

भामाशाह ने महाराणा से निवेदन किया, "यद्यपि आप का कोष खाली हो गया है परन्तु आपका दिया यह मेरा कोष आपका ही है। आप इस धन से अस्त्र-शस्त्रों की व्यवस्था करने व सैनिकों की व्यवस्था करने का आदेश दीजिए। मुगलों से संघर्ष जारी रखें। मेवाड़ की आजादी के कार्य में मैं भी पीछे क्यों रहूँ? यदि मेवाड़ पराधीन हो जाएगा तो मेरा यह धन मुगलों के हाथ में

चला जाएगा। आप इस धन का उपयोग मेवाड़ की आजादी में कर मुझे उपकृत करें।”

भामाशाह के त्याग व स्वाभिमान को देखकर महाराणा प्रताप स्तब्ध रह गए। महाराणा प्रताप ने कहा, “भामाशाह ! तुम्हारी देशभक्ति, स्वामिभक्ति और त्याग भावना को देखकर मैं अभिभूत हूं। परन्तु एक शासक होते हुए मेरे द्वारा वेतन के रूप में दिए गए धन को पुनः मैं कैसे ले सकता हूं ? राजा की तरफ से सेवा के उपलक्ष्य में दिया धन क्या वापस लिया जा सकता है ? मेरा स्वाभिमान मुझे स्वीकृति नहीं देता।”

भामाशाह ने निवेदन किया, “स्वामी ! यह धन मैं आपको नहीं दे रहा हूं। मातृ भूमि की रक्षार्थ मेवाड़ की प्रजा को दे रहा हूं—लड़ने वाले सैनिकों को दे रहा हूं। आप पर संकट आया हुआ है—मातृभूमि पर संकट आया हुआ है। धन के अभाव में आप जंगलों में इधर-उधर घूम रहे हैं। कष्ट भोग रहे हैं और मैं आराम से घर बैठ कर इस धन का उपयोग करूँ। यह कैसे संभव है ? मातृभूमि पराधीन हो जाएगी। मुगलों का शासन हो जाएगा। जाति-धर्म, मान-मर्यादा, आचार-विचार, जीवनादर्श जब नष्ट हो जाएंगे तब यह धन किस काम आएगा ? अतः आपसे आग्रह है कि आप इस धन से अस्त्र-शस्त्रों एवं सेना का गठन कर मुगलों से संघर्ष जारी रखें।”

अन्य सामन्तों एवं सहयोगियों ने भामाशाह की बात का समर्थन किया। सभी ने एक मत से आग्रह किया कि संकट के समय प्रजा से धन लेना गलत नहीं है।

सामन्तों के आग्रह पर महाराणा प्रताप ने भामाशाह के धन से सैन्य संगठन प्रारंभ किया। निराशा की स्थिति में अकबर को भेजे पत्र का जवाब भी पृथ्वीराज की तरफ से आ गया था। पृथ्वीराज के पत्र ने महाराणा को उत्साहित किया। धन प्राप्त हो गया। सैन्य दल संगठित किया। मेवाड़वासियों, वीरों में एक नई चेतना—नई स्फूर्ति जागी। अकबर की चुनौती का सामना करने के लिए मातृभूमि की रक्षार्थ मैदान में उतर आए रण भैरवी बज उठी। शंख ध्वनि पुनः गूंजने लगी।

देवार के युद्ध में महाराणा प्रताप ने विजय पाई। शाहबाज के नेतृत्व में आई अकबर की सेना भाग खड़ी हुई। मालपुरा और कुंभलमेर पर भी महाराणा प्रताप ने अधिकार कर लिया। मानसिंह ने किनसहरा किले को जीतने के लिए महावतखान के नेतृत्व में 10 हजार सैनिक भेजे। महावतखान ने किनसहरा के किले की दीवार तोपों के गोलों से तोड़ दी। मुगल सैनिक किले में घुसने ही वाले थे कि महाराणा प्रताप ने उस पर दो तरफ से हमला कर दिया। मुगल सेना दो पाटों के बीच में आ गई। महावत खान को कैद कर लिया। इस युद्ध में मुगल सेना के आठ हजार सैनिक मारे गए। महाराणा प्रताप ने उदारता दिखाते हुए महावतखान को मुक्त कर कहा, “अपने मुखिया मानसिंह को युद्ध का सारा हाल बताना और कहना कि प्रताप युद्ध भूमि में तुम्हारे से मिलने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है।”

यह सब भामाशाह के आर्थिक सहयोग से ही संभव हुआ। धर्मशास्त्रों में दान का बड़ा महत्व बताया है। दान आदमी को अमर बना देता है। उदारमना दानदाताओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से ही हर वर्ष 28 जून को भामाशाह की जयन्ती पर हम भामाशाह सम्मान समारोह मनाते हैं। दानदाताओं को सम्मानित करते हैं।

—कारगवाल कुटीर, पो. छापरा (चूरू)
मो. 9166208243

गीता चिन्तन

गीता सार्वकालिक, सार्वभौमिक है

□ पी.डी. सिंह

श्री मद्भगवद्गीता की मान्यता एवं महत्व लगभग पाँच हजार वर्ष से भारत में तो एक विशेष प्रभाव, विशेष प्रतिष्ठा तथा एक विशिष्ट अध्यात्म ग्रन्थ के रूप में स्थापित है ही, साथ ही पाश्चात्य जगत को इस दिव्य ज्ञान-ग्रन्थ का परिचय मिला लगभग 230 वर्ष पूर्व जबकि सन् 1785 में सर चार्ल्स विलकिन्स द्वारा लिखित गीता का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक के प्राक्कथन में ईस्ट इंडिया कम्पनी के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड वारेन हेस्टिंग्स ने लिखा था—



- गीता की प्राचीनता और इसके प्रति व्याप्त श्रद्धाभाव जो कि विशाल मानव समुदाय (भारत) में शताब्दियों से चला आ रहा है, उसने अब विश्व साहित्य में प्रवेश पा लिया है। गीता में अन्तर्निहित विशिष्ट ज्ञान की ज्योति की चमक से अब पश्चिमी जगत भी प्रभावित होने लगा है। इसकी साहित्यिक उत्कृष्टता अनुपम है। गीता के अध्ययन, मनन—चिन्तन से अंग्रेज ही नहीं समग्र मानव जाति लाभान्वित होगी।
- हिन्दू धर्म के प्रामाणिक उच्चस्तरीय ग्रन्थों में गीता सर्वोपरि है। यह अपने ढंग का अद्वितीय ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ प्रमाणित करता है कि नैतिक विकास, साहित्य सृजन तथा पौराणिक रहस्यों को उजागर करने में हिन्दू धर्म के मनीषी रचनाकारों ने युक्तियुक्त चिन्तन, दर्शन की महान ऊँचाइयों को छू लिया है।
- गीता में अध्यात्म दर्शन की ऐसी विशिष्टता प्रस्तुत हुई है जिससे यूरोप के संत एवं प्रबुद्ध चिंतक अनभिज्ञ हैं। मुख्य सिद्धांत जिसका यह पुस्तक निरूपण करती है, वह है अध्यात्म दर्शन का चिन्तन, मनन की मौलिकता, गहराई, इसका दार्शनिक तत्त्व विवेचन तथा इसके अकाट्य तर्क और प्रस्तुति कौशल। ये सब अभूतपूर्व एवं असाधारण हैं।

गीता आध्यात्मिक ज्ञान या संदेश का एक शाश्वत स्रोत है। ब्रिटिश साम्राज्य ने जो शक्ति और सम्पदा भारत में अर्जित की है, इसके क्षीण होने पर भी गीता का संदेश, गीता का प्रभाव सभी लोगों के मन—मस्तिष्क में सदैव विद्यमान रहेगा।

विश्व की 60 से भी अधिक प्रमुख भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है। आदिशंकराचार्य की टीका को गीता की सर्वाधिक आधिकारिक टीका माना जाता है। अन्य टीकाओं में प्रमुख हैं रामानुज, मध्व, बल्लभ, निम्बार्क, ज्ञानेश्वर, नीलकण्ठ, मधुसूदन सरस्वती,

शंकरानंद, श्रीधर स्वामी, विज्ञान भिक्षु, केशव भट्ट और जयदयाल गोयन्दका। इसके पश्चात् लोकमान्य तिलक, श्री अरविन्द, आचार्य विनोबा भावे, स्वामी रामसुखदास जी एवं स्वामी प्रभुपाद जी। 'इंटरनेशनल सोसायटी फॉर कृष्णा कॉन्सासनेस' ने गीता के रशियन, स्पेनिश, फ्रेंच, जर्मन एवं चीनी इत्यादि अनेक भाषाओं में अनुवाद कराये हैं।

गीता के रचनाकार महर्षि व्यास ने गीता को ब्रह्मविद्या का विश्लेषक उपनिषद् बताया है। ब्रह्मविद्या योगशास्त्र का ही अंग है और यह परमब्रह्म परमेश्वर का ज्ञान है जो कि ब्रह्मांड का चरम सत्य है। योगशास्त्र, ध्यान और चिन्तन का विज्ञान है और परमात्मा से एकात्मता की ओर निर्दिष्ट है। गीता का सार्वकालिक, सार्वभौमिक, वैश्विक प्रभाव इस तथ्य पर आधारित है कि गीता किसी धर्म विशेष का ग्रन्थ न होकर धार्मिक संकीर्णता एवं कट्टरता से परे समग्र मानव कल्याण के लिये है। भगवान ने गीता में स्वयं कहा है-

**यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।**

अर्थात् जो सकाम भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ। जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ, क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं (4-11)।

इस प्रकार के उदार दृष्टिकोण, सर्वधर्म समन्वय और कर्म, भक्ति, ज्ञान का महत्व एवं स्वरूप आत्मसात किये जाने की दृष्टि से गीता उच्च कोटि का दर्शन शास्त्र है और इस दर्शन का प्रायोगिक एवं क्रियात्मक रूप है। गीता ज्ञान न केवल उपदेशात्मक है अपितु मानव मात्र के लिए सुखमय, सार्थक जीवन जीने का व्यावहारिक मार्ग एवं प्रभावी दिशाबोध है।

-निदेशक, टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स,
शास्त्री नगर, जयपुर-302016
मो. 9829014513

बुद्धिमान मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है किन्तु और अधिक बुद्धिमान दूसरों के अनुभवों से सीखता है।

-चीनी कहावत

चिन्तन

पूरा विश्व हो एक परिवार

□ डॉ. सत्य प्रकाश आचार्य

शिक्षा का एक अहम् उद्देश्य यह है कि शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति में विश्व को समझने की क्षमता बढ़े। इस विशाल विश्व में उसे स्वयं की भूमिका का अहसास होना चाहिए। एक तरफ विशाल विश्व है तो दूसरी तरफ वह एक इकाई के रूप में है। समुद्र में एक बूंद वैसे तो कुछ नहीं लगती मगर इसके पलट यह भी तो सत्य है कि बूंद-बूंद से समुद्र बनता है। समुद्र की शुरुआत एक बूंद पानी से होती है, ठीक वैसे ही जैसे हजारों किलोमीटर लम्बी यात्रा की शुरुआत एक कदम से होती है। (Journey of thousand kilometers begins with a single step)

विश्व को समझने से यहां आशय उसके उसके प्रति अमृत भाव रखने से हैं। तु वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् पूरी धरती एक ही परिवार है। वस्तुतः यह दर्शन भारतीय चिन्तन के मूल में रहा है। इसमें श्रद्धा व आस्था दो अहम् स्तम्भ बनते हैं। भारत का विश्व को घोष है-

**सर्वेभवंतु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भागवेत ॥**

(अर्थात् पृथ्वी पर निवास करने वाले सब लोग सुखी हों, सभी निरोगी हों, सब प्रसन्न हो और किसी को भी किंचित दुःख-तकलीफ न हो)

सम्पूर्ण पृथ्वी को एक ही परिवार मानकर चलने का संदेश देने के लिए प्रतिवर्ष 15 मई को विश्व कुटुम्ब दिवस मनाया जाता है। एकल जीवन के आसन्न खतरे से मुकाबला करने के लिए कुटुम्ब जीवन का मंगल संदेश देने का आह्वान यह दिवस करता है। शिक्षा व शिक्षकों के लिए इसका विशेष महत्व है। कुटुम्ब की बुनियाद पारस्परिक विश्वास, स्नेह, सहयोग, समन्वय जैसे उदात्त गुणों से सींची हुई होनी चाहिए। परिवार के सभी सदस्यों के बीच विश्वास की मजबूत डोर बंधी हुई होनी चाहिए। वे परस्पर एक दूसरे का सम्मान करते हुए आगे बढ़ें।

घर के विविध कार्यक्रमों में सभी परिवारजन की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए एवं अन्य शुभ कार्यों के समय उन सम्बन्धियों को

अवश्य आमंत्रित करें जिनसे असें से मिलना नहीं हो पाया है। आमंत्रित रिश्तेदारों में से जो आ नहीं सके उन्हें आयोजन के उपरान्त यह अवश्य बताएं कि आपने उनका कितना इन्तजार किया। ऐसा करने से रिश्तों की ऊष्मा बढ़कर आनन्द प्रदान करती है।

आज के इंटरनेट व वेब के क्रान्तिकारी समय में पत्रों का स्थान फोन, एस.एम.एस. आदि ने ले लिया है, मगर पत्रों में छिपी आत्मीयता तो पत्र ही बता सकते हैं। किसी को 25 पैसे का पोस्ट कार्ड लिखकर अथवा किसी से पाकर आपको जो प्रसन्नता होती है, उसका मुकाबला ये ई-संदेश नहीं कर सकते।

कुटुम्ब में साथ रहने से (संयुक्त परिवार) बच्चों को परिवार की अहमियत का बेहतर अहसास हो जाता है। बच्चे सम्बन्धों और उन से आत्मीयता को उचित महत्व देना सीख जाते हैं जो उनके जीवन भर काम आती है।

रेडीमेड महंगे गारमेन्ट कपड़ों में वह आत्मीयता कहां है जो वर्षों पहले हमने अपने बचपन में मामा-भूवा-मासी, भाई-बहनों के पुराने छोटे हो गए कपड़े पहन कर प्राप्त की थी। आज भी हम उन बड़े हो गए व्यक्तियों के साथ अपना रिश्ता इस फख के साथ व्यक्त करते हैं कि हमने उनके पुराने कपड़े पहने थे। भले ही आज के बच्चे नए बस्ते, नई पुस्तकें लेकर पढ़ने जाते हैं, मगर पुरानी पीढ़ी के जिन लोगों ने रिश्तेदारों/मित्रों/पड़ोसियों के बच्चों की पुरानी किताबें लेकर पढ़ाई की थी, उसे याद करके वे गौरवान्वित महसूस करते हैं। इस संबंध में एक कहानी है जिससे प्रेम और भाईचारे का महत्व स्पष्ट होता है-एक था राजा। उसका मंत्री बहुत बुद्धिमान था। एक दिन बातचीत में राजा ने मंत्री से पूछा, “मंत्रीजी! जरा बताइए कि कुत्तों के झुंड क्यों नहीं दिखते जबकि भेड़ों के झुंड बड़े बड़े दैवतों की मिलते हैं। हालांकि कुत्तों के भेड़ों से अधिक बच्चे होते हैं।”

मंत्री बोला, “महाराज! कल

आपके प्रश्न का उत्तर दूँगा” फिर वह राजा की लेकर महल के पूर्वी हिस्से में पहुँचा। वहाँ उसने एक कोठरी में बीस कुत्ते बंद करवा दिए और उनके बीच बोटियों से भरी एक टोकरी बँध दी। फिर मंत्री ने दूसरी कोठरी में बीस भेड़ें बँध करवा दीं और उनके बीच चाँद की एक टोकरी बँध दी। ऐसा करने के बाद दोनों लौट आए। अगली सुबह दोनों वहाँ पहुँचे। राजा ने देखा कि सभी कुत्ते मरे पड़े हैं और उनके बीच बँधी बोटियों की टोकरी भी की बरी बँधी है। कुत्ते बोटियों के लिए आपस में लड़कर मरे गए। दूसरी कोठरी में सभी भेड़ें एक-दूसरे पर अपना मुँह बँधकर मरी बँधी थीं और चाँद की टोकरी बँधी थी।

तब मंत्री ने कहा, राजा! कुत्तों में एकता और भाईचारा नहीं है, इसलिए मिल-बाँटकर बोटियों के बंधन पर वे लड़कर मरे गए। परंपर द्वेष उन्हें झुंड में नहीं रहने देता, जबकि भेड़ों में एकता और बनेह के कारण उनका दंश समूह दिव्याई देता है। वे समूह में रहती हैं। इसलिए उन्होंने प्रेम से मिल-जुलकर चाँद बढ़ाया और अब आराम कर रही है।

राजा की अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। परंपर बनेह और सहयोग से उद्धति होती है, जबकि ईर्ष्या-द्वेष और अहंयोग से अवतति, इसलिए यहाँ भी बनेह, प्रेम और भाईचारे से बनेह। इसी में समूह का हित निहित है।

हमें भी चाहिए कि समाज में रहते हुए हम परस्पर प्रेम और भाईचारे के साथ रहे। इससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के जीवन में खुशहाली आ सकती है। वर्तमान दौर में जब स्वार्थरायणता एवं आपाधापी सिर चढ़कर बोल रही है, संयुक्त परिवार एवं सामाजिक समरसता का पाठ स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों को अवश्य पढ़ाया जाना चाहिए।

(लेखक राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के सचिव रहे हैं)

—सुरसागर के पास, धोबी घोरा,
बीकानेर-334001
मो. 09414283821

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

सैनिकों की धरा : झुन्डुनू

□ मनजीत सिंह तंवर

भा रत की आन, राजस्थान की शान और शेखावाटी का सिरमौर है झुन्डुनू जिला। अरावली पर्वत माला से परिवेष्टित इसके दक्षिणी-पूर्वी भाग को प्रकृति ने सजलता मूलक झरनों, पवाहों और फल-फूलों की सघनता से मृगारित किया है तो कुदरत ने इसके उत्तरी-पश्चिमी भाग को स्वर्णिम रेत के धोरों की सौगात प्रदान की है।

झुन्डुनू जिले में उत्तराखण्ड जैसी सजलता और पर्वतीय हरियाली का वैभव है तो पुरानी हवेलियों में भारतवर्ष की कला, संस्कृति, साहित्य और नाना प्रकार की जीवनशैली को प्रतिबिम्बित करने वाले इन्द्रधनुषी भित्ति चित्रों को नयन प्रिय झाँकी भी अंकित है। गगनचुम्बी राजप्रासादों के दर-ओ-दीवार जहाँ इतिहास के उतार-चढ़ाव की गाथाओं का बखान करते प्रतीत होते हैं वही कलात्मक मीनारों वाले कुओं, आकर्षक छतरियों, विशालकाय बावड़ियों, नयनाभिराम जोहड़ों व तालाबों तथा ऐतिहासिक किलों और स्मारकों में छपा यहाँ का गौरवशाली अतीत स्वयं अपने आप में एक अविस्मरणीय दस्तावेज के समान परिलक्षित होता है।

झुन्डुनू जिले को भारतीय सेनाओं में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी का गौरव प्राप्त है। इस धरती के लाडलों ने मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान और बहादुरी के कीर्तिमान स्थापित किये हैं तथा 1948 में जम्मू-कश्मीर की रक्षा से लेकर 1999 में कारगिल (ऑपरेशन विजय) संघर्ष तक अपनी वीरता और शहादत के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इसी माटी में जन्मे और पले धनपतियों ने राष्ट्र के औद्योगिक और आर्थिक विकास से जहाँ नित नये आयाम स्थापित किये वहीं विषम परिस्थितियों में यहाँ के मेहनतकश किसानों ने अपने श्रम साध्य जीवन की अनुकरणीयशैली प्रस्तुत की है। झुन्डुनू जिले के साहित्यकारों और

कलाकारों ने इस माटी की गंध को परवान चढ़ाने तथा यहाँ के आचार-विचार और संस्कारों को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रशंसनीय योगदान दिया है। चंग और गिन्दड़ लोक नृत्यों की स्वर लहरियों, अलगोजों के स्वरों तथा सामाजिक उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में न केवल कर्णप्रियता है अपितु समृद्ध लोक परम्पराओं का अनूठा दिग्दर्शन भी है।

यहाँ की मातृशक्ति ने स्त्री शिक्षा प्रसार



की ऊँचाईयों को छूकर पिछड़े हुये महिला समाज को प्रेरणा प्रदान की है तो ग्रामीण परिवेश में पल-बढ़ कर यहाँ के खिलाड़ियों ने भी इस धरती का मान बढ़ाया है।

धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव से अनुप्राणित, नयनप्रिय पर्यटकीय वैभव से अलंकृत, देश प्रेम और समाज सुधार की अनुकरणीय भावना से पल्लवित, समृद्धशाली लोक संस्कृति से विभूषित, श्रम और स्वाभिमान भरे व्यक्तित्व से अंगोंत तथा शिक्षा, विकास और प्रगतिशीलता से आल्हादित झुन्डुनू जिले का गौरव एक सम्पूर्ण और समग्र परिवेश का परिचायक है। इस माटी के कण-कण में शौर्य, संघर्ष, स्वाभिमान और सरसता की गंध विद्यमान है। इस माटी को यहाँ के कण-कण को और यहाँ के जन-जन को शत-शत नमन।

भौगोलिक स्थिति : झुन्डुनू जिला 27°.5 से 28°.5 उत्तरी अक्षांश तथा 75° से 76° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले के

दक्षिणी-पश्चिमी भाग में सीकर जिले के उत्तर में चूरू और पूर्व में हरियाणा राज्य की सीमायें हैं।

शेखावाटी का किसान आन्दोलन: जिस समय देश के लाखों नर-नारी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे। उस समय राजस्थान के शेखावाटी जनपद के लोग जागीरदारों के जुलूम के विरुद्ध मोर्चा लिये हुये थे। अंग्रेजों, सामन्तों और जागीरदारों के विरुद्ध लड़ने वाले झुन्डुनू जिले के लोगों को एक साथ तीन मोर्चों पर लड़ाई लड़नी पड़ी, ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता। यह एक विडम्बना ही रही कि शेखावाटी वासियों को तीन मोर्चों पर लड़ी गई इस लड़ाई के साहस वीरता और बलिदान से ओतप्रोत प्रसंग अभी तक अनछूये पड़े हैं। झुन्डुनू जिले के लोगों ने जागीरदारों के विरुद्ध जेहाद छेड़कर नाना प्रकार की लाग-बाग और भेंट-बेगार का डट कर न केवल मुकाबला किया अपितु यातनाएं सही और बलिदान दिया। जिले में चला यह किसान आन्दोलन लोक जागरण और समाज सुधार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था। स्वतन्त्रता संग्राम के समय इस क्षेत्र में किसान आन्दोलन और प्रजा मण्डल आन्दोलन के जरिये यहां के पुरुषों ने ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया जो एक अनुकरणीय ऐतिहासिक मिसाल है। आजाद हिन्द फौज और नाविक विद्रोह में भी यहां के लोगों की सक्रिय भागीदारी रही।

महामनाओं का झुन्डुनू से रिश्ता : महान युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द का झुन्डुनू जिले के तत्कालीन खेतड़ी ठिकाने से प्रगाढ़ रिश्ता था। शिकागो में हुये विश्व धर्म संसद में भाग लेने के समय खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह ने उनकी आर्थिक मदद की थी। खेतड़ी के महाराज के साथ उनके पारिवारिक सम्बन्ध बन गये थे। स्वामीजी को विवेकानन्द नाम, खेतड़ी की ही देन थी। वे अपने जीवनकाल में तीन बार खेतड़ी प्रवास पर आये।

पंडित मोतीलाल नेहरू का भी खेतड़ी से गहरा नाता था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा खेतड़ी में ही हुई थी। इतिहास में लोक कल्याणकारी शासक के रूप में विख्यात हुये शेरशाह सूरी का सम्बन्ध खेतड़ी के निकट स्थित शिमला गांव से बताया जाता है। शेरशाह सूरी ने इस गांव में सैकड़ों कुएं खुदवाये जिनके अवशेष आज भी शिमला में

विद्यमान है और इस गांव के नागरिक आज भी शेरशाह सूरी के इस कार्य की वाहवाही देते हैं।

देश के अनेकानेक सेठ साहूकारों की यह पितृ भूमि रही हैं। बिड़ला, डालमिया, सिधानिया, पोद्दार, लोयलका, कानोडिया, गोयनका पीरामल, काजडिया आदि धनपतियों के घराने झुन्डुनू की देन है जो आज सम्पूर्ण देश और विदेश में अर्थ जगत की धुरी बने हुये हैं।

पर्यटन वैभव : राजस्थान के शेखावाटी जनपद का मुख्य स्थल झुन्डुनू जिला पर्यटन की दृष्टि से एक समृद्ध जिला है। यहां अरावली पर्वत शृंखला की गोद में लोहारगल और किरोड़ी जैसे सजल, सुरम्य और सुदर्शनशील स्थल है तो नवलगढ़, मण्डावा, महनसर, झुन्डुनू, डूण्डोलोड, पिलानी, बिसाऊ, मुकुन्दगढ़ चूड़ी अजीतगढ़ बगड़, काजड़ा से पांच किलोमीटर का एक पृथक रास्ता लोहारगल के लिए जाता है। प्रशासनिक दृष्टि से यह नवलगढ़ पंचायत समिति का एक ग्राम पंचायत मुख्यालय है। लगभग 70 मन्दिर, मालकेत और बरखण्डी शिखर, सूर्यकुण्ड आदि के साथ-साथ यहां का अनुपम प्रौतिक सौन्दर्य दर्शनीय है। भाद्रपद माह में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक हर वर्ष लोहारगल के पहाड़ों में हजारों-लाखों नर-नारी पद परिक्रमा करते हैं और अमावस्या के रोज सूर्यकुण्ड में पवित्र स्नान के साथ यह “फेरी” विधिवत सम्पन्न होती है।

किरोड़ी : जिला मुख्यालय से यह स्थान 55-60 किलोमीटर दूर है। अरावली पर्वत माला की गोद में बसा किरोड़ी एक रमणीक स्थल है जिसने वनस्पति और सौन्दर्य सम्पदा से मालामाल कर रखा है। आम, नींबू, जामुन और बिल-पत्र के वृक्षों की तो बहुतायत है ही साथ ही केवड़े के दुर्लभ वृक्ष भी किरोड़ी में उपलब्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से यहां उदयपुरवाटी के दानवीर शासक टोडरमल और उनके वित्त मंत्री मुनशाह के स्मारक हैं। एक तरफ विष्णु का मन्दिर है तो दूसरी तरफ पीर बाबा की दरगाह भी है। शीत और गुनगुने निर्मल जल के तीन कुण्ड हैं, जिनमें गन्धक का मिश्रण बताया जाता है। किरोड़ी तक पहुंचने का रास्ता बड़ा दुर्गम था किन्तु अब सड़क बन जाने से यह समस्या भी हल हो गई है।

नरहड़ दरगाह : झुन्डुनू से चालीस किलोमीटर दूर जयपुर-पिलानी सड़क मार्ग पर

चिड़ावा से आठ किलोमीटर आगे पिलानी की ओर देवरोड़ नामक स्थान है जहां से दो किलोमीटर लम्बा एक अलग सड़क मार्ग नरहड़ दरगाह तक जाता है। यह स्थान न केवल शेखावटी और राजस्थान का अपितु भारतवर्ष का एक गौरवशाली स्थल है। यहां हर वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर शककर पीर बाबा का मेला भरता है। नरहड़ में शककर पीर बाबा की ऐतिहासिक दरगाह है जहां हिन्दु और मुस्लिम दोनों बड़ी श्रद्धा के साथ आते हैं।

विशाल एवं भव्य बुलन्द दरवाजे से होकर दरगाह शरीफ तक पहुंचा जाता है जहां एक आयताकार चौक में मानसिकवृत्ति वाले लोगों के शरीर पर पवित्र मिट्टी रगड़ी जाती है। कहते हैं, ऐसा करने पर उन्हें विश्वासवस्था से मुक्ति मिल जाती है। यह स्थान चिड़ावा पंचायत समिति का ग्राम पंचायत मुख्यालय है और यहां यात्रियों के आवास के लिए धर्मशाला और तिबारे बने हुए हैं।

खेतड़ी : प्राचीन शेखावटी का सबसे बड़ा ठिकाना खेतड़ी भारत की ताम्र नगरी के नाम से जाना जाता है। झुन्डुनू से 70 तथा दिल्ली से 180 किमी. की दूरी पर स्थित यह स्थान दिल्ली, जयपुर और झुन्डुनू से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। अरावली के गर्भ में करीब 75 किलोमीटर लम्बी ताम्र पट्टी छिपी हुई है। इस सम्पूर्ण पट्टी के ऊपरी छोर पर खेतड़ी नगर के बीच करीब आठ किमी. का फासला है। खेतड़ी नगर जहां ताम्बा उपक्रम के कारण देश के कोने-कोने से आये खनन कर्मियों का निवास स्थल है वहीं पुराना खेतड़ी कस्बा अपनी ऐतिहासिक पहचान के कारण दर्शनीय है। खेतड़ी में रामकृष्ण मिशन का मठ, भोपालगढ़ का दुर्ग, पन्नालाल शाह का तालाब, अजीतसागर, बागोर का किला, भटियानीजी का मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल है। अरावली पर्वत शृंखला ने खेतड़ी को अपनी बाहों में समेटा हुआ है।

टीबा-बसई : खेतड़ी के निकट हरियाणा राज्य की सीमा पर जिले का टीबा-बसई गांव है जहां बाबा रामेश्वरदास का मन्दिर दर्शनीय है। इस मंदिर में अति विशाल मूर्तियां, दीवारों पर अंकित गीता व अन्य धर्म ग्रन्थों के पवित्र श्लोक और मंदिर के विशाल परिसर की भव्यता एक अपूर्व झांकी के समान है। आदि कस्बों में सेठ-साहूकारों की डेढ़ सौ से ढाई सौ

वर्ष पुरानी हवेलियों में चिताकर्षक भित्ति चित्रों का वैभव देखने लायक है।

झुन्झुनू जिले में मण्डावा, मुकुन्दगढ़, डूण्डलोद, महनसर, खेतड़ी, बिसाऊ आदि के ऐतिहासिक किलो और राज प्रसाद, अलसीसर, मलसीसर, झुन्झुनू, परसरामपुर, उदयपुरवाटी, गांगियासर आदि स्थानों पर स्थित कलात्मक कुएं, बावड़ी व छतरियों नरहड़, झुन्झुनू चिड़ावा नवलगढ़, लोहार्गल, किरोडी, डाबडी धाम, मण्डावा, टीबा बसई आदि स्थानों पर स्थित ऐतिहासिक एवं कलात्मक मंदिर व दरगाह जिले के गांवों और कस्बों में बने पुराने तालाब व जोहड़ तथा होटल हेरीटेज परम्परा को प्रतिबिम्बित करते राजप्रसाद इन दिनों स्वदेशी व विदेशी सैलानियों की नजरों में आनन-फानन कैद होने वाले दर्शनीय स्थल है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : इतिहासवेत्ता हरनाथ सिंह के अनुसार झुन्झुनू को कब और किसने बसाया, इसका स्पष्ट विवरण नहीं मिलता। उनके अनुसार पांचवी-छठी शताब्दी में गुर्जर के काल में झुन्झुनू बसाया गया था। आठवीं शताब्दी में चौहान शासकों के काल का अध्ययन करते हैं तो उसमें झुन्झुनू के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है। डॉ. दशरथ शर्मा ने तेरहवीं शताब्दी के कस्बों की जो सूची जारी की है उसमें भी झुन्झुनू का नाम है। इसी प्रकार “अनन्त” और “बागड़” राज्यों के उल्लेख में भी झुन्झुनू का अस्तित्व कायम था।

सुलतान फिरोज तुगलक ई.सन् 1351-1388 के बाद कायम खानी वंशज अस्तित्व में आये। कहते हैं कि कायम खां के बेटे मुहम्मद खां ने झुन्झुनू में अपना राज्य कायम किया। इसके बाद लगातार यह क्षेत्र कायमशानी नवाबों के आधिपत्य में रहा। एक उल्लेख यह भी है कि सन् 1451-1488 के बीच झुंझा जाट ने झुन्झुनू को बसाया।

झुन्झुनू का अन्तिम नवाब रूहेल खां था जो आस-पास के अपने ही वंश के नवाबों से प्रताड़ित था। ऐसे में उसने शार्दूल सिंह शेखावत को झुन्झुनू बुला लिया। रूहेल खां की मृत्यु के बाद विक्रम संवत् 1787 में झुन्झुनू पर शेखावत राजपूतों का आधिपत्य हो गया। उनकी सत्ता जागीर अधिग्रहण तक चलती रही।

झुन्झुनू जिला राजस्थान के शेखावाटी जनपद का प्रमुख जिला है। इतिहासकार

मोहनसिंह लिखते हैं कि जयपुर राज्य की सबसे बड़ी निजामत शेखावाटी थी जिसमें वर्तमान झुन्झुनू और सीकर जिलों की सम्पूर्ण सीमाएं थी। शेखावाटी निजामत का कार्यालय झुन्झुनू था। सन् 1834 में झुन्झुनू में मेजर हेनरी फोस्टर ने एक फौज का गठन किया था जिसका नाम शेखावाटी ब्रिगेड रखा गया था। झुन्झुनू में जिस जगह यह फौज रहती थी वह इलाका आज भी छावना बाजार और छावनी मोहल्ला कहलाता है।

दर्शनीय स्थल

लोहार्गल : झुन्झुनू जिले के दक्षिण में जिला मुख्यालय से करीब साठ किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित यह पवित्र स्थान सीकर-नीम का थाना सड़क मार्ग पर सीकर से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। इस मार्ग पर गोल्याणा बस स्टेंड से पांच किलोमीटर का एक पृथक रास्ता लोहार्गल के लिए जाता है। प्रशासनिक दृष्टि से यह नवलगढ़ पंचायत समिति का एक ग्राम पंचायत मुख्यालय है।

काजड़ा : अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त काजड़िया टाईल्स के मालिक मूलतः इसी गांव के हैं। यहां पर इस काजड़िया परिवार की बड़ी छः हवेलियां हैं जो भित्ति चित्रों के लिए व एक संगमरमर के पत्थर से बनी होने के लिए प्रसिद्ध है। कागड़ा ग्राम व कस्बे का मिलाजुला रूप है। झुन्झुनू जिले का जवाहर नवोदय विद्यालय इसी गांव में 17.5 हैक्टेयर भूमि पर बना हुआ है जो सुन्दरता में चार चांद लगा रहा है। यहां पर इन्दिरा गांधी सार्क पार्क, महादेव मंदिर, माता रेजड़ी मंदिर, राधा कृष्ण मन्दिर, तालाब, बगीची, कबूतर खाना, छतरियां दर्शनीय स्थल हैं। यहां पर दो महाविद्यालय व 7 शिक्षण संस्थायें संचालित हैं।

पिलानी : तकनीकी शिक्षा का राष्ट्रीय सिरमौर पिलानी न केवल झुन्झुनू का अपितु पूरे देश का गौरव स्थल है। देश के विभिन्न राज्यों से विद्या अध्ययन के लिए आने वाले छात्र-छात्राओं ने पिलानी में विद्याविहार परिसर को एक लघु भारत का स्वरूप दे दिया है। पिलानी में भारत सरकार एक उपक्रम केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान सीरी भी है जो देश के विज्ञान और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

पिलानी का बिरला म्युजियम एशिया के अग्रणी संग्रहालयों में अपना स्थान रखता है तो

बिरला हवेली में बिरला परिवार की ऐतिहासिकता से साक्षात्कार कराने वाला संग्रहालय भी दर्शनीय है। पंचवटी परिसर में मातुराम वर्मा द्वारा बनाई और तराशी गई सजीव मूर्तियां सैलानियों को आकर्षित करती है तो संगमरमर पत्थरों से बना सरस्वती मंदिर भी पर्यटकों के दिल और दिमाग में रच बस जाता है।

महनसर : झुन्झुनू जिले का महनसर कस्बा जयपुर-चूरू रेलमार्ग पर स्थित है। झुन्झुनू से 45 किमी. दूर इस कस्बे में चूरू, झुन्झुनू तथा सीकर जिले के रामगढ़ शेखावाटी से बस द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। महनसर में पोद्दारों की सोने की दुकान पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण केन्द्र बनी हुई हैं इस दुकान के भित्ति चित्रों में श्रीराम और श्रीकृष्ण की लीलाओं का नयनप्रिय चित्रण किया हुआ है। यहां के भित्ति चित्रों पर स्वर्णिम पालिश होने के कारण ही यह सोने की दुकान कहलाती है। महनसर में रघुनाथजी का मंदिर तोलाराम मसखारार का आकर्षक भित्ति चित्रों वाला महफिल खाना तथा अन्य हवेलियां भी दर्शनीय है।

मण्डावा : शेखावाटी में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाला झुन्झुनू जिले का मण्डावा कस्बा जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर है। झुन्झुनू, मुकुन्दगढ़ और फतेहपुर से जुड़ा होने के कारण यह कस्बा दिल्ली, जयपुर और बीकानेर से भी जुड़ गया है। मण्डावा में किला, रेत के धोरे आदि दर्शनीय है। इनके अलावा कई हवेलियां यहां ऐसी हैं जिनके नयनाभिराम भित्ति चित्रों को देखकर सैलानी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

डूण्डलोद : झुन्झुनू से 35 किमी. (सीकर की तरफ) जयपुर-झुन्झुनू सड़क मार्ग पर स्थित डूण्डलोद कस्बा दिल्ली और जयपुर से सीधी रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ है। डूण्डलोद में किला, गोयनका हवेली, गोयनका छतरी आदि दर्शनीय है। मण्डावा की तरह यहां भी विदेशी सैलानियों का जमघट लगा रहता है।

नवलगढ़ : जयपुर-झुन्झुनू सड़क और रेलमार्ग पर झुन्झुनू से 40 तथा सीकर से 30 किमी. की दूरी पर नवलगढ़ कस्बा बसा हुआ है। यह कस्बा भी दिल्ली और जयपुर से सीधी रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ है। नवलगढ़ का दुर्ग, रूप निवास पैलेस आठ हवेली, पोद्दार, पाटोदिया, भगत, चौखानी व अन्य परिवारों की हवेलियां,

गंगामाता का मंदिर आदि नवलगढ़ के दर्शनीय स्थल हैं। नवलगढ़ की हवेलियों में भित्ति चित्रों का तो आकर्षण है ही साथ ही लकड़ी के दरवाजों की बारीक जालियां भी जादुई काष्ठ कला का दिग्दर्शन कराती है।

झुन्झुनू : हिन्दु एवं मुस्लिम शासकों के अधीन रहा झुन्झुनू शहर आज प्रदेश में साम्प्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। दिल्ली, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, अलवर, सीकर व अन्य स्थानों से सीधा जुड़ा यह शहर भित्ति चित्रों, स्मारकों, धार्मिक स्थलों, तालाबों आदि की विविधताओं का दर्शन कराने वाला अनूठा शहर है।

झुन्झुनू में कमरुद्दीन शाह की दरगाह का विशाल और विहंगम परिसर देखने लायक है तो पहाड़ी पर बना मनसा माता का मंदिर भी दर्शनीय है। इन दोनों स्थानों से शहर का नयनाभिराम दृश्य बहुत आकर्षक लगता है। ईश्वरदास मोदी की हवेली में भित्ति चित्रों की भव्यता के साथ-साथ सैकड़ों झरोखों की चित्ताकर्षक छटा भी दर्शनीय है। शहर में बना खेतड़ी महल एक प्रकार का हवा महल है तो मेड़वणी बावड़ी और बादलगढ़ भी नजरों में कैद हो जाने वाले स्थल हैं। समसतालाब, चंचलनाथ का टीला, जोरावरगढ़, बिहारीजी का मन्दिर बन्धे का बालाजी, राणी सती मन्दिर, खेमी शक्ति मंदिर, लक्ष्मीनाथजी का मंदिर, दादाबाड़ी अरविन्द, आश्रम, मोडापहाड़, खेतान बावड़ी, शेखावत शासकों की छतरियां, टीबड़ेवाला की हवेलियां, नवाब रूहेल खां का मकबरा, जामा मस्जिद तथा झुन्झुनू के निकट आबूसर से नेतका टीला जैसे अनेक अन्य दर्शनीय स्थल भी झुन्झुनू में हैं। पर्यटकों के आवागमन में हो रही वृद्धि के कारण गत एक दशक में यहां होटल व्यवसाय भी काफी बढ़ा है। झुन्झुनू स्थित पर्यटक सूचना केन्द्र सीकर, चूरू और झुन्झुनू तीनों जिलों में पर्यटकीय विकास के लिए प्रयत्नशील है।

मेले एवं उत्सव : लोहागल में हर वर्ष भाद्रपद माह की अमावस्या को एक विशाल मेला भरता है। इसी प्रकार नवलगढ़ में भाद्रपद माह में बाबा रामदेव का लकड़ी मेला भरता है।

नरहड़ गांव में हजरत हाफिज शक्करबार बाबा की पवित्र दरगाह में हर वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मेला भरता है जो साम्प्रदायिक सद्भाव की एक अनूठी मिसाल है। झुन्झुनू के

बन्धे का बालाजी, भीमसर, सीतसर, उबली सहित अन्य अनेक स्थानों पर चैत्र शुक्ला पूर्णिमा हनुमान जयन्ती पर विशाल मेले भरते हैं।

झुन्झुनू और नवलगढ़ में गत कुछ वर्षों से शेखावाटी उत्सव का आयोजन हो रहा है जिसमें यहां की लोक संस्कृति और हस्तशिल्प वैभव से लोगों का साक्षात्कार होता है। जिले से छोटे-बड़े और भी मेलों व उत्सवों के आयोजन विभिन्न अवसरों पर होते हैं।

साहित्य-कला : साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से झुन्झुनू जिले की माटी में पल बढ़कर अनेक इतिहासवेत्ताओं ने इतिहास लेखन पर समाज को समर्पित किया है। इस दृष्टि से हरनाथसिंह, पंडित झाबरमल्ल शर्मा, डॉ. उदयवीर शर्मा, मोहनसिंह, रघुवीरसिंह शेखावत आदि के नाम प्रमुख हैं। साहित्य के क्षेत्र में जनाब सालिक अजीजी, युसूफ झुन्झुनूवी, डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, डॉ. मनोहर शर्मा, विश्वनाथ 'विमलेश', रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ', बनवारीलाल 'सुमन', परमेश्वर द्विरेफ, भागीरथसिंह 'भाग्य', रामस्वरूप 'पेश', नागराज, ओमप्रकाश पचरंगिया, मुरली बासोतिया आदि अनेक हस्ताक्षर हैं जिन्होंने विभिन्न विधाओं की रचनाओं से जिले का नाम रोशन किया है। साम्प्रदायिक सद्भावना को पल्लवित करने, यज्ञ की माटी की गंध को परवान चढ़ाने तथा यहां के आचार-विचार और संस्कारों को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में इन साहित्य सेवकों ने उल्लेखनीय प्रयास किये हैं।

मातुराम वर्मा (पिलानी) तथा राजकुमार गनेड़ीवाल (मुकुन्दगढ़) ने जहां कलाकार के रूप में अपनी जादुई अंगुलियों का कमाल दिखाया है वहां सूरतसिंह शेखावत कार्टून विद्या के शिरोमणि रहे हैं। शेखावाटी के चंग और गिन्दड़ नृत्यों ने इस जनपद की लोक संस्कृति को पंख प्रदान किये हैं। इन लोक नृत्यों की स्वर लहरियों से जहां यहां के जनजीवन का अभूत माधुर्य घुला हुआ है वही भोपा-भोपी के गायन, बांसुरी और अलंगोजी के स्वर तथा सामाजिक उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गीतों में समूह लोक परम्पराओं की झांकी का प्रतिबिम्ब झलकता है। चिड़ावा के राणा परिवार का परम्परागतशैली का ख्याल तथा मण्डावा के रिजवी परिवार की गजल की परम्परा ने भी इस जिले का नाम रोशन किया है।

सेना में सक्रिय भागीदारी : भारतीय सेना में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी का गौरव झुन्झुनू जिले को प्राप्त है। जिला सैनिक कल्याण कार्यालय के अनुसार इस समय जिले में करीब 55 हजार पूर्व सैनिक हैं तथा लगभग 45 हजार सैनिक सेवारत हैं। जिले में वीर गति प्राप्त सैनिकों की अब तक 315 पत्नियां वार विडो हैं जबकि अब तक 98 सैनिक विभिन्न प्रकार के सैन्य अवार्ड से सम्मानित हैं। कारगिल और पश्चातवर्ती (आपरेशन विजय) युद्ध में इस जिले के अब तक 28 शहीद हुये हैं जो राजस्थान में किसी एक जिले में सर्वाधिक हैं।

खनिज सम्पदा : झुन्झुनू जिले के उत्तरी-पूर्वी भाग से लेकर दक्षिण छोर तक फैली अरावली पर्वतमाला ने प्राकृतिक रूप से जिले को काफी समृद्ध किया हुआ है। सिंधाना से लेकर रघुनाथगढ़ तक भू-गर्भ में करीब 75 कि.मी. क्षेत्र में ताप्र (तांबा) पट्टी फैली हुई है जिसका दोहन खेतड़ी स्थित हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड के माध्यम से किया जाता है। खेतड़ी में तीन खाने हैं। इनमें कोलिशन और खेतड़ी के भूमिगत खदानें हैं। चांदमारी में खुली खदान है।

अरावली की गोद में जिले में ग्रेनाइट और लाइम स्टोन के विपुल भण्डार हैं। उदयपुरवाटी तहसील के अनेक गांवों में खनन होता है। ग्रेनाइट पत्थर को तराशने और काटने तथा चूने के पत्थर से सीमेंट निर्माण के लिए गत एक दशक में अनेक औद्योगिक इकाइयों का फैलाव इस जिले में हुआ है।

शिक्षा : झुन्झुनू जिला शिक्षा के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। इस जिले में 474 राज.उच्च मा. वि. व माध्य. विद्यालय तथा 810 निजी माध्य. व उच्च मा. विद्यालय यानि लगभग 1300 विद्यालय संचालित हैं। उच्च शिक्षण संस्थान में बीट्स, सीरि, श्रीधर युनिवर्सिटी, सिवानिया विश्वविद्यालय, श्री जगदीश प्रसाद जामरमल टिबरेवाल विश्वविद्यालय आदि हैं जो देश ही नहीं विदेशों में भी शिक्षा के जगह को महका रहे हैं। इसी प्रकार महाविद्यालय व बी.एड कॉलेज का भी जाल बिछा हुआ है।

-मु.पो. काजड़ा, तह. सूरजगढ़ (झुन्झुनू)

मो. 9829525658

जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बड़े गौरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही वास्तव में वीर पुरुष है।

-गणेश शंकर विद्यार्थी



नैतिक शिक्षा

बच्चों में सकारात्मक सोच कैसे पैदा करें

□ करुणा श्री

व्य कित्तव के विकास के लिए इन्सान को अपने जीवन में स्वयं को पहल करनी पड़ती है। हमारा व्यक्तित्व हमारी कहानी कहता है। प्रकृति ने धरा पर विविध रंग दिये हैं। उन रंगों को जीवन में हम रंग तो देते हैं। लेकिन किस रंग से व्यक्तित्व में निखार आयेगा यह सोचने का नजरिया होता है। सोच तीन स्तरों के होते हैं। प्रथम सकारात्मक सोच, द्वितीय मध्यम स्तर का सोच एवं तृतीय निम्न स्तर का सोच जिसे एक शब्द में नकारात्मक सोच कह सकते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि बच्चों में हम किस तरह की सोच को पैदा करें या विकसित करें। मूल प्रवृत्तियों में बदलाव लाना संभव नहीं है। फ्रायड के अनुसार ये प्रवृत्तियां जन्मजात होती हैं। वैसे भी प्रकृति के नियम स्वयं प्रकृति बदलती है, प्राणी नहीं। लेकिन किसी परिवार-समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ाना है, उसे विकसित करना है या सर्वोच्च स्थान देना है तो सर्वप्रथम हमें हमारे बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देना होगा। व्यक्तित्व का विकास दो मुख्य बातों पर गहरा प्रभाव डालता है-प्रथम मानसिक आहार और शारीरिक आहार। इन दोनों की पूर्ति परिवार, वातावरण और समाज से होती है।

डेलकार्ने ने भी बच्चों की सकारात्मक सोच के लिए अभिभावक और शिक्षकों के दायित्व पर बल दिया है। क्योंकि उनके विचार से असली मकसद को पाना ही जीवन की मूल सफलता है। रूजवेल्ट ने भी जीवन में उन तमाम चीजों को महत्व दिया है जिससे बच्चों की छोटी-छोटी जरूरतें अभिभावक कर सके। लेकिन प्रत्येक अभिभावक जरूरी नहीं कि वह सब आवश्यकताओं को पूरी कर सके। इसके लिए जो भी समाज को दिशा देते हैं। नई रोशनी देते हैं यह काम उन पर भी निर्भर करता है कि बच्चों को कैसे तैयार किया जाये।

जिंदगी के चौराहे पर खड़े हमारे बच्चे हमसे ही कुछ कहना चाहते हैं। कुछ मांगना चाहते हैं। बच्चों को समझना आसान भी है और

मुश्किल भी। क्योंकि आने वाले समय के वो बीज हैं जिससे फसल उत्तम पैदा हो। हम अपनी विरासत में यदि कुछ देना भी चाहें तो वह एक उत्तम सोच। हमारे सभी ऐतिहासिक ग्रंथों में शास्त्रों में विश्व के महान ग्रंथों में भी स्पष्ट बताया है कि बच्चों को अगर सही मार्ग मिल जाये और सही सोचने का तरीका मिल जाये तो विश्व में शांति नजर आयेगी। यह तब होगा जब परिवार में माँ अपनी भूमिका अच्छी निभा सके। क्योंकि बच्चों की प्रथम गुरु उनकी माँ होती है जो जीवनदर्शन का ज्ञान समझती है। दूसरा गुरु वो होता है जो जीवन चलाने का दान देता है। यह समझता है-संसार क्या है? बच्चों को नजरिया भेद का स्वरूप समझा कर तैयार करता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि परिवार द्वारा दिये संस्कारों का असर, दूसरा शिक्षकों द्वारा विद्यालय में दिये संस्कारों का असर बच्चों की मानसिक अवस्था पर गहरा असर डालती है। कहा भी जाता है कि किसी भी राष्ट्र को समझना हो तो वहां के बच्चों को देख लिया जाये। हमारी दृष्टि में परिवार से बड़ा समाज और समाज से बड़ा राष्ट्र होता है। राष्ट्र है तो सब कुछ है। यदि राष्ट्र नहीं है तो कुछ भी नहीं है। इसलिए देश को समझने के लिए हम सबको उनकी सोच, उनकी भावना, उनकी आदतों को परखना और समझना पड़ेगा तभी किसी बच्चे का भविष्य के हम कर्णधार कहला सकते हैं।

अब सकारात्मक सोच कैसे पैदा करें? यह विचारणीय है। इसके लिए कुछ कदम उठाने पड़ेंगे। जैसे बच्चों को बचपन में जो भी आदतें-सोच हम डाल देते हैं वह उम्र भर साथ चलती है। इसलिए परिवार और शिक्षकों को चाहिए कि कुछ बातों में अनुशासन को बढ़ावा दें क्योंकि अनुशासन से एक प्रकार का भय रहता है जिससे बच्चे गलत काम करने से डरते हैं, उसे नहीं करेंगे। बालपन में कभी भी यथार्थ से परे की बातें नहीं करें। यदि सांप बताते हैं तो उसे सांप का ही दर्जा दें न कि कोबरा का। कभी भी झूठी काल्पनिक कहानियां बच्चों को नहीं सुनायें। यह

न कहें कि सामने वाले पेड़ पर भूत या राक्षस रहता है। उन्हें यह बतायें कि वृक्षों में भी जीव है। वह भी रोते हैं। उनके साथ कठोरता से पेश नहीं आना चाहिए। किसी फूल या पत्तों को कोमलता से तोड़ें। इससे बच्चा सही मानसिक विचार अपने जीवन में लायेगा। सकारात्मक सोच के लिए इच्छा पैदा करनी होती है। घर-समाज और विद्यालयों में हमें अपने व्यवहार और कर्म को ईमानदारी से निष्ठा से उनके सामने प्रस्तुत करना होगा। झूठ बोलने की प्रवृत्ति अभिभावकों और शिक्षकों को उनके सामने रोकनी होगी। कभी अभिभावकों को कहीं जाना होता है वे बच्चों को नहीं ले जाना चाहते हैं तो अधिकांश अभिभावक यह कहकर जाते हैं कि लौटते समय तुम्हारे लिये चॉकलेट या खिलौना लायेंगे। बच्चा अपने माता पिता की राह देखता रहता। जब उसके सम्मुख माता-पिता सामने आकर खड़े हो जाते हैं तो तुरन्त पूछ लेते हैं-मेरे लिए चॉकलेट लाये। ऐसे समय में यदि उसके अभिभावक चॉकलेट देते हैं तो मस्तिष्क पर सही असर पड़ता है। यदि नहीं लाते हैं, किसी कारण भूल भी आते हैं तो अधिकांश अभिभावक बहाना बनाकर बच्चे को टालने की कोशिश करते हैं। इस स्थिति में भी बच्चे की मस्तिष्क सोच पर गहरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि मस्तिष्क की दो अवस्थाएं होती हैं-एक चेतन अवस्था और दूसरी अर्द्धचेतन अवस्था। दोनों अवस्थाएं काम करती हैं। बच्चा तुरन्त अपने दिमाग में नकारात्मक छवि विकसित कर लेता है। यह छवि हमेशा उसके साथ रहती है। इसलिए बच्चों पर सही कल्पना और सही सपने देखने की आदत डालना हम सभी का गहरा दायित्व बनता है। उदाहरणार्थ लिंकन की माँ ने लिंकन को राष्ट्रपति बनाया तो इंदिरा गांधी को जवाहरलालजी ने नई सोच देकर एक महान नारी का रूप दिया। कला के क्षेत्र में पृथ्वीराज कपूर ने अपने बच्चों को बालपन में सही सोच दी जिससे राजकपूर जैसे कलाकार समाज सुधार बने। हमने कई परिवार ऐसे देखे हैं जिनके यह अर्थ अभाव हमेशा रहा लेकिन

अभिभावकों ने उनके सम्मुख कभी आर्थिक तंगी का नजारा पेश नहीं किया। बल्कि बच्चों में स्वावलंबी के गुण पैदा किये। आज वही बच्चे उत्तम कार्य शान से कर रहे हैं। अपनी छवि से दूसरों को नई रोशनी दे रहे हैं।

दूसरा कदम-हमें पहले अपनी सोच को बदल कर उससे अच्छाई खोजनी पड़ेगी तब बच्चों में बदलाव ला सकेंगे। शिक्षकों को भी बच्चों के सम्मुख अपनी कमियाँ बताने में हिचक नहीं होनी चाहिए। यदि किसी पाठ को समझाने में या गणित के सवाल हल करने में स्पष्टता नहीं है तो बच्चों से बेहिचक कह दें, तैयारी करके समझा देंगे। न कि यह कहें कि अपने घर या पासबुक या होशियार बच्चे से नकल कर लो या समझ लो क्योंकि बच्चों के लिए गुरु गुरु ही होता है। वातावरण का प्रभाव भी बच्चों में नकारात्मक सोच पैदा करता है। इसका भी ज्ञान बच्चों को उदाहरण देकर समझाना चाहिए। इसका ज्वलन्त उदाहरण हमें माइकिल जैक्सन पॉप सिंगर में देखने को मिलता है। बचपन में माइकिल जैक्सन के पिता सिंगर बनाना चाहते थे। लेकिन उनके घर में आर्थिक अभाव इतना था कि कई दिनों तक भूखे फुटपाथ पर रहकर गुजारते थे क्योंकि 8-10 भाई बहिन थे। माइकिल रोजगार के लिए इधर-उधर भटकते थे। लेकिन पिता की सख्ती से वह संगीत का रियाज करते और कड़ी मेहनत के पश्चात विश्व के प्रसिद्ध पाप सिंगर बने। पिता ने अपनी भूमिका अर्थ अभाव में भी सफलता से सही सोच के साथ निभायी। कहते हैं पालने में ही बच्चे का रूप समझ में आ जाता है। यदि उनके पिता अर्थ कमाने के लिए दिशा गलत देते तो शायद हम लोग माइकिल के नाम से अनभिज्ञ होते, पिता का सकारात्मक सोच था।

आप दूसरा उदाहरण माइकिल का देखें तो वह बदसूरत से उनकी नाक बेहद भद्दी थी। उनके पिता हमेशा उनकी असुन्दरता को देखकर निराश होते और कई बार माइकिल को बदसूरत की सजा पिता की पिटाई से मिलती लेकिन माइकिल ने अपनी माँ से पाया माँ का सबसे लाडला और सुन्दर बेटा वही है। वह नित्य आईने के सम्मुख अपने आपको सुन्दर कहता और उन्होंने स्वयं को बड़े होने तक सुन्दर बना दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि माता-पिता की सोच अलग थी, लेकिन मकसद एक था-

माइकिल के मस्तिष्क में सकारात्मक सोच बनी रहे।

तीसरा कदम-आशावादी बनाना। बच्चों के सामने कभी निराशावादी बातें नहीं करनी चाहिए। इसका गहरा प्रभाव मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। बच्चों के सम्मुख अभिभावक और शिक्षकों को दूसरे उदाहरण कभी प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। बच्चा जो काम करे उसकी प्रशंसा की जाये। जो बनना चाहे उसे बनने दें। एक अशिक्षित माँ भी अपने बच्चे को स्वतंत्र रहकर कार्य करने की छूट देती है। क्योंकि अशिक्षित माँ भी चिन्तन-मनन करती है। लालबहादुर शास्त्री की माँ ने अपने बेटे को देश के आंदोलन की आग में कूदने से नहीं रोका था।

चौथा कदम-काम को तुरन्त करने की आदत बच्चों में डालनी चाहिए। जरा भी देर हुई तो उसमें नकारात्मक सोच का बीज उत्पन्न हो जाता है। क्योंकि सुनहरी धूप का मजा उठाना है तो हिम्मत हौसलों को बुलन्द करना ही होगा। रवीन्द्रनाथ टैगोर व्यक्तित्व के मालिक ऐसे नहीं बन गये थे। उनके बड़े भाई ने उनकी नींव को सींचा था। रवीन्द्रनाथ टैगोर बचपन से ही काम करने में तीव्रता रखते थे।

पांचवा कदम-बच्चों को केवल मात्र वर्तमान में जीने का तरीका सिखाएं। भूत तो संस्कार देने की विरासत है। बच्चों को हमेशा यही कहा जाये कि तुम यह काम कर सकते हो। बस, यही से उनमें सकारात्मक सोच पैदा हो जायेगी। इसके साथ ही बच्चों में बालपन से नैतिकता की शिक्षा महान व्यक्तियों के विषय में ज्ञान देना। अहसान मानने की भी शिक्षा देना। सब तरह का ज्ञान-कौशल सिखाना जिससे अपना जीवन सुनिश्चित ढंग से चला सकें। अभिभावकों को शिक्षकों को बच्चों के सम्मुख खुद के आदर्श प्रस्तुत करने होंगे तभी सकारात्मक सोच विकसित कर सकेंगे। स्वाभिमान को जाग्रत करना। क्योंकि बच्चों की भावनाओं और व्यवहार में सीधा रिश्ता होता है। सकारात्मक सोच विकसित करने में भाषा की अपनी महत्ता होती है इसलिए शुद्ध मीठी वाणी को प्रस्तुत किया जाये।

इन सबके अलावा सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक परिवार और विद्यालयों में दिन की शुरूआत ईश्वरीय वंदना-सुनने, बोलना

पढ़ने से हो। (बच्चों को बचपन से ही जब वह समझने लगता है।) रात्रि को प्रार्थना करने की आदत डालें ताकि दिन भर की कसरत से वह छुटकारा पा सके। सूकून की नींद ले सके। बचपन से ही अच्छा देखने की आदत डालें। आत्म अनुशासन का निर्माण करने की कला सिखायें। कोशिश करते रहने से सोच में बदलाव आता है। उत्तम किस्म की पुस्तकों को पढ़ने की आदत डालें। हमारे यहां बच्चों को न घर में न ही विद्यालयों में पढ़ने की पुस्तकें मिल पाती हैं। अनापशानाप खर्च तो हम कर लेते हैं लेकिन देखा जाये तो अखबार भी मांग कर पढ़ा जाता है। कम से कम शिक्षित परिवार पुस्तकें खरीद कर बच्चों को दे ही सकता है।

अंत में सकारात्मक सोच को विकसित करने में चरित्र, साहस, दृढ़ता और सुनने की शक्तियों में मजबूती बनाये रखने में घर और विद्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण होनी चाहिए। सुकरात से हम सब प्रेरणा ले सकते हैं। हम सब बदल सकते हैं यदि उनकी ये बातें हालातों का सामना करने का सही ढंग आना, व्यवहार में बड़प्पन दिखाना, कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करना, गंभीर बनना, सदैव धरा की ओर देखकर चलना, ऐसे गुण यदि हम बच्चों की नींव भरते समय डाल दे तो हमारे नौनिहाल हमारे देश का ही नहीं विश्व में अपना स्थान सर्वोच्च बनायेंगे।

यह तब ही संभव होगा जब प्राथमिक और मीडिल स्कूलों के बच्चों को घरों और विद्यालयों से अच्छा वातावरण मिल सके। अशिक्षित अभिभावक और शिक्षित अभिभावक और शिक्षकों को अपनी विचार धारणा और अपनी स्वस्थ आदतों को उनके सम्मुख ईश्वरीय कर्म की प्रस्तुती करनी पड़ेगी। क्योंकि आज भी हमारा राष्ट्र ग्रामीण नौनिहालों पर निर्भर करता है। उनमें भी अनेकों प्रतिभाएँ छिपी हैं। केवल अपना स्वार्थ न देखें। वो नौनिहाल भी ईश्वर के दरबार से हमारे यहां भेजे गये हैं। उनकी जीवन रक्षा-उनकी कल्पनाओं को साकार करना हमारा नैतिक धर्म है।

-सी-76, हिम्मत नगर, टॉक रोड, जयपुर-18

मो. 9460244392

जब यह साफ हो कि लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है, तो लक्ष्यों में फेरबदल न करें, बल्कि अपने प्रयासों में बदलाव करें।

-कयूशियस

व र्तमान प्रगतिवादी दौर में कहीं भी नजर घुमाइये चहुँओर विकास की गाथा ही सुनाई दे रही है। विकसित राष्ट्र की गगनभेदी हुंकार पूर्णतः स्पष्ट है। नित नवीन कल-कारखाने, बेहतरीन चिकित्सा सुविधाएँ, सर्वत्र सुलभ आवागमन संसाधन, बड़े-बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स एक से बढ़कर एक मनोरंजक उपक्रम...

सुविधाजनक शैक्षणिक संस्थान, परीक्षा परिणामों में गुणात्मक एवं मात्रात्मक वृद्धि, इंजीनियर, चिकित्सक, शिक्षक, वकील, वैज्ञानिक, खगोलविद् सभी की लम्बी-लम्बी कतारें... मौजूद होने के बावजूद भी क्या हमारे समाज को अपेक्षित परिलाभ मिल पा रहे हैं?

क्या आपको नहीं लगता इस भौतिकवादी चकाचौंध के भीतर हम अपने जीवित होने के अहसास के बगैर जीवित हैं। सम्पूर्ण उपलब्धियों के साथ ही रिक्तता का अहसास मौजूद है। कुछ दृश्य देखिए- चिकित्सालय है, साधन सुविधाजनक उपकरणों से युक्त चिकित्सक हैं, रोगी है, रोग है चिकित्सा नहीं है।

साधन सम्पन्न विद्यालय है। प्रयोगशाला उपकरण है शिक्षित ज्ञानवान शिक्षक है, शिक्षार्थी है पाठ्यक्रम है, पुस्तक है शिक्षण नहीं है?

न्यायालय है। न्यायविद् है कानून है। अपराध है। अपराधी है-न्याय नहीं है।

ये चन्द दृश्य है जो हमारे समाज का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखा रहे हैं।

इनके पीछे अनेकानेक कारण हो सकते हैं। सभी के अपने पृथक-पृथक हो सकते हैं पर अधिकतम व्यक्ति इससे सहमत तो होंगे। ऐसा मेरा मानना है।

एक शिक्षक होने के नाते मैंने अपने अध्ययन-अध्यापन के दौरान महसूस किया कि योग्यता, अभिरुचि, कार्य-कौशल दृष्टिकोण, क्षमता संस्कार, हमारे कार्य परिणामों पर सकारात्मक/नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। अर्थोपार्जन हमारी अनिवार्यता है। हमारी समस्त क्रियाएँ इसके चारों तरफ घूमती है। इसे नकारा नहीं जा सकता। आप सभी जानते हैं कि नैतिकता व अनैतिकता के मध्य बेहद महीन सीमा रेखा होती है जो कि रुचि एवं स्वार्थ की आंधी में स्पष्ट रूप से दिखाई भी नहीं देती। मगर हाँ इसके परिणाम समाज पर स्पष्टतः दिखाई देते हैं। और उन्हें उस वक्त रोकना सम्भव भी नहीं होता।

रुचिगत कार्यों में नैतिकता सहज ही सहेजी हुई दिखाई दे जाती है। यह बात अक्षरक्षः

चिन्तन

कहीं कुछ कमी सी है

□ डॉ. चेतना उपाध्याय

सत्य है। अन्य सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं में सभी के नैतिकता को लेकर कुछ अस्पष्ट से मत ही रह पाते हैं। तो क्यों ना हम समाज को उचित दिशा-दशा में बनाए रखने हेतु अपनी सूक्ष्म भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए आगे बढ़ें।

शिक्षक होने के नाते किशोरवय को उचित मार्गदर्शन तो हमें प्रदान करना ही चाहिए। वैसे आज का किशोर वर्ग हमसे कई गुना अधिक जानकारी रखता है। इसमें कोई दो मत नहीं। साथ ही यह भी सत्य है कि वर्तमान में किशोरवय पुरानी पीढ़ी के दिशा-निर्देशों को अंगीकार करने में अनेकानेक प्रश्न चिह्न खड़े करने में संकोच भी नहीं करती। ऐसे में शिक्षकों एवं अभिभावकों की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो जाती है। ऐसी स्थितियों का सामना आपने भी कभी ना कभी अवश्य किया होगा। जिसे न तो निगलते बनता है और ना ही उगलते। इन परिस्थितियों से निपटने हेतु मुझे एक उपाय सूझा और वह यह कि हम प्रत्येक मार्ग को रोशन कर दे व छात्रों में स्पष्ट दृश्य देखने की क्षमता विकसित कर दे तो समाज में हम अपनी भूमिका के प्रति न्याय कर पाने में समर्थ हो पाएंगे।

नवीन पीढ़ी जब अपने अनुकूल उचित राहों पर आगे बढ़ेगी तो प्रदेश की प्रगति को कोई नहीं रोक पाएगा। कुछ ऐसे ही विचारों के पश्चात मैंने एक मिनट 45 मिनट का कार्यक्रम तैयार किया है जिसमें विद्यालय स्तर के विषयों का समावेश कर उन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न मेरे द्वारा किया गया है। इसमें बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए किशोरों की रुचियों, अपेक्षाओं, योग्यताओं को पहचानने की क्षमता स्वयं किशोरों में हो इसे जगाने का प्रयत्न किया गया है ताकि छात्र अपनी रुचि, क्षमता योग्यता के अनुकूल उचित विषय का चुनाव कर सही राह पर आगे अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सके।

विद्यालय स्तर पर चलने वाले विषयों हेतु किस किस की रुचि योग्यता क्षमता होनी चाहिए इस पर छोटे-छोटे रूपकों झलकियों के माध्यम से प्रकाश डाला गया है जिसे छात्र आसानी से स्वीकार कर अंगीकार कर पाने में समर्थ हो पा रहे हैं इससे छात्रों में स्वयं अपनी रुचि, योग्यता,

क्षमता को पहचान विषय चुनाव सम्बन्धी योग्यता स्वतः ही विकसित हो जाती है। जब छात्र अपने अनुकूल उचित दिशा का चुनाव कर पाने में समर्थ हो जाता है तो व्यक्तिगत रूप से उसकी प्रगति, समाज व राष्ट्र की प्रगति स्वतः ही दिखाई देने लग जाती है।

रुचिगत विषय आगे भविष्य में रुचिगत व्यवसाय से जुड़ने के अवसर छात्र को प्रदान करता है। जैसा कि आप जानते हैं कि रुचिगत कार्यों में नैतिकता स्वतः ही बनी रहती है। इस हेतु अन्य प्रयत्नों की आवश्यकता प्रत्यक्षतः कम ही होती है। इस तरह रुचि के अभाव में जो व्यवसाय अपनाए जाते हैं उनमें अधिकाधिक आर्थिक लाभ प्रथम लक्ष्य होता है जिसमें समाज को मानवीयता योग्यता को उचित लाभ नहीं मिल पाता। इस तरह योग्यता होते हुए भी समाज भीतरी खोखलेपन का शिकार हो जाता है।

उक्त स्थितियों से बचना चाहते हैं, समाज को बचाना चाहते हैं तो हमारा कार्यक्रम कक्षा 10 के बच्चों तक पहुँचाने में प्रमुख भूमिका निभाईये। मुझसे सम्पर्क कर सी.डी. प्राप्त कर 10 के बच्चों को आगे उचित विषय चुनाव हेतु प्रेरित करने का प्रयत्न करें एवं प्रगतिशील, सुरक्षित समाज निर्माण में भागीदार बने जिससे समाज में छाई रिक्तता की पूर्ति भी आसानी से हो सके। समाज में बहने वाली तेज हवा के साथ किशोर भी बहने लगते हैं जिससे वे अपनी योग्यता के अनुरूप लक्ष्य तक पहुँच पाने में समर्थ नहीं हो पाते। आनन-फानन में जो व्यवसाय हाथ आया उसी में आर्थिक क्रियाएँ करने लगते हैं। अधिकतम लाभांश उनकी प्रमुख जरूरत बन जाता है। ...उस समय फिर नैतिकता की सीमाएँ आवश्यकतानुसार परिवर्तित हो जाती है।

अतः उचित विषय चुनाव समय रहते अत्यावश्यक है। जिसमें हम अपरोक्ष रूप से छात्रों को इस कार्यक्रम द्वारा मदद कर सकते हैं ताकि छात्र समाज में बहने वाली हवा के साथ बहने की बजाय ठोस जमीन पर खड़े रहकर अपने योग्य उचित राह चुन पाने में समर्थ हो सकें।

-प्राध्यापक (गृहविज्ञान)

रा.बा.उ.मा.वि., रामगंज (अजमेर)

मो. 9828186706

सम्पूर्ण राष्ट्र की आधारशिला के लिए प्रोक्षतः शिक्षक समुदाय ही उत्तरदायी है क्योंकि समस्त नागरिक शिक्षक के द्वारा ही शिक्षित, प्रशिक्षित एवं दीक्षित होते हैं। प्रशासनिक अधिकारी से लेकर राजनेता तक सभी शिक्षक की ही देन हैं। इसलिए शिक्षक समाज के लिए प्रगम्य है, पूज्य है एवं आराध्य हैं। शिक्षक यदि वैचारिक धरातल पर राष्ट्रोत्थान का मन बना लें तो कोई भी राष्ट्र उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर सहज ही में पहुंच सकता है। आज भी शिक्षक जिसने अपने कर्तव्य-कर्म का सही निर्वहन किया है तथा दायित्वों के प्रति ईमानदारी से कर्तव्यपरायणता दिखाई है, समाज में आराध्य है, समाज उसके प्रति नतमस्तक है।

‘अवकाश’ एक ऐसा शब्द है जो हर किसी के आनंद को पल में द्विगुणित करने की क्षमता रखता है। अवकाश की अहमियत विद्यार्थी व शिक्षक के लिए समान रूप से होती है। अवकाश के क्षणों का सदुपयोग हमेशा यादगार ही नहीं बना रहता बल्कि व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करता है। ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ होने वाला है। परीक्षा समाप्ति के पश्चात् बालक मानसिक तनाव से मुक्त होकर अपनी रुचियों व अभिरुचियों के अनुसार लुप्त उठारेंगे। पर सवाल यह उठता है कि इस ग्रीष्मावकाश का उपयोग एक शिक्षक को किस प्रकार से करना चाहिए। एक शिक्षक होने के नाते जहां तक मेरा विचार है अपनी व्यावसायिक कुशलता के परिमार्जन हेतु एक शिक्षक को ग्रीष्मावकाश के दौरान कुछ समय निम्नांकित कार्यों के लिए आवश्यक रूप से निकालना चाहिए ताकि शिक्षा जगत में उसका व्यक्तित्व प्रेरणा का स्रोत बनकर उभर सके।

स्वाध्याय को अपनाएं: स्वाध्याय शिक्षक को ऊर्जावान व ज्ञानवान बनाता है। ज्ञानवान शिक्षक के सम्बन्ध में श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं— ‘जब कमल खिलता है तो मधुमक्खियां स्वयं ही उसके पास मधु लेने आ जाती हैं। वैसे ही स्वाध्याय द्वारा शिक्षक का ज्ञानरूपी कमल पूर्ण रूप से खिल जाएगा तब हजारों शिष्य उसके पास शिक्षा ग्रहण करने पहुंचेंगे, क्योंकि आज अध्यापक अपना आंतरिक विकास करने में विफल है तो फिर छात्रों का क्या विकास करेगा अर्थात् जो स्वयं अध्ययन नहीं करता है वह छात्रों को स्वाध्याय हेतु कैसे प्रेरित कर सकता है। स्वाध्याय से

चिन्तन

क्या करें ग्रीष्मावकाश में शिक्षक

□ सम्पत लाल शर्मा ‘सागर’

शंकाओं का समाधान होता है। इससे शुभ संकल्प, आत्म विश्वास, नैतिकता, संस्कार, स्थायी-स्मृति आदि का उद्भव होता है जो सफल शिक्षक के लिए नितान्त आवश्यक है। अतः शिक्षक को अपने दायित्वों के प्रति सजग होकर आत्मविश्वास से निष्ठापूर्वक देश की भावी पीढ़ी के विकास के लिए समर्पित मन से मानवोचित गुणों को ध्यान में रखते हुए ग्रीष्मावकाश में हृदय की अनंत गहराईयों के साथ स्वाध्याय के महत्व को अंगीकार करना चाहिए।

वार्षिक कार्य योजना का निर्माण करें: वह शिक्षक अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में पूर्णतः सफल रहता है जिसकी अपनी कार्य योजना हो। साथ ही योजना को मूर्त रूप प्रदान करने का जिसमें अदम्य साहस हो। ग्रीष्मावकाश में शिक्षक को अपने द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषयों की कार्य योजना बना लेनी चाहिए। योजना के अनुरूप वर्ष भर प्रभावी शिक्षण से नये कीर्तिमान स्थापित किए जा सकते हैं।

पाठ्यक्रम का विश्लेषण करें : पाठ्यक्रम किसी भी समाज की शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार होता है। यह शिक्षक और छात्रों की क्रियाओं की दिशा का निर्धारण करता है। वर्तमान पाठ्यक्रम में सरकार ने सुनियोजित विधि से अपनी आकांक्षाओं के अनुसार एक विशेष प्रकार का पाठ्यक्रम निर्मित करने में सफलता प्राप्त की है, किन्तु इसके लिए किया गया चिन्तन भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल नहीं किया गया है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण से पूर्व ग्रीष्मावकाश में एक बार पाठ्यक्रम का विश्लेषण कर लें ताकि कक्षा-कक्ष शिक्षण में अधिगम अधिक प्रभावी हो सके क्योंकि विश्लेषण के पश्चात् आवश्यक शिक्षण सामग्री का निर्माण भी ग्रीष्मावकाश के दौरान आसानी से किया जा सकता है।

रुचि से प्रशिक्षण लें व नवाचारों को अपनायें : बड़ा ही खेद है कि राज्य सरकार द्वारा आयोजित शिक्षण व प्रशिक्षण से सम्बन्धित शिविरों के प्रति शिक्षकगण गंभीर नहीं हैं, कई

शिक्षक बन्धु शिक्षक प्रशिक्षण नहीं करवाने का समर्थन करते हैं तथा शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों को मात्र यात्रा भत्ता एवं दैनिक भत्ता प्राप्त करने की औपचारिकता समझते हैं। सर्वशिक्षा अभियान द्वारा आयोजित विषय आधारित प्रशिक्षण में भी सिर्फ शारीरिक उपस्थिति प्रदान करते हैं। पर सच्चाई यह है कि मानस पटल पर कुछ नया करने की जो अभिलाषा वर्षों से थी अब इन प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से ही साकार होती नजर आ रही है। आज सफल शिक्षक वही है जो प्रभावी सहायक शिक्षण सामग्री दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग शिक्षण के दौरान करता है, जो विषय का पारखी हो, योग्यताधारी हो उसी शिक्षक की बालक प्रशंसा करते हैं। प्रशिक्षण शिक्षकों को नई सोच, नई दिशा प्रदान करते हैं साथ ही नवाचारों को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। अतः शिक्षक को डाइट, सर्वशिक्षा, एस.आई.ई.आर.टी. इत्यादि द्वारा ग्रीष्मावकाश में आयोजित प्रशिक्षणों को गंभीरता से लेना चाहिए ताकि नवाचारों को सीख सकें।

शिक्षक का व्यक्तित्व ही शिक्षार्थी के सम्पूर्ण जीवन के लिए दृष्टान्त होता है। यही कारण है कि किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और नैतिक विकास के लिए शिक्षार्थियों की अपेक्षा शिक्षक का दायित्व अधिक होता है। अतः शिक्षक का सम्पूर्ण जीवन और व्यक्तित्व ही छात्र एवं समाज के लिए एक सन्देश के रूप में होना चाहिए, उसकी सोच सकारात्मक और रचनात्मक होनी चाहिए।

जिस प्रकार एक पुष्प की सुगन्ध से चतुर्दिक वातावरण सुगन्धित हो उठता है उसी प्रकार यदि शिक्षक का हृदय भी पावन, निष्कलुष और आदर्श गुणों से परिपूर्ण होगा तो उसके असंख्य विद्यार्थी इन्हीं गुणों का अनुसरण करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना विशिष्ट सहयोग प्रदान कर सकेंगे।

—व.अ., ग्राम-पो. गिल्लूड (राजसमन्द)

मो. 9828964866

भा रत में सन् 1952 में “शैक्षिक कारवाँ” के नाम से केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी दिल्ली, भुवनेश्वर, अहमदाबाद एवं पुणे के साथ-साथ अजमेर में भी स्थापित की गयी। उस समय राजस्थान में यह विभाग उप निदेशक, समाज शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर के अधीन कार्य करता था। “शैक्षिक कारवाँ” का नाम सन् 1957 में परिवर्तित कर “श्रव्य-दृश्य विभाग, अजमेर” किया गया। श्रव्य-दृश्य विभाग, अजमेर सन् 1974 से राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के नियंत्रण में संचालित होने लगा।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, जयपुर का विलयीकरण मार्च, 1990 में इस विभाग (श्रव्य-दृश्य विभाग, अजमेर) के साथ कर दिया गया तथा यह राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग-6, अजमेर के रूप में काम करने लगा। यह विभाग अजमेर में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के केन्द्रीय बस स्टैण्ड के सामने स्थित है। इसे ET Cell के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य

राज्य में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का विकास करने हेतु इस विभाग के मुख्य-मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार है :

- **कम्प्यूटर प्रभाग**— सेवारत शिक्षकों को कम्प्यूटर मल्टीमीडिया व वैब डिजाइनिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है।
 - ◆ लिंक्वा लैब की सहायता से अंग्रेजी भाषा में ‘बोलचाल कौशल प्रशिक्षण’ से राज्य के भाषा शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।
 - ◆ एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, 16 एम.एम. प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर, ओवर हेड प्रोजेक्टर, ट्रान्सपेरेंसी प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए राज्य स्तरीय दक्ष प्रशिक्षण तैयार करना।
- **शैक्षिक प्रौद्योगिकी**— सेवारत शिक्षकों को शैक्षिक प्रौद्योगिकी की संकल्पना से अवगत कराना।
 - ◆ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के व्याख्याताओं/वरिष्ठ व्याख्याताओं

हमारे संस्थान

शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, अजमेर

□ राजेश कुमार तिवारी

को शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयामों का प्रशिक्षण प्रदान कराना।

- ◆ सेवारत शिक्षकों को अल्पव्ययी शिक्षण सामग्री का निर्माण करना सिखाना।
- ◆ सेवारत शिक्षकों के समक्ष उपलब्ध डॉक्यूमेंट्री/शैक्षिक फिल्मों का प्रदर्शन करना।

□ **विद्यालय प्रसारण**— प्रसार भारती से समन्वय स्थापित कर यह कार्यक्रम निरन्तर कराया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वार्षिक पंचांग निर्माण/ कार्यक्रम हेतु पाठों का चयन कर निर्माण करना/रेडियो वार्ताकार का चयन कर तैयार करना/रेडियो के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रम का राज्य के समस्त शैक्षिक संस्थाओं में शिविरा के माध्यम से प्रचार-प्रसार करना/सत्रपर्यन्त कार्यक्रम की मॉनिटरिंग व प्रभावी बनाने हेतु शैक्षिक अनुसंधान करना।

□ **श्रव्य-दृश्य प्रभाग**— फिल्म लाइब्रेरी के माध्यम से सार्वजनिक मेलों/जनहित समारोहों एवं स्थानीय विद्यालयों/उत्सवों में शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक फिल्मों का प्रदर्शन करना।

- ◆ विभाग में उपलब्ध शैक्षिक प्रदर्शनी की सहायता से विभिन्न विषयों के मॉडल, चार्ट्स व अन्य प्रदर्शन योग्य सामग्री का विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण मेलों में जाकर इनका प्रदर्शन किया जाता है।
- ◆ विभाग में उपलब्ध शैक्षिक प्रदर्शनी की सहायता से राज्यस्तरीय दक्ष प्रशिक्षक तैयार किये जाते हैं।

मानवीय संसाधन

वर्तमान में विभाग में ‘निदेशक’ का पद है। यह पद विभाग के ‘संयुक्त निदेशक’ पद के समकक्ष है। उनके सहयोग के लिए अनुसंधान अधिकारी-2, व्याख्याता-2, पर्यवेक्षक-1,

वरिष्ठ अध्यापक (कलाकार)-1, मैकेनिक-1, मंत्रालयिक कर्मचारी-4 एवं जमादार एवं सहायक कर्मचारी-3 के पद स्वीकृत हैं। इनमें से संयुक्त निदेशक-1, व्याख्याता-1, कलाकार-1, जमादार-1 रिक्त है।

वित्तीय संसाधन

बजट का नियंत्रण निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर के अधिकार क्षेत्र में है। यह विभाग प्रभाग-6 के रूप में कार्य कर रहा है।

भौतिक संसाधन

विभाग में भौतिक संसाधन निम्नानुसार उपलब्ध है :

भवन

विभाग के पास पर्याप्त मात्रा में भूमि व भवन है। वर्तमान में उपलब्ध संसाधन निम्नानुसार है। 100' × 80' प्रदर्शनी दीर्घा, 60' × 25' के दो बड़े हॉल, 250 व्यक्तियों के बैठने लायक फिल्म हॉल, 30' × 20' का व्याख्यान कक्ष व अन्य सुविधाएं हैं।

भवन को ब्लाक विभक्तीकरण कर प्रशासनिक कार्य एवं प्रशिक्षण कार्य के उपयोग में लिया जा रहा है। मुख्य ब्लाक विवरण निम्नानुसार है :

□ **अम्बेडकर ब्लाक (प्रशासनिक ब्लाक)** : विभाग में कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु एक सुसज्जित प्रयोगशाला है जिसमें 12 कम्प्यूटर सैट उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त एक अंग्रेजी भाषा में ‘बोलचाल कौशल प्रशिक्षण’ हेतु सर्व शिक्षा अभियान द्वारा लिंक्वा लैब भी स्थापित है, फिल्म प्रदर्शन हेतु 16 एम.एम. प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर, ओवर हेड प्रोजेक्टर, ट्रान्सपेरेंसी प्रोजेक्टर तथा एल.सी.डी. प्रोजेक्टर व ब्राडबैंड युक्त इन्टरनेट कनेक्शन उपलब्ध हैं।

□ फिल्म लाइब्रेरी :

◆ विभाग में उपलब्ध फिल्मों का

विवरण- फिल्में 3000 है (इनमें से 78 फीचर फिल्म, 08 रंगीन चलचित्र व भारतीय समाचार चित्र से सम्बन्धित 2794 डॉक्यूमेंट्री फिल्म है।)

❖ वीडियो फिल्म 123

❖ Film Strip 1318 (शैक्षिक गतिविधियों से संबंधित)

विभाग की फिल्म लाइब्रेरी में अधिकांश प्राचीन एवं दुर्लभ फिल्में संरक्षित हैं। उदाहरण के रूप में महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाये गये राष्ट्रीय आन्दोलनों, डांडी यात्रा, गोलमेज सम्मेलन, नोआखली का चित्रण उपलब्ध है। 'जागृति', 'रोटी, कपड़ा और मकान' जैसी सामाजिक, धार्मिक आदि फिल्में उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त राजस्थानी भाषा की 'बाबा रामदेव', 'नानी बाई का मायरा' लाइब्रेरी में उपलब्ध है। समाचार चित्र से सम्बन्धित डॉक्यूमेंट्री फिल्में हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हुए विभिन्न क्षेत्रों के विकास का फिल्मांकन भी उपलब्ध है। इनके माध्यम से तत्कालीन समय की घटनाओं को समझा व आज की परिस्थितियों में उनका प्रदर्शन कर शैक्षिक परिदृश्य में प्रभाविता लायी जा सकती है। बदलते परिवेश में भी इन ऐतिहासिक सम्पत्ति को विभाग संरक्षित रखने में निरन्तर प्रयासरत है।

दायित्व/कार्य

विभाग के मुख्य कार्य निम्नानुसार हैं :

- ❑ कम्प्यूटर एवं मल्टीमीडिया प्रशिक्षण
- ❑ शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण
- ❑ लिंग्वा फोन लैब द्वारा अंग्रेजी भाषा में बोलचाल कौशल प्रशिक्षण
- ❑ आकाशवाणी के सहयोग से विद्यालय प्रसारण
- ❑ ऑडियो कैसेट निर्माण
- ❑ ऑडियो एवं विडियो सी.डी. निर्माण
- ❑ फिल्म प्रदर्शन
- ❑ अनुसंधान
- ❑ प्रकाशन

पूर्व में विभाग यूनिसेफ द्वारा प्राप्त फिल्मस, आई.एन.आर. (Indian News Review) फिल्मस तथा फिल्म निर्माताओं द्वारा प्राप्त टैक्स फ्री फिल्मस, विभागीय फिल्म निर्माण यूनिट द्वारा राजकीय मुख्य समारोहों की एवं उपलब्धियों की विडियो रिकोर्डिंग कर समस्त

राजस्थान के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सरकार की उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार करना मुख्य कार्य था।

शिक्षा के प्रसार हेतु शैक्षिक प्रदर्शनी का आयोजन करना भी विभाग का मुख्य कार्य था जिसमें विभाग में स्थित अनेक विषयों का मॉडल, चार्ट्स व अन्य प्रदर्शन योग्य सामग्री का विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण मेलों में जाकर इनका प्रदर्शन किया जाता था।

उक्त प्रचार-प्रसार हेतु विभाग के पास फिल्म निर्माण तथा फिल्म प्रदर्शन के अत्याधुनिक उपकरण के साथ वाहन भी उपलब्ध थे।

वर्तमान शैक्षिक सत्र के प्रस्तावित महत्वपूर्ण कार्यक्रम

1. **प्रशिक्षण :** कम्प्यूटर साक्षरता प्रशिक्षण, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण, लिंग्वा फोन लैब द्वारा अंग्रेजी भाषा में उच्चारण कौशल प्रशिक्षण।
2. **कार्यगोष्ठी :** ऑडियो एवं विडियो निर्माण का आलेखन, विद्यालय प्रसारण हेतु पाठ आलेखन, परीक्ष माला निर्माण हेतु, विशेषज्ञों क कार्यगोष्ठी।
3. **प्रकाशन :** शैक्षिक सहायक सामग्री पर आधारित पुस्तकों का, विभागीय ब्रोशर एवं छात्र उपयोगी सी.डी. का निर्माण।
4. **प्रसारण :** आकाशवाणी पर विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम, सामाजिक मनोरंजक एवं छात्रों उपयोगी फिल्मों का प्रदर्शन।
5. **अनुसंधान :** शिक्षा क्षेत्र से संबंधित अनुसंधान की क्रियान्विति।

विभाग के सशक्तिकरण हेतु प्रस्ताव

वर्तमान परिस्थितियों में इस विभाग के प्रभावी कार्य हेतु निम्न प्रस्ताव उच्च अधिकारियों हेतु समय-समय पर निवेदन किये जाते रहे हैं।

1. सूचना प्रौद्योगिकी यन्त्रों यथा कम्प्यूटर, स्केनर व स्मार्ट बोर्ड की सुविधा
2. प्रशिक्षण संस्थान होने के कारण प्रभावी प्रशिक्षण हेतु सैटेलाइट की एस.आई.टी. योजना से जोड़ना
3. विभाग के रिक्त पदों की भर्ती
4. तकनीकी व शिक्षा विज्ञों के नये पदों का सृजन
5. भौतिक संसाधनों के रखरखाव हेतु पर्याप्त बजट आवंटन
6. राज्य स्तरीय विभाग होने के नाते

मोबिलिटी-वाहन की सुविधा या वाहन हेतु बजट आवंटन

उपसंहार

राज्य में शैक्षिक प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों को मूर्त रूप देने में इस विभाग की अहम भूमिका है। इसके अन्तर्गत छात्रोपयोगी, नवीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों को जानकारी दी जाती है, जिसका उपयोग वे अपने विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं के हितार्थ करते हैं। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत वरिष्ठ व्याख्याता/व्याख्याता को प्रशिक्षित करना आधुनिक परिवेश में कम्प्यूटर संबंधी प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों को अद्यतन जानकारी युक्त किया जाता है, जिस प्रौद्योगिकी का उपयोग वे अपने विद्यार्थी हित व परीक्षा परिणाम उन्नयन जैसे विद्यालय कार्यों में कर सकते हैं।

प्राचीन फिल्मों को संरक्षण एवं उनका विद्यार्थियों हित में समय-समय पर आवश्यकता अनुसार प्रदर्शन करने में विभाग की महत्ता है। आकाशवाणी पर विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम तैयार करने एवं प्रसारित करने में सम्पूर्ण योगदान इसी विभाग का रहता है। विद्यार्थियों के एवं शिक्षकों के सन्दर्भ में कठिन प्रत्यय आधारित पाठों की ई-लर्निंग सामग्री तैयार कर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान व विद्यालय के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाना इस विभाग का महत्वपूर्ण प्रयास है। अंग्रेजी भाषा में उच्चारण कौशलता प्रदान करने के उद्देश्य से लिंग्वा लैब में शिक्षकों को प्रशिक्षित कर भाषा समृद्धि की ओर उनका कदम बढ़ाने में विभाग का योगदान है।

-सह. परि. समन्वयक (शिक्षा का अधिकार)
कार्या.जि.शि.प्र. (प्राशि) अजमेर
मो. 9414412971

'शिक्षक दिवस प्रकाशन-2014' रचनाएं आमंत्रित

शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अंतर्गत इस वर्ष प्रकाश्य पाँच पुस्तकों यथा-हिन्दी कविता, हिन्दी विविधा, राजस्थानी विविधा, शिक्षा साहित्य एवं बाल साहित्य हेतु रचनाएं प्राप्त होने की अंतिम तिथि 31 मई, 2014 है। रचनाएं भिजवाने हेतु पता :-

वरिष्ठ सम्पादक, शिविर पत्रिका
माध्य. शिक्षा राजस्थान बीकानेर-334011
-वरिष्ठ सम्पादक



सुप्त वीणा के तार/नीता चौबीसा /प्रकाशक :
सुभद्र पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,
दिल्ली/संस्करण 2014/ पृष्ठ संख्या
136/मूल्य : ₹ 120.00

नीता चौबीसा का काव्य संग्रह सुप्त वीणा के तार में अपनी भावनाओं एवं एहसासों को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि कविताओं के माध्यम से उनका दिल कुछ कह रहा है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में 70 कविताएं हैं। नीता की कविताओं में जिंदादिली, कल्पनाशक्ति, दर्द का अहसास और मनुष्यता से लगाव पाठकों को अनायास ही आकर्षित करती है।



काव्य रचना अन्तर्व्यथा में नीता ने समाज की उस व्यवस्था उस सोच पर प्रश्न चिन्ह लगाया है जिसमें शरीफ ईमानदार लोग नियमों, व्यवस्थाओं के आगे लाचार हो जाते हैं जबकि तथाकथित व्यवहार कुशल लोग नियमों एवं व्यवस्थाओं को अपना शिकार बना लेते हैं।

मौत का आहान के माध्यम से कवियत्री निर्भय होकर जीवन का अटूट सत्य मृत्यु को सहजता से लेने के लिये प्रेरित करती हैं। मृत्यु होने पर आत्मा जीर्ण शीर्ण काया से आजाद होकर नया शरीर धारण करती है। मृत्यु आरम्भ है अंत नहीं।

कविता सार्थक है मेरा होना के माध्यम से नीता ने बताया है कि जो लोग दूसरों के लिए जीते हैं, उन्हीं का जीवन सार्थक है। गुरु वशिष्ठ विश्वामित्र, चाणक्य जैसे गुरुओं ने अपने शिष्य के संपूर्ण अस्तित्व को तराश कर राम, कृष्ण एवं चन्द्रगुप्त जैसे नगीनों को घड़ा। यहाँ पर कवियत्री ने शिक्षक वर्ग को यह अहसास करावने का सफल प्रयास किया है कि विद्यार्थी जीवन में गुरु की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी हैं। गुरु की सार्थकता इसी में है जब उसके शिष्य उसके वजूद को नयी पहचान देंगे।

पतझड़ का संदेश कविता जीवन की वास्तविकता का बोध करावती है। इस कविता

में जीवन को बसन्त का इंतजार करते हैं और मृत्यु से मुंह फेरते हैं। कवियत्री यहाँ यह कहना चाहती है कि मृत्यु जीवन का शाश्वत है। मृत्यु को समर्पित होने के बाद ही बसन्त रूपी नवजीवन प्राप्त होता है। काव्य रचना औचित्य का सवाल में नीता ने यह संदेश देना चाहा है कि हमारा मन प्रतिकूल प्रतिस्थितियों से डरता है। प्रतिदिन सूर्य संपूर्ण जगत को रोशन करता है। मनुष्य को भी परोपकार का कार्य करते हुए खुशियाँ बिखरेनी चाहिए। मन रूपी दर्पण पर क्रोध, मोह, अहंकार जैसी बुराईयों की गर्त चढ़ गयी है, ऐसे में वह आत्मा के मूल स्वरूप को भूल गया है।

कविता माँ होना माँ की महानता को खूबसूरती से प्रतिबिम्ब करता है। माँ जो कि अपने सुख-दुःख की परवाह किये बिना, अपनी भावनाओं को व्यक्त किये बिना मुस्कुराकर अनवरत अपने घर परिवार के लिए समर्पित रहती हैं। कोई मौसम कोई परिस्थिति कोई कामना उसके प्रतिबद्ध समर्पण को रोक नहीं पाती। इस काव्य संग्रह अनूठी कृति है-

दरारें समर्पण के अभाव में,

स्वार्थों की चाह में

पड़ने लगती है रिश्तों में दरारें

अहं की आढ में झखाड़

अनादर पाकर भी मरना नहीं चाहती

नारी के अर्न्तमन के द्वन्द्व के छोटे-छोटे वृत्तांतों का खूबसूरती से चित्रण किया है। नारी जीत-हार की परवाह किये बिना अन्याय का प्रतिरोध करती है। समाज में ऐसे युद्ध नारी स्वयं अपने लिये चुनती हैं और आशावादी सोच लाने का प्रयास करती है।

इस प्रकार यह काव्य संग्रह कवियत्री के सुन्दर अहसास, भावनाओं, अनुभवों का गुलदस्ता है। इस गुलदस्ते को प्रत्येक पुष्प की अपनी महक एवं ताजगी हैं। कवियत्री का यह प्रयास प्रशंसनीय है। इस काव्य संग्रह में नीरजा ने उर्दू शब्दों का प्रयोग करके अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने की सराहनीय चेष्टा की है।

पुस्तक की समग्र प्रस्तुति यथा प्रयुक्त कागज, मुद्रण, एवं आवरण पृष्ठ गुणवत्तापूर्ण हैं। पुष्प संबंधी त्रुटियाँ नहीं के बराबर हैं। मूल्य उचित है।

-सुनीता चावला

सहायक निदेशक

समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मो. 9414426063

हमारा पर्यावरण / एम. के. गोयल / प्रकाशक :
अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 28/115 ज्योति
ब्लॉक, संजय पैलेस, आगरा-2/
पृ.सं. 304/संस्करण 2013/मूल्य ₹ 140.00

समीक्ष्य पुस्तक हमारा पर्यावरण आँखों के सामने आते ही पढ़ने का आह्वान करती है। हरे रंग से छपा आवरण पृष्ठ, जिस पर एक हरे पत्ते पर पृथ्वी का हरा चित्र पर्यावरण संरक्षण का सहज ही में संदेश देने वाला है। यह तो रही आवरण पृष्ठ की बात, भीतर में जाते हैं तो पर्यावरण के बारे में भिन्न-भिन्न जानकारीयों का पिटाखा खुलता ही चला जाता है। वस्तुतः पर्यावरणविद् श्री एम. के. गोयल द्वारा लिखी यह पुस्तक पर्यावरण ग्रंथ है, पर्यावरण सरिता है।

पर्यावरण संरक्षण एवं उसकी वर्तमान बिगड़ती स्थिति में सुधार लाने के लिए भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व चिन्तित एवं प्रयत्नरत है। पृथ्वी को जानने और उसके विभिन्न क्रियाकलापों को समझने, प्राकृतिक संसाधनों के बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करने, प्रदूषण से बचाने तथा उसे कम करने, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत तलाशने आदि मुद्दों पर हर सम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों के पीछे उद्देश्य यही है कि हर स्तर के हर आयुवर्ग के लोगों को पर्यावरण के बारे में मूलभूत जानकारी मिल सके ताकि वे अपने कर्तव्यों को पहचानकर इस महत्वपूर्ण आन्दोलन में महती भूमिका निभा सकें।

समीक्ष्य पुस्तक हमारा पर्यावरण में कुल उन्नतीस अध्याय सम्मिलित हैं। इन अध्यायों को बहुत ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सिलसिलेवार संजोया गया है जिससे पाठक उत्तरोत्तर पर्यावरण ज्ञान ग्रहण करता हुआ न तो ऊबता है और न ही पीछे हटता है। प्रथम अध्याय हमारा पर्यावरण में पर्यावरण, पृथ्वी एवं पारिस्थितिकी का वर्णन किया गया है। इसमें मानव पर्यावरण पर हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, यू. एन. ओ. का पर्यावरण कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम नैरोबी घोषणा पत्र आदि सहज कर रखने योग्य है। प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों के लिए ये जानकारीयें बहुत उपयोगी हैं।

अन्य अध्यायों में सौर मण्डल, पृथ्वी,



पारिस्थितिकी, प्राकृतिक संसाधन, वायु जल, भूमि, वन, सामाजिक वानिकी, वन्य जीव, बाघ परियोजना, राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य, ऊर्जा आदि विषयगत ज्ञान से परिपूर्ण है। पर्यावरण प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या, कानून और समस्याएं शीर्षक के अन्तर्गत सम्मिलित अध्यायों में पर्यावरणीय प्रदूषण, वाहनों से प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, नैतिक प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या तथा परिवार कल्याण, पर्यावरण और कानून, पर्यावरणीय समस्याएं- प्राकृतिक व सामाजिक महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकार पर्यावरण प्रबन्ध, पर्यावरण शिक्षा, मानव अधिकार, बंजर भूमि परिग्रहण शीर्षक के अन्तर्गत आधा दर्जन अध्यायों ने स्थान पाया है जो क्रमशः जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रबन्ध, मानव अधिकार बंजर भूमि परिग्रहण, पर्यावरण शिक्षा हैं। विविध में केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय के तत्वाधान में देश में किए जा रहे पर्यावरणशोधन कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। इनमें पर्यावरण संबंधी विशिष्ट दिवसों, स्कूलों में पर्यावरणीय अनुस्थापन कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार आदि की जानकारी दी गई है। अन्त में एक परिशिष्ट में संदर्भ पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा डाक्यूमेंट्स की जानकारी दी गई है। पुस्तक में दिए गए पर्यावरण संबंधी दस्तावेज अत्यन्त उपयोगी है। संक्षेप में कहें तो इतने विविध विषयों पर विविध जानकारी देने वाली यह पुस्तक गागर में सागर उपमा पर खरी उतरती है। इस हेतु विद्वान लेखक एवं प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक का मुद्रण सुन्दर एवं त्रुटिमुक्त है। मोहक आवरण संदेश प्रदायक है। तीन सौ चार पृष्ठ की सामग्री का मूल्य 140.00 रुपये उपयुक्त है। संदर्भ पुस्तक के रूप में यह कृति पुस्तकालयों के लिए उपयोगी है।

—डॉ. सुधीर रूपानी

प्राध्यापक, रा.उ.शिक्षा अध्ययन संस्थान, बीकानेर
मो. 9001024365

पिघलते लम्हों की ओट से / कीर्ति शर्मा /
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर 9,
जयपुर-6/पृष्ठ संख्या 132/संस्मरण 2013/
मूल्य ₹150.00

समीक्ष्य कृति 'पिघलते लम्हों की ओट से' श्रीमती कीर्ति शर्मा विरचित चौदह कहानियों

का संग्रह है जिन्हें पढ़ते हुए लगता है जैसे उनमें वर्णित घटनाओं में से गुजर रहे हैं। दरअसल कहानी का प्रभावीपन एवं सफलता इसी बात से आंकी जाती है कि वह पाठक के मस्तिष्क में एक दृश्य उत्पन्न करें और उनमें कहीं न कहीं उसे अपना स्वयं का भोगा हुआ अथवा देखा-अहसासा हुआ यथार्थ नजर आए। प्रभावी कहानी की इस विशेषता को कीर्ति जी की ये कहानियां पूरी करती नजर आती है।



समीक्ष्य कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियों में ग्राम्य जीवन की वस्तुपरक घटना संघटनों का, सामाजिक स्थितियों और उनमें हो रहे परिवर्तनों, प्राचीन व आधुनिक संदर्भों का बहुत सुन्दर शब्द-चित्रण किया गया है। साथ ही नारी मन की गहराई तथा कहानी कथानक के साथ घरे से संस्कारों की स्थापना तथा संस्कारविहीनता के खतरों से आगाह करने की बात कीर्ति जी ने बहुत चतुराई से कही है। वाक्यों की बनावट इतनी कसावट व मेहनत लिए हैं कि कहीं-कहीं तो वे अनमोल वचन जैसे लगते हैं।

'दायित्व' कहानी में सेवानिवृत्त पिता की मनःस्थिति को भाँपते हुए बेटा वीजू कैसे सारी स्थिति को सम्भालता है यह तो कहानी पढ़कर ही जाना जा सकता है। सेवानिवृत्त पिता का यह कथन कितना दर्द एवं हकीकत लिए है, वीजू तुम जानते हो कि आदमी जब काम में लगा रहता है तो उसमें आत्मविश्वास बना रहता है। व्यस्तता उसे आत्मबल प्रदान करती है। आराम तो एक प्रकार की सजा है, यातना है, जो जीवन मार्ग को अवरुद्ध कर देती है।

जौहरा आपा एवं साल गिरह कहानियों में बहुत बारीकी के साथ कलात्मकता एवं सौन्दर्य को परोसा गया है। साहित्य की खूबसूरती इन कहानियों में मुँह बोलती नजर आती है। कुछ ऐसा ही टाइल कहानी 'पिघलते लम्हों की ओट से' में पढ़ने को मिलता है। कहानीकार इस उद्देश्य में पूर्ण सफल हैं। इस कहानी में कहानी के संवादों के साथ कविता के रूप में उकेरे जज्बात बहुत अच्छे लगते हैं। दो लाइनें देखिए- 'चिराग-ए-लौ नहीं जो जल कर मिट जाऊँगा/गुजरा वक्त नहीं जो पलटकर नहीं आऊँगा/बंदिशों से परे आकाशित प्रकाश हूँ/हर

पल तुम्हारे आसपास हूँ/धड़कन में छुपा था, छुपा रहूँगा/मैं प्यार का अहसास हूँ जो सदा साथ रहेगा।'

इन कहानियों में गुरु दक्षिणा, विरासत, दायित्व, कचरा बीनने वाली, भंगू, कपड़े और रोशनी पर टिप्पणी करें तो इनमें यहाँ-वहाँ नारी जीवन के संघर्षों तथा जीवन में पग-पग पर फैले अनाचारों का बहुत प्रभावी, मर्म स्पर्शी विवेचन किया गया है। वाक्य और संवाद इतने सरल और असर करने वाले हैं कि उन्हें बार-बार पढ़ने को जी चाहता है।

इसी प्रकार फैसला, भूख, स्वीकार तथा मौन कहानियों में भी सामाजिक विद्रूपताओं, व्यक्ति की मानसिकता एवं परिवेश के द्वन्द्वों की जीवन्त झांकी प्रस्तुत की गई है। गुरु दक्षिणा कहानी का चन्दू बड़ा होकर उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनता है लेकिन अपने प्राइमरी के गुरुजी को याद रखकर जैसे तैसे उसका पता लगाकर उन तक पहुँचता है। बीमार गुरुजी की तीमारदारी ही नहीं बल्कि उनकी पोती के साथ विवाह कर उन्हें अपने साथ ले आना सेवा व संस्कारों की उत्तम मिसाल है। सच कहें तो ऐसी संस्कारयुक्त मूल्यवान कहानियाँ शब्द सृजकों को रचनी चाहिए क्योंकि मूल्यवान शब्द ताकतवर भी होते हैं। उनमें परिवर्तन लाने का मादा होता है। वे सामाजिक बदलाव ला सकते हैं।

बहरहाल समीक्षा की अपनी सीमा होती है। वह एक संकेत करती है कि कोई सृजन कैसा है? इस दृष्टि से संक्षेप में यही कह सकते हैं कि कीर्ति की कृति 'पिघलते लम्हों की ओट से' अपने सृजन उद्देश्य में पूर्णतः सफल है। वह कीर्ति की कीर्ति बढ़ाने वाली है, इसमें कोई संशय नहीं है।

पुस्तक की प्रस्तुति बोधि प्रकाशन की अपनी परम्परा के अनुरूप उत्तम है। गुणवत्तापूर्ण टेक्सट पेपर, मजबूत जिल्द, आकर्षक कवर एवं त्रुटि मुक्त छपाई सब सराहनीय है। मूल्य उचित है। सामाजिक सरोकारों से जुड़ाव रखने वाले व्यक्तियों को इन कहानियों को अवश्य पढ़ना चाहिए और सामाजिक सरोकारों से हम सब वास्ता रखते ही हैं।

—ओमप्रकाश सारस्वत

वरिष्ठ संपादक (शिविर), बीकानेर
मो. 9414060038

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

सिल्क से बनी प्लेट और पेच से जुड़ेगी टूटी हड्डी

आपके शरीर की कोई हड्डी टूटे और उसे ठीक करने के लिए किसी धातु के बदले सिल्क से बनी प्लेट और पेच आपके शरीर में लगाए जाएं... है न अजीब सी बात? सिल्क की प्लेट और पेच को शरीर में लगाई जाने की बात चाहें सुनने में कितनी भी अजीब लगे लेकिन अमेरिका के मेडिकल इंजीनियर्स की एक टीम ने इसे सच साबित कर दिखाया है। अमेरिकी वैज्ञानिकों का मानना है कि शत प्रतिशत प्राकृतिक धागे और सिल्क से बनी प्लेट और पेच के मदद से चोटिल हड्डियों को दुरुस्त कर पाना पूरी तरह से संभव है और यह प्रकृति के काफी अनुकूल भी है। हड्डी के ठीक होने के बाद एक समय सीमा के पश्चात सिल्क से बनी यह प्लेट और पेच धीरे-धीरे शरीर में खुद ही घुल भी जाते हैं।

अमेरिका के मेसाच्यूसेट में टफ्ट्स यूनिवर्सिटी के मेडिकल इंजीनियर्स के एक दल ने हाल ही में सिल्क से विशेष तरह के पेच बनाए। सिल्क को अत्याधुनिक मशीन की मदद से विभिन्न प्रकार के आकार में काट पाना संभव है। -दैनिक नवज्योति 7.3.14 पृ. 7

13 साल के बच्चे ने बनाया रिएक्टर

नाभिकीय रिएक्टर बनाना कोई बच्चों का खेल नहीं है। पर ब्रिटेन के एक स्कूल में पढ़ने वाले 13 साल के जेमी एडवर्ड ने यह कर दिखाया है। जेमी एडवर्ड ने अपने स्कूल के प्रयोगशाला में यह नाभिकीय रिएक्टर तैयार किया है। यह रिएक्टर ऊर्जा के लिए दो तरह के हाइड्रोजन, ड्यूटेरियम और ट्रिटियम को 10 करोड़ डिग्री सेल्सियस पर गर्म करता है। इसके बाद नाभिकीय संलयन के जरिए ऊर्जा उत्पन्न होती है।

जेमी के मुताबिक उन्हें इसकी प्रेरणा टेलर विल्सन नाम के अमेरिकी किशोर से मिली, जिसने वर्ष 2008 में 14 साल की उम्र में यह कर दिखाया था। टेलर विल्सन ने एक छोटा सा संलयन संयंत्र बनाने का कीर्तिमान मनाया था। ऐसा करने वाला वह सबसे कम उम्र का पहला व्यक्ति था। जेमी ने 13 साल में नाभिकीय रिएक्टर बनाकर टेलर विल्सन का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इसे बनाने के लिए जेमी ने सबसे पहले नाभिकीय प्रयोगशाला और यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट की सहायता मांगी। कम उम्र होने के चलते उन्होंने जेमी को गंभीरता से नहीं लिया। बाद में जेमी के स्कूल ने उसकी मदद की।

-हिन्दुस्तान 7.3.2014 पृ. 18

डायबटीज से बचाने वाले जीन की पहचान हुई

वाशिंगटन। दुनियाभर में 30 करोड़ से ज्यादा लोगों को डायबटीज की समस्या है। ब्रॉड इंस्टीट्यूट एण्ड मेसाचुसेट जनरल अस्पताल के शोधकर्ताओं ने एक ऐसी विधि ढूंढने का दावा किया है, जिससे इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने एक खास जीन में होने

वाले परिवर्तन को पहचाना है जो डायबटीज-2 और मोटापा के जोखिम को कम कर सकता है।

-हिन्दुस्तान 5.3.2014 पृ. 22

स्टेम सेल से पूरा चेहरा बनाने की कोशिश

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने स्टेम सेल से पूरा चेहरा बनाने की तैयारी शुरु कर दी है। इसके लिए स्टेम सेल मनुष्य के शरीर की चर्बी से ही ली जाएगी। सबसे पहले कान बनाने का प्रयोग किया जाएगा।

‘जर्नल नैनोमेडिसिन’ में छपी रिपोर्ट के मुताबिक लंदन के ग्रेट आर्मंड स्ट्रीट हॉस्पिटल के चिकित्सकों को हाल ही में लैब में उपास्थि (कार्टिलेज) बनाने में सफलता मिली है। चेहरे, नाक और काम में ज्यादातर उपास्थि ही होती है, इसलिए शोधकर्ताओं को अलग कदम इन अंगों का ही निर्माण होगा। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि अभी काफी शोध करना पड़ेगा, लेकिन यह तरीका कारगर साबित होगा। रिपोर्ट पर गौर करें तो चर्बी से ली गई स्टेम सेल से कान बनाने पर माइक्रोडिआ जैसी बीमारी का इलाज आसान हो जाएगा। इस बीमारी में बचपन से ही बच्चों का कान अविकसित रह जाता है। यह देखने में अच्छा नहीं लगता है। अभी इसके इलाज के लिए जो सर्जरी की जाती है, उसमें मनुष्य के सीने से पसलियां ली जाती हैं। इसके लिए कई ऑपरेशन होते हैं।

मधुमेह के मरीजों को अंधा होने से बचाएगा लेजर

दुनिया में मधुमेह से पीड़ित लोगों की संख्या दिनां दिन बढ़ रही है और इसके साथ ही बढ़ रहा है उनमें अंधापन। लेकिन अब मधुमेह की वजह से आंखों की रोशनी खोने वाले मरीजों के लिए ‘ठंडा’ लेजर एक उम्मीद की किरण लेकर आया है।

अभी तक सिर्फ बहुत जरूरी होने पर ही लेजर के जरिये इलाज किया जाता था, क्योंकि इससे आंखों के स्वस्थ हिस्सों के खराब होने का खतरा रहता था। मगर अब नई प्रक्रिया में कम तापमान वाले लेजर का इस्तेमाल किया जाएगा, ताकि इससे आंख के बीमार हिस्से के आसपास के स्वस्थ ऊतकों को नुकसान न पहुंचे।

मधुमेह की स्थिति में शरीर मधु (सुगर) को सुरक्षित तरीके से विघटित नहीं कर पाता है। इस स्थिति में शरीर में सुगर की मात्रा खतरनाक हद तक बढ़ जाती है। यदि समय रहते मधुमेह का इलाज न किया जाए तो उससे शरीर के कई अंग काम करना बंद कर सकते हैं। मधुमेह के मरीजों में अंधापन होना बहुत आम है। सुगर अधिक होने की वजह से वह नसों में जम जाता है और आंखों की रोशनी कम कर देता है। लेजर के जरिये इस समस्या को दूर किया जाता है।

लंदन हॉस्पिटल में आंखों के डॉक्टर बॉबी कुरैशी कहते हैं कि इससे पहले जब हम ऑपरेशन करते थे तो उसमें आंख के स्वस्थ हिस्सों को नुकसान होने का डर रहता था, लेकिन अब हम कम तापमान वाली लेजर किरणों का इस्तेमाल करते हैं।

इसकी सबसे अच्छी बात यही है कि इनके जरिये आंख के सिर्फ प्रभावित हिस्से पर ही काम किया जा सकता है।

-हिन्दुस्तान 2.9.2013 पृ.सं. 18

चतुर्दिक समाचार

भरतपुर

रा.मा.वि., गहनकर को सर्व श्री यादराम गुर्जर, रामकिशन गुर्जर, बालीराम गुर्जर, नत्थी सिंह गुर्जर, भागमल गुर्जर से प्रत्येक से एक-एक सिलिंग फैन, श्री जगदीश मीना (सरपंच) से पाँच सिलिंग फैन, श्री रूप सिंह गुर्जर से दो सिलिंग फैन प्राप्त हुआ। रा.उ.मा.वि., जधीना के एस.बी.बी.जे. बैंक प्रबंधक द्वारा विद्यालय को दो वाटर फ्यूरीफयर प्राप्त हुए। इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से लागत 5.50 लाख रुपये की लागत से शौचालय का निर्माण करवाया गया। रा.उ.प्रा.वि., सिकन्दरा (बयाना) को श्री धनीराम गुर्जर से 18 जर्सी, श्री विनोद गोयल (प्र.अ.) रा.मा.वि. सिकन्दरा से 17 जर्सी, श्री पंकज उपाध्याय (अ.) से 11 जर्सी, श्री सूबेदार विजय सिंह गुर्जर (वेरियापुरा वाले) से 10 जर्सी, श्री केदार सिंह (अ. बागैरन) से 07 जर्सी, सर्व श्री बट्टी प्रसाद गुप्ता (गायत्री परिवार), गंगा सहाय शर्मा (अ.) नावली, शुक्ल सिंह (पूर्व प्राचार्य), जय प्रकाश एडवोकेट (पूर्व सरपंच) वीर सिंह गुर्जर (सचिव नगला चौधरिया) राम खिलाडी गुर्जर (अ.), नगलाछीपी श्री चन्द्र शर्मा (अ.) रा.उ.प्रा.वि., सिकन्दरा, बहादुरसिंह गुर्जर (प्र.अ.), रमेश चन्द गुर्जर, बल्लराम (अ.), राजेन्द्र प्रसाद (अ.), होरी लाल (स.क.), सोनी जाटव (ठेकेदार), श्रीमती वंदना शर्मा (अ.), श्रीमती नीतू धाकड़ (अ.), श्रीमती शशि अग्रवाल (अ.), श्रीमती सपना राजौरिया (अ.), श्रीमती गायत्री गुर्जर से प्रत्येक से 5-5 जर्सी प्राप्त हुई।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि., भादु (पं.स. माण्डल) को श्री गोपाल लाल मून्दडा से एक वाटर कूलर लागत 47,000 रुपये, श्री अजीत सिंह चुण्डावत द्वारा एक ट्यूब वेल का निर्माण लागत 25,000 रुपये, श्री बलवीर सिंह चुण्डावत द्वारा बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को सिल्वर मेडल लागत 1100 रुपये, श्री सम्पत लाल सुथार से 5 टेबल व स्टूल लागत 5000 रुपये, मेघवंशी नवयुवक मण्डल से एक छत पंखा लागत 1200 रुपये। रा.मा.वि., कूँचलवाड़ा कलाँ को श्री रायसिंह शम्तावर से स्काउटरों के

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रुपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वर्षिष्ठ संपादक

15 ड्रेस, श्री दुर्गालाल जांगीड़ से छात्रों को 10 ड्रेस, श्री अरविन्द उपाध्याय से छात्रों को 7 ड्रेस, श्री रामपाल उपाध्याय से 5 ड्रेस, श्री लेखराज गुर्जर से 5 ड्रेस, श्री जयनारायण सेन से 6100 रुपये नकद, सर्व श्री प्रकाश मीणा, भरत सिंह शक्तावत, भैरवलाल पुरोहित, लाईलाल रेगर, नाथूलाल गुर्जर, अरविन्द उपाध्याय से प्रत्येक से 500-500 रुपये नकद प्राप्त हुए। रा.मा.वि.,

हमारे भामाशाह

संतोकपूरा मंडल को श्रीमान रत्नेश ईनाणी (सुजुकी प्रोसेस मंडल चौराया) द्वारा पूरे विद्यालय में लाइट फिटिंग का कार्य कराया जिसकी लागत 50,000 रुपये तथा 50 स्टूले निःशुल्क विद्यालय को दान के रूप में भेंट, श्रीमान लादूलाल सुथार द्वारा एक 80 लीटर वाटर कूलर जिसकी लागत 27190 रुपये। सर्व श्री भीमराम जाट (विद्यालय विकास समिति सदस्य) परमेश्वर लुहार (पूर्व सरपंच), मूकेश बिडला, गोपाल जाट से प्रत्येक से पाँच-पाँच टेबल-स्टूल सेट प्राप्त हुआ। रा.मा.वि., गुढ़ा (सहाड़ा) को भेरूपुरी गोस्वामी द्वारा विद्यालय को एक कम्प्यूटर मय टेबल तथा कक्षा 1 से 9 तक जरूरत मंद छात्र-छात्राओं को बूट मौजे (125 जोड़ी) सप्रेम भेंट लागत (20,000 + 15,000) अर्थात 35,000 रुपये।

राजसमन्द

रा.उ.मा.वि., शिशोदा में श्रीमती चतरा देवी, श्री चन्द प्रकाश धाकड़, उत्तम कुमार

धाकड़, हरी लाल धाकड़ द्वारा 1.50 लाख (एक लाख पचाह हजार रुपये) की लागत से जल गृह का निर्माण करवाया गया। श्री रूप सिंह चदाणा, श्री अम्बा लाल धाकड़, श्री खुमाण सिंह राजपुत द्वारा 1.25 लाख रुपये की लागत से रंगमंच का निर्माण करवाया गया। श्री अमर सिंह द्वारा कुश्ती की मैटिंग (गद्दा) लागत 32,000 रुपये, श्री तोलाराम पुरोहित, श्री प्रमोद कुमार पुरोहित से एक समर्शिवल वाटर पम्प लागत 50000 रुपये, श्री राजेश कुमार धाकड़, श्री रूप लाल धाकड़ से फर्नीचर लागत 20000 रुपये। रा.मा.वि., देवरिया (माद) में सुमित्रा देवी मीणा ने कनक मिनरल्स देवरिया की तरफ से 61000 रुपये की सामग्री नलकूप को मूर्त रूप प्रदान कर जल व्यवस्था को सरल व सुलभ बनाने के लिए प्रदान की। प्रभुसिंह द्वारा माताजी का गांव को 162 फीट गहरा व 6 इंच चौड़ा नलकूप खुदवाकर छात्र-छात्राओं के लिए सूचारू पेयजल की व्यवस्था की।

सवाई माधोपुर

रा.बा.मा.वि., गंगापुर सिटी में शहर के भामाशाहों द्वारा 18,000 रुपये की लागत से विद्यालय भवन की सफाई, पुताई एवं लघु मरम्मत का कार्य करवाया गया। इसके अतिरिक्त विद्यालय की समस्त छात्राओं को कॉपी, पेन, निर्धन छात्राओं को जर्सी, स्कूल ड्रेस आदि वितरित की।

सिरोही

रा.उ.मा.वि., मोहब्बत नगर को श्री छगनलाल माली से एक इनवर्टर सैट लागत 18,000 रुपये, श्री चिमन लाल प्रजापत से एक कम्प्यूटर सैट लागत 26,000 रुपये, एस.बी.बी.जे. बैंक कालन्दी से 8 पंखे लागत 12,500 रुपये तथा एक्वागार्ड प्यूरीफाई लागत 12000 रुपये, श्री लक्ष्मण लोहर, श्री मुपाराम, श्री गोपाराम व.अ., श्री अमर सिंह तंवर, श्री रूपा राम द्वारा 55 कुर्सियां लागत 28,000 रुपये।

कोई भी व्यक्ति अतीत में जाकर नई शुरूआत नहीं कर सकता है, लेकिन अपने आज में नई शुरूआत करके नया व सुखद अंत प्राप्त कर सकता है।

—काल बाई

शिविरा मई-जून 2014 का यह अंक प्रकाशन के 54 वें वर्ष का अन्तिम अंक है। दृश्य रूप में वर्ष भर की योजना का एक खाका लेकर नए प्रकाशन वर्ष में हम प्रविष्ट होते हैं और अदृश्य रूप में रहता है एक संकल्प। संकल्प हर अंक को सामग्री, संयोजन एवं प्रस्तुति के पक्षों पर इतना बेहतर बनाने का कि वह अपने आप में न केवल पठनीय ही बनें बल्कि संग्रहणीय भी बन जाए। चौवनवें वर्ष में हम अपनी दृश्य योजना एवं अदृश्य संकल्प में कितने सफल रहे, इसका निर्णय तो पाठक महानुभाव ही कर सकते हैं।

शिक्षक को ज्ञान की गहराई को बढ़ाने तथा उसे शिक्षा व शिक्षण के नए-नए सरोकारों से वाकिफ रखने के लिए शिविरा कृत संकल्पित है। इतना ही नहीं शिक्षण व्यवसाय एवं शिक्षक की गरिमा को उच्च से उच्चतर बनाने की दिशा में शिविरा सदैव चिन्तनशील रही है। शिक्षण की चुनौतियों एवं शिक्षक के अन्तर्द्वन्द्व को समझकर तदुसार सामग्री पत्रिका में दी जाती रही है। शिक्षण कार्य अन्य किसी भी कार्य से बेहतर तो है ही, साथ ही अन्य कार्यों के सम्पादन में होने वाली क्रिया-प्रतिक्रियाओं से हटकर है यह व्यवसाय। शिक्षक निसंदेह महान होता है। जो शिक्षक बन गया, समझो उसने महानता के पथ पर चलने का संकल्प ले लिया। यह संकल्प दृढ़ से दृढ़तर होता लोह संकल्प बन जाए, तब उसे सुख-दुख, लाभ-हानि किसी की परवाह नहीं रहती। वह निर्विकार रूप से बालक के प्रति समर्पित हो जाता है। बालक उसका भगवान बन जाता है। वह विद्यालयरूपी मन्दिर का पुजारी बन जाता है जिसका इष्ट और आराध्य दोनों बालक होता है। ऐसे अद्भुत शिक्षकों की शानदार परम्परा इस देश में रही है। उस यशस्वी परम्परा के उत्तराधिकारी होने का गौरव हम आज के शिक्षकों के नाम है। हमें इस महत्व को समझना चाहिए।

एक बात शिक्षकों के ओहदे को लेकर है। विभिन्न ग्रेड के अध्यापक व अधिकारी महज व्यवस्था की औपचारिकता समझे जाने चाहिए। मूल बात तो शिक्षक होने की है फिर ग्रेड भले ही कोई सा ही क्यों न हो। शिक्षकों में शिक्षकरत्न अथवा शिक्षक सम्राट तो वह है जो कहीं दूर गांव-ढाणी में साधनों के अभाव के बावजूद छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं को अंक-

आखर सिखा रहा है। मैले-कुचेले परिधान में, अनहाए, उलझे बालों, आँखों में गीड़ व बहते नाक वाले बालकों के सिर पर अपना हाथ रखता है। ऐसे बालक में उसे साक्षात् ईश्वर नजर आता है। बात विश्वास एवं भावना की है। भक्त नामदेव को विश्वास एवं पवित्र भाव के कारण कुत्ते में भगवान दिखायी दिए थे। इस दृष्टान्त से हम सब परिचित हैं। एक भावपूर्ण भजन के एक अन्तरे में इस दृष्टान्त को यों प्रस्तुत किया है-

नामदेव ने बनाई/रोटी कुत्ते ने उठाई/पीछे घी का कटोरा लिए आ रहे/स्वामी थोड़ा सा रुक जाओ/अजी लुखी तो ना खाओ/रूप अपना क्यों मुझसे छिपा रहे/तेरा-मेरा एक नूर/फिर काहे को हजूर/तूने शक्ल बनाई है श्वान की/मुझे ओढ़णी ओढ़ादी भगवान की/कण-कण में हैं झांकी भगवान की/किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की।

गहरे विश्वास और सच्चे भाव से जब कुत्ते में भगवान प्रकट हो सकते हैं तो बालक में क्यों नहीं। बालक तो स्वयं भगवान है। शिविरा

प्रतिध्वनि शिक्षा, शिक्षण एवं शिक्षक

के मार्च 2014 अंक में प्रकाशित ईश्वर का पत्र बंदे के नाम एक बार पुनः देखिए। बालक को प्रेम का दर्पण बताते हुए गिजू भाई ने कहा है, 'इस जीवन का केन्द्र बालक है, इस जीवन का काव्य बालक है, इस जीवन की सुगंध और सौन्दर्य बालक है तथा इस जीवन का सुख भी बालक है।'

प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा पर पुनः बात करते हैं। उस काल में गुरु के प्रति इतनी आस्था थी कि माता-पिता अपने पुत्रों को वर्षों तक गुरु को सौंपे रखते थे। गुरु का आश्रम ही उनका घर तथा गुरुदम्पति उनके माता-पिता होते थे। आश्रम की साफ-सफाई से लेकर वन से फल-सब्जी और ईंधन बटोर कर लाने का कार्य बालक खुशी-खुशी करते थे। वे आश्रम आजकल के छात्रावासों की तरह नहीं होते थे जहाँ पंखा, कूलर व ए.सी. के हिसाब से श्रेणियां बनी होती हैं। वहाँ कोई श्रेणी नहीं होती थी। सब समान होते थे। संदीपनी के आश्रम में राजकुमार

कृष्ण एवं निर्धन सुदामा के बीच कोई भेद नहीं था। दोनों ईंधन के लिए लकड़ियों का भारा सिर पर ऊँच कर गुरुजी की सेवा में उपस्थित होते थे। तब परस्पर स्नेह की सरिता बहती थी।

अर्थ प्रधान एवं परस्पर गलाकाट प्रतियोगिता के इस दौर में सम्बन्धों की वैसी सहजता होनी तो लगता है कि सम्भव ही नहीं है, मगर शिक्षा व शिक्षक को इसका अपवाद बनना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि वैसे सम्बन्ध पुनः जीवित हो तो हमें प्रेम को केन्द्र में रखना पड़ेगा। **शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी वाणी एवं व्यवहार से सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का दिल जीत ले। भले ही वह व्यक्ति बालक हो अथवा उसके अभिभावक अथवा अन्य कोई।**

अंक अक्षर का ज्ञान दृश्य शिक्षा है। वास्तविक शिक्षा तो वह है जो अदृश्य रूप में हमारे दिलों में स्नेह, सहयोग, सहकार, समन्वय एवं समभाव की सरिता प्रवाहित करे। अंक अक्षर की दृश्य शिक्षा से हमें प्रमाण-पत्र/उपाधि मिलती है जबकि उत्तम मानवीय गुणों की अदृश्य शिक्षा हमारे हृदय का परिष्कार कर उसे निर्मल बना देती है जिसके लिए कोई प्रमाण-पत्र अथवा उपाधि नहीं दी जा सकती। बस हमारी वाणी एवं व्यवहार ही उसकी प्रयोगशाला होते हैं। अंक-अक्षर की शिक्षा हमें पढ़ने, विश्लेषण करने, समझने निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करती है। इस प्रकार यह दृश्य शिक्षा वास्तविक शिक्षा जो अदृश्य है को फलवती बनाने में हमारी सहायता करती है। इसलिए दोनों का अपनी अपनी जगह पर बराबर का महत्व है। विद्या ददाति विनयम् में विद्या यदि दृश्य है तो विनय अदृश्य है जो शिक्षा प्राप्ति का अन्ततः उद्देश्य है।

शिविरा के प्रकाशन के 54वें वर्ष का यह अन्तिम पड़ाव है। अब तो हम नए, 55वें वर्ष में मिलेंगे। इस वर्ष में हम जो कुछ अच्छा कर सके, वह मानजोग पाठकों एवं लेखक-शुभचिन्तकों की कृपा का सुफल है तथा यदि कहीं कोई कमी रही है तो वह हमारी। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि प्रेम व सहयोग की धारा निरत प्रवाहित रहेगी।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा, मई-जून, 2014 चित्र समाचार

जयपुर



सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान में आयोजित समारोह में शाला की अध्यापिका प्रीति जैन भाषण को साइन लैंग्वेज में रूपान्तरित करते हुए।

पाली



रा.मा.वि., खाण्डी पं.स. रोहट में छात्र-छात्राओं के साथ संवाद कार्यक्रम का एक दृश्य।

झालावाड़



राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड के तत्वावधान में मतदाता जागरुकता रैली निकाल कर मतदान का संदेश दिया गया।

श्रीगंगानगर



रा.उ.मा.वि., 40 जी.बी. में आयोजित समापन समारोह कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती बालिकाएं।

पिण्डवाड़ा



राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, परलाई (पिण्डवाड़ा) के छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण चेतना का संदेश रैली निकाल कर दिया।

वाड़गेर



एमबीसी राजकीय उ.मा. विद्यालय, गाँधी चौक के बालक-बालिकाएँ विद्यालय में आयोजित प्रदर्शनी के अवसर पर अनुशासन में बैठे हैं।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर



रानी सती मंदिर, झुंझुनूं

झुंझुनूं जिला मुख्यालय पर स्थित रानी सती मंदिर एक ऐतिहासिक मंदिर है जिसके प्रति अपार श्रद्धा एवं विश्वास जनमानस में व्याप्त है। माँ के इस भव्य मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में करवाया गया था जो वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है। रानी सती माता का यह मंदिर आकर्षक टाइल्स एवं शीशे से बना हुआ है। मंदिर में रानी सती, दुर्गा माता और प्रथम पूज्य देव श्री गणेश की मुँह बोलती प्रतिमाएं हैं। मंदिर परिसर में दीवारों पर की गई सुंदर चित्रकारी रानी सती के जीवन की विभिन्न घटनाओं का ज्ञान कराती हैं। प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्त, देशी-विदेशी पर्यटक माँ के दर्शन करने मंदिर में आते रहते हैं। मेलों के अवसर पर मंदिर की छटा देखने वाली होती है।

सौजन्य : मनजीत सिंह तंवर, झुंझुनूं-333030 मो. 9829525658